

भारतीय नारियल पत्रिका

गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन
के लिए पोलीबैग नर्सरी

कल्पवृक्ष नारियल और अंतरफसल के रूप में मिलेट-
सीमांत किसानों के लिए वरदान

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXXIV, संख्या : 4
जनवरी - मार्च 2024
कोची- 11

परामर्श मंडल

मुख्य कार्यपालक अधिकारी
डा. प्रभात कुमार

सदस्य

डा. प्रभात कुमार

निदेशक

काजू और कोको विकास निदेशालय

संपादक मंडल

सदस्य

आर. मधु

डा. अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

डा. वी. हनुमंते गोडा

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु विजोय प्रभाकरन

डा. सूर्या प्रत्युष

प्रकाशक:

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग,
भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266,
2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902

ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।



नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के छह राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओडिशा के भुवनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकाता, आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, गुजरात के जूनागढ़, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नैर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आंध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पितापल्ली (ओडिशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र), धली (तमिलनाडु), साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया (पश्चिम बंगाल) में हैं। इसके अलावा बोर्ड का बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है। केरल के आलुवा के पास वाप्रक्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

- नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना।
- नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना।
- नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना।
- नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना।
- केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से प्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री केवीपीएस, काक्कनाट में मुद्रित

इस अंक में

- 4** संदेश
- 5** गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन के लिए पोलीबैग नर्सरी
एम.षरीफा, मायालक्ष्मी, एस.इंदुजा और रेजि जे.थोमस
- 9** गली फसल प्रणाली
नारियल बागों को टिकाऊ बनाने हेतु एक व्यवहार्य उपाय
गायत्री पी. और निम्मी जोस
- 14** कल्पवृक्ष नारियल और अंतरफसल के रूप में मिलेट-
सीमांत किसानों के लिए वरदान
अनिताकुमारी और पूनम खत्री
- 17** नारियल बागों में लाल ताड़ घुन का एकीकृत प्रबंधन-
कासरगोड़ के बाजार से एक विजय गाथा
प्रतिभा पी.एस., तंपान सी. और जिलु वी.साजन
- 22** नारियल से सुस्थिर उत्पादन और उच्च आय के लिए
कृषि प्रणाली पद्धति पर ध्यान देने की आवश्यकता है:
'केराकेसरी' डोमिनिक
सी. तंपान, पी.सुब्रमणियन और जयशेखर एस.
- 27** नारियल बागों में मासिक कार्य
- 39** समाचार
- 54** बाज़ार समीक्षा
- 57** बाज़ार रिपोर्ट



संदेश

प्रिय मित्रों,

डाब पानी सदैव कुदरत का स्पोर्ट्स पेय कहा जाता है और जलयोजन के प्राकृतिक स्रोत के रूप में इसका उपयोग किया जाता है और यह गर्मी के महीनों में पसीने से नष्ट होने वाले इलेक्ट्रोलाइटों की पुनः पूर्ति करता है। शर्कराओं और योगजों से भरे कृत्रिम रूप से स्वादिष्ट बनाए गए पेयों से इतर, डाब पानी में कैलोरी संघटक कम होता है जो इसे सेहत पर समझौता किए बगैर ही शरीर को जलयोजित रखने का उपयुक्त विकल्प बना देता है।

अब हम अत्यंत झुलसाती गर्मी को झेल रहे हैं और इसलिए प्यास बुझाने में सक्षम प्राकृतिक सुधा के रूप में डाब पानी उभरता आ रहा है जो सेहत के लिए हितकर कई लाभ भी प्रदान करता है। चिलचिलाती गर्मी में, यह ताज़गी भरा पेय जलीयन पेय के रूप में अव्वल स्थान पर है और खुशहाल जीवन के लिए ढेर सारी खूबियाँ प्रदान कर रहा है।

इसकी जलीयन विशेषताओं से परे, डाब पानी स्वास्थ्य के लिए हितकर अनिवार्य पौष्टिकतत्वों का खज़ाना है। पोटेशियम, मैगनीशियम और कैल्शियम जैसे इलेक्ट्रोलाइटों से भरपूर डाब पानी द्रव संतुलन (फ्लूइड बैलेंस) बनाए रखता है, निर्जलीकरण और ऐंठन को रोकता है, जो प्रखर गर्मी में अक्सर होता रहता है। इसके अलावा, इसमें उच्च मात्रा में विटामिन, खासतौर पर विटामिन सी और बी-कॉम्प्लेक्स निहित होने के कारण यह मौसमी बीमारियों से बचाकर प्रतिरोधी तंत्र को सशक्त बनाता है।

हाल ही के सालों में, नारियल स्वास्थ्य और कल्याण के क्षेत्र में सूपरस्टार के रूप में उभर रहा है, जिसका उपयोग स्वास्थ्य पहलुओं से लेकर स्वादिष्ट व्यंजनों और त्वचा संरक्षण में किया जाता है। न्यूट्रास्यूटिकल, कोस्मैस्यूटिकल और फार्मास्यूटिकल क्षेत्रों में हाल में चलाए गए कई अनुसंधान निष्कर्ष इस उष्णकटिबंधीय फल के अद्वितीय स्वास्थ्य लाभों को सही अर्थों में रेखांकित करते हैं।

हाल के अध्ययनों ने नारियल उत्पादों के न्यूट्रास्यूटिकल लाभों पर प्रकाश डाला है। मध्यम श्रृंखला ट्राइग्लिसराइडों (एमसीटी) से समृद्ध होने के कारण नारियल वज़न प्रबंधन, बेहतर हृदय स्वास्थ्य और वर्धित संज्ञानात्मक प्रकार्यों में उपयोगी पाया गया है। यही नहीं, निष्कर्षों से अलज़ाइमर रोग और मिरगी जैसी परिस्थितियों के प्रबंधन में नारियल की क्षमता भी स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है जो भविष्य की चिकित्सीय हस्तक्षेपों में आशाजनक मार्ग सुझाता है।

नारियल से संजात संघटकों में त्वचा और केश के लिए हितकर बेमिसाल गुण निहित होने के कारण कोस्मैस्यूटिकलों में भी इसकी अहमियत बढ़ रही है। त्वचा को नमी प्रदान करने की विशेषता से लेकर प्रतिऑक्सीकारक समृद्ध सूत्रीकरण तक, नारियल आधारित त्वचा संरक्षण उत्पाद त्वचा संबंधी विविध प्रकार की समस्याओं के समाधान हेतु प्राकृतिक उपाय है। इसके अलावा, अनुसंधानों से यह भी सूचित हुआ है कि इस में घाव भरने और यूवी विकिरण से सुरक्षित रखने की क्षमता निहित है जो त्वचा संरक्षण में इसकी बहुमुखी भूमिका रेखांकित करती है।

न्यूट्रास्यूटिकल और कोस्मैस्यूटिकल अनुप्रयोगों से परे, नारियल उत्पादों ने फार्मास्यूटिकल अनुसंधानकर्ताओं के हितों को भी आकर्षित किया है। नारियल में निहित यौगिक सूक्ष्मजीवरोधी, वायरसरोधी और सूजन रोधी विशेषताएं दर्शाते हैं, जो संक्रामक रोगों और सूजन संबंधी परिस्थितियों से निपटने की इसकी क्षमता प्रकट करते हैं। इसके अलावा, औषधी विकास तंत्र के रूप में नारियल संजातों की खोज करते हुए चलाए जा रहे अध्ययन फार्मास्यूटिकल सूत्रीकरणों की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने की उम्मीद बनाए रखती हैं।

हम ऐसे युग में जीते हैं जहाँ सर्वांगीण स्वास्थ्य और खुशहाली दिन ब दिन ज़ोर पकड़ रहा है, नारियल और इसके उत्पादों के महत्व को अत्युक्ति नहीं कही जा सकती है। हमारे शरीर को अंदर से पोषण देने से लेकर हमारा बाहरी रूप निखारने तक नारियल अनगिनत स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है जिसके पीछे गहन अनुसंधान चल रहा है।

आइए, हमारी ऊर्जा स्तर को बढ़ाने, जीवन को समृद्ध बनाने और आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिकाधिक स्वास्थ्यकर, सुस्थिर भविष्य सँवारने के लिए हम एकसाथ नारियल की क्षमता का फायदा उठा लें।

अध्यक्ष

संपादक मंडल

गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन के लिए पोलीबैग नर्सरी

एम.षरीफा, मायालक्ष्मी, एस.इंदुजा और रेजि जे.थोमस

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम



किसी भी फसल के उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री एक प्रमुख संघटक है। चार से छह वर्षों की स्थिर लंबी किशोर अवधि और 60 वर्ष से अधिक आर्थिक जीवन काल के कारण नारियल में इसकी अधिक प्रासंगिकता है। पौधों की ओज और वयस्क ताड़ की विशेषताओं जैसे जल्दी फूलना, उच्च फल उपज और खोपरा उत्पादन से आपसी संबंध है। गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन के लिए वैज्ञानिक नर्सरी प्रबंधन पद्धतियाँ आवश्यक हैं। परंपरागत रूप से नारियल पौधों को बाग में रोपण करने के पहले नर्सरी में उगाया जाता है क्योंकि बीज क्यारी की सही देखभाल और अनुरक्षण से शीघ्र अंकुरित होनेवाले ओजस्वी पौधों के चयन में आसानी होती है। नारियल के पौधे उत्पादन के लिए सबसे आम तरीका है नारियल को नर्सरी क्यारियों में बोया जाना और उन्हें कम से कम एक वर्ष के लिए वहीं उगने दिया जाय जब तक कि वे मुख्य खेत में प्रतिरोपण के लिए तैयार न हो जाएं।

अंकुरित बीजफलों को उपयुक्त पोटींग मिश्रण से भरे पोलीबैगों में रोपने से ओजस्वी और गुणवत्तापूर्ण पौधे तैयार की जा सकती है। पोलीबैग में नारियल पौधे उगाने की शुरुआत 1969 में पश्चिम अफ्रिका की आइवरी कोस्ट में की गई थी। यद्यपि पोलीबैग नर्सरी अन्य प्रमुख नारियल उत्पादक देशों में लोकप्रिय हैं, लेकिन भारत में इसे व्यापक रूप से नहीं अपनाया गया है। पोलीबैग पौधों का उपयोग आवश्यक होता जा रहा है, विशेषकर जहां निश्चित अवधि में नारियल पौधों के रोपण के लिए भूमि उपयुक्त नहीं है। केरल में विकासात्मक एजेंसियों द्वारा नारियल पौधों का वितरण अधिकतर जून-जुलाई के दौरान होता है और उस अवधि के दौरान कुट्टनाट जैसे निचले इलाके जल जमाव के कारण नारियल पौधे लगाने के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं। ऐसी परिस्थितियों में, किसान पोलीबैग नारियल पौधे खरीद सकते हैं और जब भी ज़मीन रोपण के लिए तैयार होता है तब रोपण किया जा सकता है।

पोलीबैग नर्सरी के फायदे

● ओजस्वी पौधों के उत्पादन को सक्षम बनाता है

पारंपरिक क्षेत्रीय नर्सरी की तुलना में पोलीबैग नर्सरी को बेहतर माना जाता है क्योंकि प्रत्येक पौध की गहन देखभाल और अनुरक्षण के परिणामस्वरूप ओजस्वी पौध बढ़ जाती है जिसकी बेहतर जड़ प्रणाली होती है जिसके कारण वे जल्दी फूलने लगते हैं।

● पौधों का आसान रखरखाव

बाग में जो नर्सरी लगाती है उसकी तुलना में, पोलीबैग नर्सरी में सिंचाई, निराई-गुड़ाई एवं अवांछित पौधों को काटकर हटाने का काम आसान होता है।

● प्रतिरोपण आघात को कम करता है

जड़ प्रणाली बरकरार रहती है और प्रतिरोपण के समय क्षतिग्रस्त नहीं होती है, इसलिए प्रतिरोपण के आघात से बच सकता है। ये पौधे बाग में लगाने पर तेज़ी से बढ़ेंगे। ऐसे पौधों का उपयोग बाग में समान संख्या और आयु समूह प्राप्त करने के लिए अंतर जगह भरने के लिए किया जा सकता है।

● प्रतिरोपण किसी भी समय किया जा सकता है

अप्रत्याशित जलवायु परिस्थितियों के कारण यह सबसे महत्वपूर्ण फायदों में से एक है। पोलीबैग यदि आवश्यक हो तो नर्सरी अवधि को तब तक बढ़ाए जाने की सुविधा देती है जब तक कि वातावरण मुख्य क्षेत्र में रोपण के लिए अनुकूल न हो जाए।

तथापि इस तकनीक की कुछ कमियाँ हैं जैसे परिवहन की उच्च लागत और बैग भरने के लिए अतिरिक्त श्रम तथा पोलीबैग व मिश्रण आदि सामग्रियों के लिए अतिरिक्त व्यय।

पोलीबैग नर्सरी उगाने की तकनीक

स्थान का चयन

नर्सरी को वर्ष भर सिंचाई की सुविधा के लिए भरोसेमंद जल स्रोत के पास लगाना चाहिए। स्थान पर परिवहन की सुविधा होनी चाहिए, अन्यथा नर्सरी में बीज लाने और पौधे बाहर भेजने के मामले में काफी कठिनाई का अनुभव होगा। भूमि की निराई-गुड़ाई करने के बाद उसे समतल कर देना चाहिए। एक हेक्टर के नर्सरी क्षेत्र में 60 से.मी. X 60 से.मी. की दूरी पर लगभग 25000 पौधों का रोपण किया जा सकता है।

क्यारियों में बीजों की बुआई

आमतौर पर बीजफलों को सीधे पोलीबैगों में नहीं बोया जाता है। पोलीबैग पौधे तैयार करने के लिए शुरुआत में बीजों को कम दूरी पर बोया जाता है और क्यारियों में अंकुरित होने दिया जाता है। किस्म के आधार पर बीजफल बोलने के लगभग एक से तीन महीने बाद अंकुरित होने लगते हैं। पारंपरिक नर्सरी में बीजफलों को क्यारियों में पंक्तियों के बीच 30 से.मी. और पंक्तियों में 25-30 से.मी. की दूरी पर बोया जाता है और लगभग 12 महीनों तक वहीं रखा जाता है। पोलीबैग पौधे उगाने के लिए बीजफलों को 5 से.मी. की दूरी पर लंबवत् बोया जाता है और जब कॉपल 8-10 से.मी. लंबे हो जाते हैं तो उन्हें पोलीबैग में प्रतिरोपित किया जाता है। अनुकूलतम प्रबंधन के तहत 20 सप्ताह में 80 प्रतिशत से अधिक अंकुरण होना चाहिए और जो बीज तब तक अंकुरित नहीं होते हैं उन्हें हटा दिया जाता है।

पोटिंग मिश्रण की तैयारी और पोलीबैग भराई

बड़े फलों के लिए 60 से.मी. X 45 से.मी. और छोटे फलों के लिए 45 से.मी. X 45 से.मी. आकार के काले पोलीथीन बैग (500-गेज मोटाई) में पौधे उगाए जा सकते हैं। अतिरिक्त पानी निकालने के लिए बैगों के निचले भाग में 8-10 छेद होने चाहिए। 100 बैग भरने के लिए लगभग 2.0-2.5 घन मीटर पोटिंग मिश्रण की आवश्यकता होगी। आमतौर पर अनुशंसित पोटिंग माध्यम में 3:1 अनुपात में रेत के साथ मिश्रित ऊपरी मिट्टी या उपजाऊ ऊपरी मिट्टी, रेत और अच्छी तरह से सड़ी हुई एवं चूर्णित मवेशी खाद/वर्मी कम्पोस्ट 3:1:1 अनुपात में मिलाया जाता है। लाल मिट्टी, अच्छी तरह से सड़ी हुई एवं चूर्णित मवेशी खाद/वर्मी कम्पोस्ट और रेत का भी 3:1:1 अनुपात में उपयोग किया जा सकता है।

मिट्टी रहित माध्यम जिसमें वर्मीकम्पोस्ट और कयर गूदा कम्पोस्ट शामिल है, का भी प्रयोग पोटिंग मिश्रण के रूप में किया जा सकता है। फायदा यह है कि कीटों, सूत्रकृमियों और कवक के बीजाणुओं तथा अन्य दूषित पदार्थों से मुक्त होने के अलावा इसे पसंदीदा जलनिकासी, जल प्रतिधारण, पोषण और वायुसंचार के लिए अतिरिक्त सामग्रियों के साथ मिश्रित किया जा सकता है। मिट्टी रहित मिश्रण मिट्टी युक्त पोटिंग मिश्रण की तुलना में वजन में भी हल्का होता है। पर्यावरण के अनुकूल



चावक्काट नारंगी बौनी किस्म के पोलीबैग पौधे

विकल्प के रूप में पोर्टिंग मिश्रण भरने के लिए पटसन के बैगों/बोरियों का उपयोग किया जा सकता है क्योंकि इसमें जैवनिम्नीकरण गुण है।

पोलीबैगों में प्रतिरोपण

जब तक 80 प्रतिशत फल अंकुरित हो जाएं या बुआई के 5 महीने तक, जो भी पहले हो, अंकुरित फलों को सप्ताह में एक बार नर्सरी से निकाला जाता है। अंकुरित फल को आधे भरे बैगों में रखा जाता है और अंकुर को बैग के मध्य भाग में सीधे ऊपर की ओर रखा जाता है। पर्याप्त पोर्टिंग मिश्रण मिलाकर बैगों के दो-तिहाई भाग तक भर दिया जाता है और फल को मज़बूत रखने के लिए किनारों को थोड़ा दबाया जाता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सिंचाई के दौरान पोर्टिंग मिश्रण बह न जाए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कीट या रोग ग्रस्त अंकुरित फल का रोपण न करें और बैग भरते समय छोटे पौध के गर्दन को न ढक लें।

पोलीबैग नर्सरी की स्थापना

भूमि का आकार और विन्यास बैगों के बीच की दूरी तथा अपनाई गई सिंचाई प्रणाली पर निर्भर करता है। बैगों के बीच की दूरी मुख्य रूप से नर्सरी में पौधों को कितनी देर तक रखे जाएंगे, उस अपेक्षित अवधि पर निर्भर करती है। आमतौर पर पोलीबैग पौधों को नर्सरी में लगभग 8-10 महीने तक रखा जाता है। पोलीबैग नर्सरी क्यारी का आकार 6 मी. X 3 मी. हो सकता है; नली सिंचाई की सुविधा और निराई व खाद डालने जैसे अन्य कृषि कार्यों के लिए क्यारियों के बीच लगभग 1 मी. की दूरी छोड़नी चाहिए।

पोलीबैग नर्सरी का अनुरक्षण

सिंचाई

पौधों की समुचित वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए पोलीबैग नर्सरी में नियमित रूप से पानी देना बहुत ही महत्वपूर्ण है। कितनी बार पानी देने की आवश्यकता है, उसे वर्षा और अन्य मौसम की स्थिति, उपयोग किए गए पोर्टिंग मिश्रण के प्रकार और पौध की उम्र के आधार पर तय किया जाना चाहिए। गर्मी के महीनों के दौरान सिंचाई एकांतर दिनों में की जानी चाहिए। कई सिंचाई प्रणालियाँ उपलब्ध हैं और सिंचाई प्रणाली का चयन करते समय उपयोग में आसानी, नर्सरी का आकार, पूंजी निवेश आदि जैसे घटकों पर विचार किया जाना चाहिए। जब कि स्प्रींकलर सिंचाई बड़ी नर्सरी के लिए अनुकूल है तो नली सिंचाई छोटी नर्सरी के लिए उपयुक्त है। तथापि इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सिंचाई के दौरान बैग में भरे माध्यम को पोलीबैग से बाहर न निकाला जाए। यदि पोर्टिंग मिश्रण के एक संघटक के रूप में कयर गूदे का उपयोग किया जाता है तो यह लंबे समय तक पानी बनाए रख सकता है और इसलिए 4 से 5 दिनों में एक बार प्रति बैग 1 लीटर की दर पर सिंचाई की जा सकती है।

निराई

खरपतवार पौधों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं और इसलिए यह आवश्यक है कि उन्हें लगातार हटाया जाए। मिट्टी या रेत पोर्टिंग मिश्रण का एक संघटक होता है, इसलिए पोलीबैगों में खरपतवार उगने की पूरी संभावना होती है। नर्सरी के आसपास के ज़मीन का भी अक्सर निराई गुड़ाई करके खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। खरपतवार की वृद्धि और पौधों की जड़ों को मिट्टी में घुसने से रोकने के लिए पोलीबैगों को काले प्लास्टिक की शीट पर रखा जा सकता है।

खाद डालना

बीजफल में आवश्यक पौध पोषक तत्वों का समृद्ध भंडार होता है। तथापि जड़ें अपनी शुरुआत के एक महीने बाद पोषकतत्वों को अवशोषित करने में सक्षम होती हैं। उपजाऊ ऊपरी मिट्टी, मवेशी खाद या वर्मी कम्पोस्ट से बना पोर्टिंग मिश्रण पौधों की पोषण संबंधी आवश्यकता को पूरा कर सकता है, इसलिए उर्वरक डालना आवश्यक

नहीं होता है। तथापि, पौधों की वृद्धि संतोषजनक नहीं पाई जाती है तो अंकुरण के दो महीने बाद प्रति बैग 20 ग्राम अमोनियम सल्फेट और 25 ग्राम म्यूरियेट ऑफ पोटाश और अंकुरण के चार महीने बाद प्रति बैग 45 ग्राम अमोनियम सल्फेट और 45 ग्राम म्यूरियेट ऑफ पोटाश की दर पर पोलीबैगों में उर्वरक डाला जा सकता है। उर्वरकों के प्रयोग के बाद पौधों को पानी देना चाहिए। उर्वरक को पौधों के चारों ओर फैलाकर मिश्रण में मिलाया जाना चाहिए।

छाया देना

पौधा संरक्षण

नर्सरी में कीटों और रोगों के प्रकोप के लिए पौधों का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया जाना चाहिए और लक्षण दिखाई देते ही उपयुक्त पौधा संरक्षण उपाय अपनाया जाना चाहिए।

खेत में पोलीबैग पौधों का रोपण

8 से 10 महीने के तेज़ी से बढ़ने वाले पौधे, जिनकी पत्तियाँ जल्दी फूट जाती हैं, जिनके गर्दन का घेरा 10-12 से.मी. से अधिक होता है, को मुख्य खेत में रोपण के लिए चुना जा सकता है। प्रतिरोपण के दिन बैगों में पर्याप्त नमी सुनिश्चित करने के लिए पौधों को पर्याप्त मात्रा में पानी देना चाहिए। पोलीबैग पौधों को सावधानी से संभालना

चाहिए और पौधों को उसके गर्दन पर नहीं पकड़ना चाहिए जिससे यह धरती से उखाड़ सकता है। बाग में रोपण के पहले पोलीबैग में केरा प्रोबयो (पौधे की वृद्धि को बढ़ावा देने वाले राइजोबैक्टीरिया)/एजोस्फिरिलम (नत्रजन स्थिरीकरण बैक्टीरिया)/फोस्फेट घुलनशील पदार्थ जैसे जैव-संरोपकों को शामिल करने की भी गुंजाइश है ताकि इन लाभकारी सूक्ष्म जीवों की बेहतर स्थापना हो जाए। यदि जड़ें बैग में उग आई हैं, तो उसे नर्सरी से निकालने से पहले काट दिया जाना चाहिए। रोपण करते समय पोलीबैग के किनारों को तेज ब्लेड/चाकू से सीधे काटा जा सकता है और पूरे पोर्टिंग मिश्रण के साथ मुख्य खेत में बने बड़े आकार के गड्ढे के अंदर लगाया जा सकता है।

पोलीबैग पौध की कीमत आमतौर पर सामान्य नंगी जड़ वाली पौध की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक होती है क्योंकि इसमें पोलीबैग, वर्मी कम्पोस्ट, कयर गूदा आदि की लागत और पोर्टिंग मिश्रण तैयार करने व भरने और पौधों को खाद डालने के लिए अतिरिक्त श्रम लागत भी शामिल हैं। सामान्य पौध की तुलना में पोलीबैग पौध की उच्च लागत की क्षतिपूर्ति अच्छी जड़ प्रणाली वाले ओजस्वी पौध से की जा सकती है और प्रतिरोपण में लगने वाले आघात कम होंगे, जिसके परिणामस्वरूप खेत में जल्दी जड़ पकड़ लेगी और जल्दी फूलने लगेंगे। ■

नारियल नुसखा

नारियल और सूजी का हल्वा

सामग्रियाँ:

सूजी	-	200 ग्राम
दूध	-	1 कप
चीनी	-	100 ग्राम
घी	-	4-5 छोटा चम्मच
डेसिकेटड नारियल	-	4-5 छोटा चम्मच
मेवा	-	1 बड़ा चम्मच + सजाने के लिए 1 बड़ा चम्मच



पकाने की विधि:

सूजी में दूध को मिलाकर 10-15 मिनट तक ढककर रखें। कड़ाही में घी डालकर सूजी मिलाएं और 2-3 मिनट तक धीमी आँच पर पकाएं। अब उसमें डेसिकेटड नारियल

और मेवा मिलाएं और 5 मिनट तक पकाएं। जब सूजी अच्छी तरह से पक जाए तब मेवा से सजाएं और आग से निकालकर ठंडा होने के लिए रखें। इसके बाद सर्व करें।

- इंदु नारायण

गली फसल प्रणाली

नारियल बागों को टिकाऊ बनाने हेतु एक व्यवहार्य उपाय

गायत्री पी. और निम्मी जोस

धान अनुसंधान केंद्र, केरल कृषि विश्वविद्यालय, मंकोंबु, आलप्पुष्पा, केरल

बदलती जलवायु और खाद्य असुरक्षा के वर्तमान परिदृश्य में भिन्न भिन्न समय पर विविध प्रकार की फसलों का उत्पादन करते समय कम पर्यावरणीय लागत में अपने भूमि संसाधनों का उपयोग करने हेतु किसानों के लिए कृषि वानिकी एक बेहतर विकल्प है। विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों में, गली फसल प्रणाली भूमि की प्रभावी उपयोगिता और टिकाऊ खाद्य उत्पादन के लिए पर्यावरण हितैषी पद्धति है। नारियल बागों में गली फसल प्रणाली अपना नारियल पेड़ों की उत्पादकता बढ़ाने, विविधकृत उत्पाद प्रदान करने, भाव में उतार-चढ़ाव और आपदाओं के दौरान वैकल्पिक आय के स्रोत हेतु अनुकूल उपाय है जिससे मिट्टी के प्राकृतिक संसाधनों के न्यूनतम अवक्षय के साथ आय और लाभ बढ़ जाता है, मिट्टी का कटाव कम हो जाता है और मिट्टी में अधिक जैविक सामग्री एवं कार्बन बरकरार रहता है। दीर्घ काल तक नारियल की एकल खेती के परिणामस्वरूप भूमि संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जैसे कि ज़मीन की उत्पादकता कम हो जाती है, मिट्टी की गुणवत्ता कम हो जाती है और स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर संसाधनों के उपयोगीकरण से वांछित प्रभाव नहीं हो जाता है। कृषि वानिकी संकल्पना के साथ

परंपरागत नारियल खेती का संशोधन करना पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक हितलाभ हासिल करने हेतु अत्यंत उपयुक्त प्राकृतिक उपाय है। जलवायु परिवर्तन संबंधी अंतरशासकीय पैनल ने रिपोर्ट की है कि 2040 तक कार्बन पृथक्करण में कृषि वानिकी की अत्यधिक संभावनाएं होंगी ($600 \text{ MtC वर्ष}^{-1}$) जबकि चरागाह प्रबंधन ($375 \text{ MtC वर्ष}^{-1}$), वन प्रबंधन ($250 \text{ MtC वर्ष}^{-1}$) और फसल-भूमि प्रबंधन ($150 \text{ MtC वर्ष}^{-1}$) की संभावनाएं अपेक्षाकृत कम हैं।

गली फसल प्रणाली-संकल्पना

गली फसल प्रणाली आहार और चारा सुरक्षा हेतु उपयुक्त कृषि वानिकी पद्धति है। गली फसल लगाने की संकल्पना 1970 और 1980 के दौरान आईआईटीए इबादन, नाइजीरिया में परंपरागत झाड़ियों और खेती की परती प्रणाली के विकल्प के रूप में विकसित की गई थी। गली फसल प्रणाली ऐसी फसल प्रणाली है जिसमें पेड़ों के बीच काफी दूरी छोड़कर लगाई गई झाड़ियों या बड़े वृक्षों की पंक्तियों के बीच की जगहों या गलियों में कृषि योग्य फसलों की खेती की जाती है। इस प्रणाली में बहुवर्षी पेड़ों या झाड़ियों के साथ कृषीय, बागवानी, चारा फसलें उगायी जाती हैं। पेड़ों या झाड़ियों की एक या एक

नारियल के साथ गली फसल की खेती

से अधिक पंक्तियाँ बीच में अधिक दूरी छोड़ते हुए लगायी जाती हैं और बाड़ पंक्तियों के रूप में इनका प्रबंधन किया जाता है जबकि बीच की जगहों में या इन बाड़ पंक्तियों के बीच बनी गलियों में उपयुक्त अंतरफसलों की खेती की जाती है। इस प्रणाली में, फसल चरण के दौरान बड़े पेड़ों की लगातार छँटाई की जाती है और परती के समय पेड़ों को मुक्त रूप से बढ़ने दिया जाता है। गली फसल की संकल्पना इस सिद्धांत के आधार पर विकसित की गयी है कि जल्दी बढ़ने वाले, गहराई तक जड़ें फैली हुई, नत्रजन स्थिरीकारक पेड़ों या झाड़ियों को लगातार बरकरार रखने से कृषि संसाधनों के मूल स्रोत का अपक्षय रोका जा सकता है। गली फसल प्रणाली को बाड़ पंक्ति अंतरफसल प्रणाली और वीथि फसल प्रणाली भी कहा जाता है। नारियल की चौकोर रोपण प्रणाली में आम तौर पर उपयुक्त उपज प्राप्त करने के लिए पेड़ों के बीच 7.6 मीटर से 9.0 मीटर की दूरी छोड़कर प्रति हेक्टर 170 से 120 पेड़ों को लगाने की सिफारिश की जाती है। ऐसी रोपण प्रणाली में पेड़ों के बीच उपलब्ध अधिक जगह और मिट्टी, सूर्य प्रकाश, पानी और पोषकतत्वों का प्रभावी उपयोग करने और उच्चतर उत्पादकता हासिल करने के लिए नारियल बागों में पेड़ों के बीच की जगह पर वार्षिक और बहुवार्षिक फसलों की अंतर खेती सामान्य तौर पर की जाती है। बढ़वार की प्रकृति, शिखर की विशेषताएं, रोपण प्रतिमान/ज्यामिति और बहुवर्षी पेड़ फसलों की डालियों का स्तर, इसके अलावा ताड़ की आयु, प्रक्षेत्र फसलों और अंतर खेती की गई वृक्ष फसलों की छाया सहिष्णुता आदि इस प्रणाली की उत्पादकता निर्धारित करने वाले मुख्य घटक हैं। संघटकों का समुचित चयन और उत्पादकता अनुकूलतम बनाने में इनकी व्यवहार कुशलता पर भी ध्यान देना होता है। तेज़ बढ़वार वाली बहुवर्षी दलहनी हरी खाद वृक्ष फसलों और वार्षिक खाद्य फसलों की खेती नारियल पेड़ों के बीच की जगह पर करने से किसान उपलब्ध ज़मीन, जगह और संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकता है और बहुविध उत्पाद प्राप्त कर सकता है और ज़मीन से लाभ भी प्राप्त होता है। गली फसल प्रणाली अपनाने से किसानों को दीर्घ काल तक आय प्रदान करने वाली बहुवर्षी वृक्ष फसलों के साथ साथ लघु अवधि के लिए आय सृजित करने वाली वार्षिक फसलों की खेती करने का अवसर

प्राप्त होता है। यह प्रणाली फसल विविधता, बेहतर मृदा स्वास्थ्य, संसाधनों का बेहतर उपयोग और फसल वृद्धि में सुधार तथा कार्बन पृथक्करण हेतु अनुकूल सूक्ष्मजलवायु परिस्थिति प्रदान करती है।

नारियल बागों में हरी खाद-चारा फसल गली फसल प्रणाली के संघटक

नारियल बाग में गली फसल प्रणाली में एक पेड़ संघटक और गली फसल संघटक होने चाहिए।

पेड़ संघटक

नारियल बाग में हरी खाद-खाद्य फसल गली फसल प्रणाली में पेड़ संघटक के रूप में दलहनी वृक्ष प्रजाति के विभिन्न पेड़ों को शामिल किया जा सकता है जैसे ग्लिरिसिडिया सेपियम (गिरिपुष्प), ल्यूसीना ल्यूकोसिफला (सुबबुल), कजानस कजन (अरहर), सेसबानिया सेसबन (जयंती), सेसबानिया ग्रैंडिफ्लोरा (अगति) आदि। गली फसल प्रणाली में आम तौर पर शामिल की जाने वाली हरी खाद वृक्ष फसल है गिरिपुष्प। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान में आयोजित अध्ययनों से साबित हुआ है कि गिरिपुष्प नारियल बागों में आसानी से उगायी जा सकती है और पर्याप्त मात्रा में नत्रजन समृद्ध हरी पत्तियाँ प्राप्त की जा सकती हैं और छँटाई से निकाली गई गिरिपुष्प के पत्तों का प्रयोग करने से नत्रजन, फोस्फोरस और पोटेशियम की क्रमशः लगभग 90 प्रतिशत, 25 प्रतिशत और 15 प्रतिशत की आपूर्ति होती है। सुबबुल, सेसबानिया आदि जैसे वृक्षों का रोपण करने से हरी पत्ती खाद और नत्रजन स्थिरीकरण के अतिरिक्त किसानों की चारा अपेक्षाओं की भी आपूर्ति होती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में नारियल आधारित उत्पादन प्रणालियों में यदि नारियल की उपज में ज्यादा असर नहीं पड़ रहा हो तो द्विबीजपत्री पेड़ों की अंतर खेती भी स्वीकार्य होगी और अंतर खेती किए जाने वाले पेड़ इस प्रणाली का महत्वपूर्ण संघटक साबित होगा। उपलब्ध साक्ष्यों से यह सूचित होता है कि मूल्यांकित अधिकतर द्विबीजपत्री पेड़ या तो पूरक प्रभाव डालते हैं या तटस्थता दर्शाते हैं।

गली फसल संघटक

गली फसल संघटक के रूप में धान्य, मिलेट, सब्जियाँ, कंद और चारा फसलों की व्यापक श्रेणी शामिल की जा सकती है। गली फसलों का चयन पेड़ों के नीचे उपलब्ध

सूर्य प्रकाश, गली फसलों की छाया सहिष्णुता और/या प्रतिस्पर्धी/संपूरक प्रतिक्रियाओं पर ध्यान देते हुए किया जाना चाहिए। ऐसी परिस्थितियों के लिए विशिष्ट रूप से नत्रजन स्थिरीकरण क्षमता युक्त छाया सहनशील प्रजातियाँ/किस्में उपयुक्त होती हैं। प्रतिस्पर्धिता कम करने और संसाधनों के उपयोग में सामयिक पूरकता प्रोत्साहित करने के लिए छँटाई व्यवहार्य प्रबंधन विकल्प है। नारियल बागानों में हरी खाद पेड़ों की पंक्तियों के बीच में गली फसल के रूप में धान, ज्वार, मकई, बाजरा, रागी, लोबिया, मूँग, उडद, मूँगफली, सोय, चना, कसावा, जिमी कंद, रतालू, सुथनी, शकरकंद, चीनी आलु, अरबी, अदरक, हल्दी, कद्दु, पेठा, हरी मिर्च, चौलाई, बैंगन, अनन्नास, पुष्प फसलें और चारा घास आदि जैसी विभिन्न फसलें उगायी जा सकती हैं। हरी खाद फसलें नारियल पेड़ों के बीच की जगह में पर्याप्त दूरी छोड़कर दो कतारों में लगायी जाती हैं। हरी खाद वृक्ष फसलों की दो पंक्तियों के बीच की चौड़ी गलियों में उपयुक्त गली फसलों का रोपण किया जा सकता है। फसल चरण के दौरान जब गलियों में खाद्य फसलें उगायी जाती हैं तब हरी खाद पेड़ों की छँटाई की जाती है और बाड़ा के रूप में इसका प्रबंधन किया जाता है। जब फसलें नहीं उगायी जाती हैं और गलियों में कोई फसल नहीं होती है तब हरी खाद पेड़ों को मुक्त रूप से बढ़ने दिया जाता है। अगले मौसम में गली फसलों का रोपण करने से पहले इन पेड़ों की फिर से छँटाई की जाती है और बाड़ के रूप में इनका अनुरक्षण किया जाता है। पेड़ों की छँटाई करके निकाले गए भागों को हरी पत्ती खाद/पलवार के रूप में नारियल पेड़ों को दिया जाता है जो नारियल पेड़ के लिए अपेक्षित पोषकतत्व खास तौर पर नत्रजन प्रदान कर सकता है। चारा के रूप में खेती किए जाने वाले पेड़ों के साथ ज़मीन का एकांतर उपयोग करने का विकल्प सुरक्षित रूप से चारा प्राप्त करने और भूमि टिकाऊपन बनाए रखने के लिए वरदान साबित होता है। वानिकी महाविद्यालय, केरल कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अध्ययन ने भी रिपोर्ट की है कि द्विबीजपत्री पेड़ों की अंतर खेती करने से नारियल पेड़ों की पैदावार पर ज़ोरदार नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है जब तक कि वे नारियल पेड़ों से अधिक ऊँचाई में न बढ़ें। कुछ मामलों में मिट्टी के जैविकतत्वों की वृद्धि और जलधारण क्षमता में सुधार एवं परिणामस्वरूप पैदावार में वृद्धि भी निदर्शित

हुई है और साथ साथ कीटों एवं रोगों का प्रकोप भी कम होते पाया गया है।

नारियल बागों में हरी खाद-खाद्य फसल गली फसल प्रणाली में संसाधनों की उपयोगक्षमता

गली फसल प्रणाली में मिट्टी, पानी, सूर्यप्रकाश, पोषकतत्व और भूमि संसाधनों के प्रभावी उपयोग और संरक्षण को ध्यान में रखते हुए इसको टिकाऊ फसल उत्पादन प्रणाली के रूप में पहचाना गया है।

मिट्टी

नारियल बागों में गली फसल के रूप में गिरिपुष्प, सुबबुल, सेसबानिया आदि जैसे हरी खाद वृक्षों की खेती करने से मिट्टी की भौतिक, रासायनिक और जैविक विशेषताओं में सुधार होता है। हरी पत्ती खाद का प्रयोग करने पर मिट्टी में जैविकतत्वों की वृद्धि, झाड़ियों की पंक्तियों की जड़ क्रियाओं में सुधार, बेहतर मृदा संचयन, स्थूल घनत्व में घटाव, मिट्टी की सरंध्रता में सुधार, जलधारण क्षमता में वृद्धि होने से मिट्टी की भौतिक विशेषताएं बेहतर होती हैं। मिट्टी की रासायनिक विशेषताओं के सुधार में मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता में सुधार तथा मिट्टी की प्रतिक्रिया (पीएच) में संशोधन शामिल हैं। बेहतर तरीके से पलवारों का सड़न और सूक्ष्मजीवीय क्रियाओं में वृद्धि के ज़रिए मिट्टी की जैविक विशेषताओं में सुधार होता है। ढालूनुमा जगह के नारियल बागों में गली फसल प्रणाली अपनाते से ये फसलें घेरा बनकर मिट्टी का संरक्षण करती हैं। गहराई तक जड़ें जाने वाली बाड़ की पंक्तियाँ ढालूनुमा क्षेत्रों से मिट्टी और पानी के बहाव में रुकावट पैदा करती हैं, मिट्टी के कणों का ढालूनुमा ज़मीन से तेज़ी से बहाव को रोककर उन्हें गली फसलों के बीच रोककर रखता है जिससे स्वाभाविक तरीके से मेंड उत्पन्न होता है। छादन प्रणाली में हरी खाद वृक्ष के शिखर और छँटाई करके निकाले गए अपशिष्ट मिट्टी में मिलाया जाता है ताकि बारिश के पानी को ज़मीन पर रोक कर रखा जा सके और ज़मीन पर चादर के रूप में कार्य करते हुए मिट्टी के ऊपर पड़ने वाली बारिश की बूँदों के प्रभाव को कम किया जा सके और मिट्टी के बहाव को रोका जा सके।

पानी

मिट्टी की संरचना, समूचा आकार, स्थिरता एवं जलधारण क्षमता में सुधार होने से मिट्टी में पानी को

रिसाव प्रभावी रूप से होता है, जलधारण क्षमता बढ़ती है और ऊपरी सतह से पानी का बह जाना कम हो जाता है जिससे नारियल बागों में अधिकाधिक पानी सुरक्षित रखने में सहायता मिलती है। बाड़ पंक्तियों के पेड़ों की छँटाई से प्राप्त अपशिष्टों से नारियल थालों का पलवार करने पर बाष्पीकरण के ज़रिए मिट्टी से पानी का नष्ट कम हो जाता है। यह नारियल पेड़ों को सूखे के समय पानी के तनाव से बचाएगा।

पोषकतत्व

नारियल बाग में हरी खाद गली फसल प्रणाली अपनाते से मिट्टी में जैविकतत्व और पौधों को उपलब्ध पोषकतत्व बढ़ जाते हैं जिसके कारण पोषकतत्व उपयोग क्षमता बेहतर होती है। बाड़ पंक्तियों में हरी खाद पेड़ों का रोपण करने से गली फसलों और नारियल को साल भर पोषकतत्व समृद्ध पत्तों का पलवार या हरी खाद उपलब्ध होगा। नारियल पेड़ों को गिरिपुष्प की छँटाई करके निकाले गए अपशिष्टों का प्रयोग करने से नारियल की नत्रजन अपेक्षाओं के बहुत बड़े हिस्से की आपूर्ति होती है और इसप्रकार नारियल के लिए रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग की मात्रा कम की जा सकती है। बाड़ा पंक्तियों के रूप में रोपण किए गए दलहन पेड़ जैविक नत्रजन स्थिरीकरण के ज़रिए मिट्टी में नत्रजन की मात्रा बढ़ाते हैं। इसका लाभ नारियल पेड़ और गली फसल दोनों को मिल जाता है। बाड़ा पंक्तियों के हरी खाद पेड़ों की छँटाई से प्राप्त अपशिष्टों से पलवार लगाया जा सकता है जिससे सतही उर्वर मिट्टी का कटाव और पोषकतत्वों का निक्षालन कम हो जाता है। जंगली प्रजाति के पेड़ों का गहरा जड़ तंत्र मिट्टी की गहरी परत से पोषकतत्वों का अवशोषण करता है जबकि गली फसलें जिनका जड़ तंत्र कम गहराई तक ही फैलता है, सतही परतों से पोषकतत्वों का अवशोषण करती हैं। इसप्रकार मिट्टी के पोषकतत्वों का अन्योन्याश्रित बँटवारा हो जाता है। दूसरा हितकर प्रभाव यह है कि ये पेड़ अपनी ऊतकों में पोषकतत्वों का धारण करते हैं और वहीं पर सुरक्षित रखते हैं। पेड़ों का गहरा जड़ तंत्र जो साल भर सक्रिय रहता है पोषकतत्वों को ऊपर की ओर पंप करता है और ये पोषकतत्व जड़ों के सड़ जाने, पेड़ों के अपशिष्ट गिरने और कतार पंक्ति की छँटाई करके निकाले गए अपशिष्टों

के अपघटित होने तथा खनिजकरण से मिट्टी की सतही परत पर पहुँचते हैं। इस प्रकार पोषकतत्वों के पुनर्चक्रण से उत्पादक प्रणाली के भीतर ही पोषकतत्वों का निरंतर अंतरण चलता रहेगा। इससे पोषकतत्वों की आंतरिक माँग कम होगी और पोषकतत्वों की उपयोग क्षमता एवं पैदावार में वृद्धि होगी। चारा फसलों के पत्ते भी पोषक समृद्ध आहार स्रोत होते हैं क्योंकि इनमें उच्च मात्रा में प्रोटीन, विटामिन और खनिज निहित होते हैं जो चरागाह पशुओं के पोषण में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। हालाँकि पेड़ के सारे हिस्से आहार के रूप में उपयोगी होते हैं लेकिन पत्तों को अधिक मूल्यवान समझा जाता है क्योंकि इसमें उच्च मात्रा में कच्चा प्रोटीन निहित होता है।

प्रकाश

नारियल बागों में गली फसल प्रणाली अपनाते से नारियल, हरी खाद पेड़ और गली फसलों को अपनी बढ़वार के लिए प्रकाश ऊर्जा के प्रभावी उपयोगीकरण में सहायता मिलती है। पेड़ों के बीच अधिक दूरी छोड़ने, समुचित अभिविन्यास और हरी खाद पेड़ों की सामयिक छँटाई करने से गली फसलों को इनकी छाया के नीचे आने से बचाया जा सकता है। इस तरह फसल अवधि के दौरान प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा कम की जा सकती है। गैर फसलन या परती की अवधि के दौरान जब हरी खाद पेड़ों को बिना छँटाई किए मुक्त रूप से बढ़ने दिया जाता है तो गलियों में प्रकाश बहुत कम ही प्राप्त होता है जिसके कारण खरपतवारों की बढ़वार कम हो जाती है और गलियों में इसकी वृद्धि भी सीमित होती है।

भूमि

नारियल बागों में गली फसल प्रणाली अपनाते से ज़मीन का अत्यंत प्रभावी उपयोग होता है। एक ही वर्ष में एक ही ज़मीन पर दीर्घ फसलन अवधि वाली अधिक से अधिक फसलें लगायी जाती हैं तो भूमि की उपयोग क्षमता बढ़ जाएगी।

फसल पैदावार

नारियल के साथ दलहन हरी खाद पेड़ों को उगाने से पोषकतत्व और जल प्रबंधन तथा नमी संरक्षण प्रभावी होगा और नारियल बागों में खरपतवारों की वृद्धि भी कम होगी। इसके अलावा नारियल बागों की सूक्ष्मजलवायु में भी

सुधार होगा। इन सभी का एक संपूरक प्रभाव नारियल पेड़ों पर पड़ेगा और नारियल की पैदावार में वृद्धि होगी। फसल विविधता से इस प्रणाली का कुल उत्पादन भी बढ़ेगा।

खरपतवार नियंत्रण

फसल अवधि के दौरान हरी खाद पेड़ों के पत्तों से पलवार लगाने से गली के रास्तों और नारियल थालों की ज़मीन छादित रहेगी और खरपतवार की वृद्धि भी कम होगी। परती की अवधि के दौरान अत्यंत तंदुरुस्ती से बढ़ता हरी खाद पेड़ गलियों में छाया प्रदान करता है और खरपतवारों की बढ़वार कम करता है। इस प्रकार मिट्टी में खरपतवारों के बीजों का संचयन कम हो जाता है।

आर्थिकी

फसल विविधता के कारण यह प्रणाली आर्थिक रूप से स्थिर रहती है। गली फसल प्रणाली अपनाकर नारियल बागों में विविधता लाने से मात्र नारियल पर निर्भर रहने का खतरा कम हो जाता है। गली फसल प्रणाली में लगायी गयी खाद्य फसलों से प्राप्त उत्पाद किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत बन जाते हैं। इस प्रणाली में बाह्य कृषि आदान सामग्रियों की ज़रूरत भी कम होती

है। ज़मीन की सफाई, उर्वरक एवं शाकनाशियों की लागत में भी बचत होगी। मिट्टी के कटाव के कारण बाग में और बाग के बाहर लगने वाली लागत भी कम हो जाएगी। वासभूमि नारियल बागों में गली फसल प्रणाली अपनाते समय फसलों का समुचित चयन, नियोजन और प्रबंधन अपेक्षित है। नारियल बागों में गली फसल प्रणाली अपनाने से नारियल पेड़ों का निष्पादन बेहतर हो जाता है, मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ जाती है, पोषकतत्वों का पुनर्चक्रण होता है, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम हो जाता है, खरपतवार नियंत्रण, मिट्टी के कटाव में कमी, बेहतर सूक्ष्म जलवायु और विविधीकृत फसल पैटर्न और नारियल बागों में टिकाऊ खेती मुम्किन हो जाती है। नारियल आधारित कृषि वानिकी खेती प्रजातियों की समृद्धता में वृद्धि, मिट्टी की भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं में सुधार, कार्बन पृथक्करण के लिए नए मार्ग खोलना, वायु एवं जल संसाधनों का शुद्धीकरण और वायुमंडल में हरित गृह गैस का संचयन दूर करना आदि कार्यों के ज़रिए पारितंत्र के प्रकार्यों को संतुलित रखता है। ■

सेवानिवृत्ति



श्री सैमण पी. ए., मल्टी टास्किंग स्टाफ, सी. आई. टी., आलुवा 31 जनवरी 2024 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 35 वर्ष बोर्ड में सेवा की।



श्री सेवियर गब्रियल, मल्टी टास्किंग स्टाफ, मुख्यालय, कोची 29 फरवरी 2024 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 35 वर्ष बोर्ड में सेवा की।



श्री रवींद्र सिंह सेंगर, उप निदेशक (विकास), एम. डी. आई. सी., दिल्ली 31 मार्च 2024 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 36 वर्ष बोर्ड में सेवा की।



श्री के. एस. जेडम्स, सहायक, मुख्यालय, कोची 31 मार्च 2024 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 37 वर्ष बोर्ड में सेवा की।



श्री गणेश प्रसाद साव, मल्टी टास्किंग स्टाफ, प्रवीउ फार्म, मधेपुरा 31 मार्च 2024 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 35 वर्ष बोर्ड में सेवा की।

कल्पवृक्ष नारियल और अंतरफसल के रूप में मिलेट सीमांत किसानों के लिए वरदान

अनिताकुमारी और पूनम खत्री*

प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रधान अन्वेषक (एफएफपी परियोजना) और *तकनीकी सहायक
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम

मिलेट (मोटा अनाज) भारत के खाद्यान्नों का अभिन्न अंग रहा है। मिलेट कठोर प्रकृति के, छोटे बीजदार और मौसमी अल्पावधि फसल है जो अद्वितीय खाद्यान्न हैं। दुनिया के कुल मिलेट उत्पादन का लगभग 41 प्रतिशत भारत में (2021 की सांख्यिकी के अनुसार) है। भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ को जो संकल्प प्रस्तुत किया था उसके आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष घोषित किया था। भारत में मिलेट वर्ग के खाद्यान्नों में कुटकी (बार्नयार्ड मिलेट)(99.9 प्रतिशत), कोदों मिलेट (100 प्रतिशत), रागी (53.3 प्रतिशत) और बाजरा (44.5 प्रतिशत) का उत्पादन सबसे अधिक हो रहा है। मिलेट का खेतीगत क्षेत्र राजस्थान में सबसे अधिक है। महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और तमिलनाडु में भी मिलेट की खेती की जाती है।

मिलेट अत्यधिक गुणों से युक्त फसल है, इसमें धीमी गति से पचने वाला स्टार्च, आहारिय रेशा, गुणकारी वसा, कैल्शियम, पोटेशियम, मैगनीशियम, आयरन, मैगनीज़, ज़िंक और बी कॉम्प्लेक्स विटामिन जैसे खनिज पदार्थ उच्च मात्रा में निहित होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत गुणकारी हैं। मिलेट मधुमेह और अन्य जीवनशैली बीमारियों को नियंत्रित रखने के लिए भी उपयुक्त है।

मिलेट 300-400 मि.मी. बारिश मिलने वाले शुष्क क्षेत्रों में भी अच्छी तरह बढ़ता है। यह शून्य कार्बन और कम ऊर्जा फुटप्रिंट के लिए जाना जाता है क्योंकि यह प्रति किलोग्राम उत्पादन के लिए जितना कार्बन उत्सर्जित करता है उसके बराबर कार्बन पर्यावरण से अवशोषित भी करता है। इसका उत्पादन कम पानी और कम बिजली की खपत से हो सकता है, अतः यह ऊर्जा कुशल भी है। सीमांत किसानों के लिए यह एक सुरक्षित और भविष्य की फसल है।



नारियल के साथ कुटकी की खेती

नारियल और मिलेट-उचित संयोजन

नारियल और मिलेट बेहतरीन पोषक संयोजनों में से एक है। केरल में मिलेट फसलों की खेती पालक्काट और इट्टुक्कि जिलों में और आदिवासी क्षेत्र अट्टप्पाटी में केंद्रित है। नारियल आधारित फसल प्रणाली में नारियल पेड़ों के बीच 7.6 X 7.6 मीटर की दूरी और थाले का घेरा 1.8 मीटर बनाए रखना मिलेट की खेती के लिए पर्याप्त है। इससे प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगक्षमता बढ़ जाती है। हार्पर (1977) की आला-पूरक परिकल्पना (niche complementarity hypothesis) के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों के उच्च स्तर का उपयोग और बँटवारा होता है, जो इसे एकल फसल की तुलना में अधिक उत्पादक बना देता है। अतः नारियल के बागों में मिलेट फसलों को अंतरफसलों के रूप में शामिल करने की पर्याप्त गुंजाइश है और इसकी अनंत संभावनाएं हैं।

नारियल के बागों में मिलेट फसलों की अंतरखेती के प्रक्षेत्रीय अनुभव नीचे दिए गए हैं।

1. ज्वार (सोरघम बाइकलर एल.): यह एक सी4 फसल है और इसे मिलेट का राजा भी कहा जाता है। किसान प्राथमिक कार्यक्रम (एफएफपी) क्षेत्र में 20 एकड़ में ज्वार



मिलेट की खेती

की खेती की गई थी। फसल की कटाई जून महीने के पहले सप्ताह और तीसरे सप्ताह के दौरान की गई। ज्वार (किस्म 35-1) एफएफपी के कई पंचायतों में उगाया जा रहा है। ओणाट्टुकरा की रेतीली मिट्टी में ज्वार का निष्पादन अच्छा रहा। यह फरवरी और अप्रैल 2023 के सबसे गर्म महीनों में पल्लवित हुआ। इसे एक सफल पहल के रूप में प्रदर्शित किया गया।

उपयोग: सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) सत्रों के दौरान उस इलाके के छोटे और सीमांत किसानों की प्रमुख क्षेत्रीय समस्या पशु और कुक्कुट चारा की कमी बताया जाता है। पशुओं और मुर्गीपालन के लिए चारा के रूप में इस फसल का उपयोग किया जा सकता है।

पोषण महत्व: 100 ग्राम ज्वार में औसतन 349 किलो कैलोरी ऊर्जा, 10.4 ग्राम प्रोटीन, 1.6 ग्राम कच्चा रेशा, 72.6 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 25 मि.ग्रा. कैल्शियम और 4.1 मि.ग्रा. आयरन निहित होते हैं।

2. रागी (एलुसीन कोराकाना): यह फसल पूर्वी एवं मध्य अफ्रीका की ग्रामीण आबादी के बीच और दक्षिण भारत में काफी लोकप्रिय है। रागी अत्यंत पौष्टिक होता है तथा इसके उत्कृष्ट माल्टन (malting) गुण के कारण यह एक प्रोबायोटिक भोजन है। यह विश्वास है कि इसकी उत्पत्ति तांजानिया या एथियोपियाई उच्च भूमि के पहाड़ी क्षेत्रों में हुई थी, जो बाद में भारत, नेपाल और चीन जैसे एशियाई देशों में फैल गई। यह फिंगर मिलेट के रूप में प्रसिद्ध है क्योंकि इसकी बालियाँ हथेलियों की उँगलियों की तरह व्यवस्थित होती हैं।

उपयोग: पारंपरिक रूप से यह दूध छुड़ाने के भोजन के रूप में उपयोग किया जाता है। रागी में कैल्शियम

और पोटेशियम प्रचुर मात्रा में हैं इसलिए मधुमेह, मोटापा और कुपोषण से पीड़ित लोगों के लिए उपयुक्त है। कुछ लेख यह भी संकेत देते हैं कि रागी गुर्दा, मस्तिष्क और मांसपेशियों को सुचारू रूप से काम करने में मदद करता है।

पोषण महत्व: 100 ग्राम रागी में 328 किलो कैलोरी ऊर्जा, 7.3 ग्राम प्रोटीन, 2.6 ग्राम कच्चा रेशा, 72 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 344 मि.ग्रा. कैल्शियम और 8.9 मि.ग्रा. आयरन निहित होते हैं।

3. चेना (पैनिकम मिलियासीम एल.): यह फसल ग्लूटेन मुक्त है और पहली बार अंतरफसल के रूप में (किस्म: डीएचपीएम 2769) इसका मूल्यांकन किया गया था। उपज और वृद्धि के मामले में यह फसल उपयुक्त पाया गया। एफएफपी परियोजना में 25 एकड़ में इसकी खेती की गई और फसल की कटाई मई और जून महीने में की गई।

उपयोग: यह रेशा, पॉलीफेनोल, विटामिन और प्रोटीन से भरपूर है। तंत्रिका स्वास्थ्य प्रणाली के लिए चेना काफी उपयुक्त है क्योंकि इसमें उच्च स्तर के लेसिथिन, नियासिन, बी कॉम्प्लेक्स और फोलिक अम्ल जैसे विटामिन, फॉस्फरस, कैल्शियम, जिंक और आयरन जैसे खनिज और मेथियोनीन और सिसटीन निहित हैं जो शरीर के लिए आवश्यक अमिनो अम्ल होते हैं।

पोषण महत्व: 100 ग्राम चेना में 309 किलो कैलोरी ऊर्जा निहित होती है, साथ ही 8.3 ग्राम प्रोटीन, 9 मि.ग्रा. कच्चा रेशा, 65.9 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 27 मि.ग्रा. कैल्शियम और 0.5 मि.ग्रा. आयरन निहित होते हैं।

4. कुटकी या छोटा बाजरा (पैनिकम मिलिएर): कुटकी भारत के कई राज्यों की एक पारंपरिक फसल है। एफएफपी क्षेत्र में 25 एकड़ में कुटकी (किस्म: डीएचएलएम 36-3) की खेती की गई थी। कुटकी की अपेक्षित उपज 450-600 किलोग्राम/एकड़ है।

उपयोग: कुटकी में कार्बोहाइड्रेट कम मात्रा में निहित है, यह धीमी गति से पचता है और इसमें पानी में कम घुलनशील गॉंद सामग्री निहित है जो ग्लूकोज़ की चयापचय प्रक्रिया में सुधार करती है। यह खून में शर्करा को धीमी गति से विमोचित करता है और साथ ही ग्लूकोज़ अवशोषण भी धीमा कर देता है।



देवीकुलंगरा पंचायत में कुटकी की खेती

पोषण महत्व: 100 ग्राम कुटकी में 314 किलो कैलोरी ऊर्जा, 65.55 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, साथ ही 10.13 ग्राम प्रोटीन, 7.72 मिलीग्राम कच्चा रेशा, 32 मिलीग्राम कैल्शियम और 1.3 मिलीग्राम आयरन निहित होते हैं।

मिलेट की खेती की शुरुआत और प्रचार के लिए सामाजिक हस्तक्षेप

मिलेट की खेती को बढ़ावा देने और इसका प्रचार-प्रसार करने के लिए सामूहिक रूप से निम्नलिखित हस्तक्षेप किए जा सकते हैं:

- व्यावहारिक खेती और उत्पादन की समस्याएं दूर करने के लिए भूमि समेकन रणनीतियाँ अपनाना।
- संयुक्त देयता समूहों (जेएलजी) के माध्यम से मिलेट की खेती के लिए महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) प्रतिभागियों के संमिलन का पता लगाना।
- किसानों, विस्तार अधिकारियों और जन प्रतिनिधियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- खेतीगत क्षेत्रों और परिस्थितियों के सहभागी मूल्यांकन के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों के ज़रिए उच्च उपज देने वाली मिलेट फसलों का परिचय कराना।
- गुणवत्तापूर्ण बीज सामग्री की आपूर्ति, महत्वपूर्ण आदान सामग्रियाँ प्रदान करना, नियमित रूप से प्रक्षेत्र का दौरा करना, वैज्ञानिकों से तकनीकी सलाह प्रदान कराना, क्षेत्र की समस्याओं का हल करना और किसानों को खेती के लिए प्रेरित करने तथा आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उनके साथ रहना।
- किसानों और विशेषज्ञों के साथ परिणामों और प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन तथा उपज का अनुमान और दस्तावेज़ीकरण करना।

भारतीय नारियल पत्रिका की एजेंसी संबंधी शर्तें

1. भारतीय नारियल पत्रिका का वार्षिक शुल्क 40 रुपए और आजीवन शुल्क 1000 रुपए है।
2. एजेंसी के लिए ऐसे व्यक्ति हकदार होंगे जो कम से कम 10 ग्राहकों को दर्ज करते हों।
3. एजेंटों को 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।
4. ग्राहकों को दर्ज करने के बाद कमीशन काटकर बाकी रकम अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-682011 के पक्ष में मनी आर्डर/ डिमांड ड्राफ्ट (एरणाकुलम में देय) द्वारा भेजे। मनी आर्डर का कमीशन एजेंट को चुकाना होगा।
5. रकम के साथ साथ ग्राहकों के नाम व पता भी स्पष्ट रूप से लिखकर भेजे। रकम प्राप्त होते ही पत्रिका प्रत्येक ग्राहक को डाक द्वारा भेजी जाएगी।
6. हमारे कार्यालय में दर्ज ग्राहकों के नाम व पता एवं पत्रिका भेजने की तारीख से एजेंट को अवगत कराया जाएगा।
7. अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-11 के पते पर संपर्क करें तो एजेंसी का आवेदन प्रपत्र मिल जाएगा।

मिलेट की खेती के जोखिम और समस्याएं-क्षेत्रीय अध्ययन

खाद्यांत्रों की आत्मनिर्भरता के लिए नारियल बागानों में अंतरफसल के रूप में मिलेट एक महत्वपूर्ण फसल है। इस प्रकार की खेती में कुछ व्यावहारिक खेती की समस्याएं भी पाई गईं जैसे चावल के कीड़े के प्रकोप से 80 प्रतिशत फसल का नुकसान हुआ और पक्षियों के हमले से लगभग 30 प्रतिशत फसल खराब हुई। वाणिज्यिक उत्पादन बढ़ाने हेतु मूल्य वर्धित और विशिष्ट उत्पादों के पोषण संबंधी पहलुओं का मूल्यांकन करने के लिए मिलेट की किस्मों के सहभागी मूल्यांकन को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। ■

नारियल बागों में लाल ताड़ घुन का एकीकृत प्रबंधन- कासरगोड़ के बायार से एक विजय गाथा

प्रतिभा पी.एस., तंपान सी. और जिलु वी.साजन
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़



बायार का नारियल बाग

नारियल उत्पादन में किसानों की एक प्रमुख समस्या है कीटों एवं रोगों के प्रकोप के कारण फसल का नुकसान। नारियल के प्रमुख कीट हैं गैंडा भृंग (*ऑरिक्टस रिनोसेरस एल.*) और लाल ताड़ घुन (*रिंकोफोरस फेरुजिनस ओलिव.*)। गैंडा भृंग कॉपल, पर्णवृत और अनखुली शूकिका को छेदकर ताड़ पर घाव उत्पन्न करता है, जो अक्सर कली सड़न रोगकारक फफूंद और लाल ताड़ घुन के प्रकोप के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। लाल ताड़ घुन नारियल का अत्यंत विनाशकारी कीट है। अंडा देने के लिए तैयार मादा कीट घावों से उत्पन्न वाष्पशील संकेतों के ज़रिए ताड़ों की पहचान कर लेती हैं और शिखर, तना या धड़ क्षेत्र पर मौजूद घावों, दरारों और छिद्रों में अंडा डालती हैं। अंडे से निकलती सूँडियाँ तने पर सुरंग बनाकर अंदर घुस जाती हैं और अंदरूनी पदार्थों को खा जाती हैं। कीट की गुप्त प्रकृति और यथासमय नुकसान का लक्षण दर्शाए बिना केंद्रक भाग

के ऊतकों को आहार बना लेने से इसके प्रभावी प्रबंधन में बाधा उत्पन्न होती है। कीट प्रकोप की शुरू में ही पहचान और एकीकृत कीट प्रबंधन की व्यवस्थित प्रणाली अपनाने से इन कीटों के प्रभावी प्रबंधन में सहायता मिलती है।

हाल ही में, केरल में कासरगोड़ जिले के पैवलिके गाँव के बायार में (देशांतर पूर्व 7500'14.31108'; अक्षांश उत्तर 12042'31.1328) श्री रहीम के नारियल बाग में लाल ताड़ घुन का घातक प्रकोप देखा गया। यह पहाड़ी क्षेत्र में स्थित 35 एकड़ ज़मीन में बेहतर तरीके से अनुरक्षित खेती प्रणाली है जहाँ मुख्य फसल नारियल है। इस प्रणाली में 550 फलदायी नारियल पेड़, 225 गैर फलदायी नारियल पेड़, राम्बूटन, कटहल, कमरख, केला, काजू, कालीमिर्च और पपीता जैसी अंतरफसलें भी शामिल हैं। इस एकीकृत खेती प्रणाली में 10,000 मुर्गियों की कुक्कुट इकाई और होल्स्टीन फ्रिज़ियन नस्ल के 19 गाय भी शामिल हैं। श्री रहीम नारियल का रोपण एवं प्रबंधन तथा फार्म के



वैज्ञानिकों द्वारा शिखर पर लाल ताड़ घुन के प्रकोप का निरीक्षण अन्य संघटक फसलों के बारे में भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड के वैज्ञानिकों से नियमित रूप से तकनीकी सलाह लेते रहते हैं।

2019 के मध्य से उनके बाग के फलदायी ताड़ लाल ताड़ घुन के घातक प्रकोप का शिकार बनने लगे। जब इसको ध्यान में लाया गया तो भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों की एक टीम ने बाग का दौरा किया और नियंत्रणोपाय सुझाए। लगभग 35 ताड़ों (64 प्रतिशत) पर लाल ताड़ घुन का प्रकोप शिखर क्षेत्र से हुआ था। कीट प्रकोप की पहचान होने और शिखर पर कीटनाशक डालकर निवारणात्मक उपाय अपनाए जाने तक शिखर गिरकर 29 ताड़ों की मृत्यु हुई और 6 ताड़ प्रकोप से मुक्त हुए। उन ताड़ों को प्रकोप से मुक्त करने के लिए 30 दिनों के अंतराल में प्रति लीटर 1 मि.ली. की दर पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल का प्रयोग शिखर के ज़रिए दो बार किया गया। सारे शिखर गिरे और मृत ताड़ों को जलाकर राख कर दिया गया ताकि बाग में लाल ताड़ घुन के प्रजनन को रोका जा सके। उसके साथ साथ, स्वस्थ ताड़ों को लाल ताड़ घुन के प्रकोप से बचाने के लिए रोकथाम के उपाय भी



शिखर पर लाल ताड़ घुन से प्रकोपित नारियल पौध

अपनाए गए। रोगरोधी उपचार के रूप में पर्ण कक्षों में मासिक अंतराल में यथाक्रम प्रति लीटर 0.5-0.7 मि.ली. की दर पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल डालना, पर्ण कक्षों में 1:1 अनुपात में 500 ग्राम नीम खली और रेत का मिश्रण भरना, पर्ण कक्षों में प्रति ताड़ 250 ग्राम की दर पर 1:40 अनुपात में क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल 0.4 डब्ल्यूजी और रेत का मिश्रण भरना, पर्ण कक्षों में नेफथालीन गोलियाँ रखना आदि शामिल हैं।

शिखर के ज़रिए लाल ताड़ घुन का प्रवेश रोकने में अपनाए गए रोकथाम सुरक्षा उपाय पूरी तरह सफल रहे। वर्ष 2019 के बचे समय में और 2020 में लाल ताड़ घुन के प्रकोप से बाग पूरी तरह मुक्त हो गया। लेकिन वर्ष 2021 में, फिर से 63 ताड़ों पर धड़ क्षेत्र से लाल ताड़ घुन का प्रकोप हुआ (12.1 प्रतिशत)। पर्णकक्षों में व्यवस्थित रूप से रोगरोधी भराव किए जाने के कारण शिखर क्षेत्र लाल ताड़ घुनों के लिए खपतयोग्य नहीं रहा, इसलिए धड़ क्षेत्र कीट के लिए प्रवेश मार्ग बन गया। धड़ क्षेत्र को ढकते हुए पलवार करते थे जिसके कारण नज़दीकी से धड़ क्षेत्र के निरीक्षण में बाधा हुई और कीट प्रकोप की पहचान करना मुश्किल हो गया। तथापि, समय पर प्रकोप



धड़ पर लाल ताड़ घुन के प्रकोप का निरीक्षण

की पहचान और निवारणात्मक उपाय के रूप में तने पर प्रति लीटर 1 मि.ली. की दर पर इमिडाक्लोप्रिड का टीका लगाने से ताड़ों को बचाया जा सका। 87 प्रतिशत याने 55 ताड़ कीट प्रकोप से मुक्त हुए। गंभीर रूप से कीट प्रकोपित 8 ताड़ मर गए। स्वस्थ ताड़ों के धड़ क्षेत्र से लाल ताड़ घुन का प्रवेश रोकने के लिए एक बार रोकथाम उपाय के रूप में प्रति लीटर 5 मि.ली. की दर पर क्लोरपाइरिफोस से थालों को शराबोर किया गया और गर्दनी भाग और तने के मूल भाग को भिगोने का सुझाव दिया गया। पहले चर्चा किए गए अनुसार रोकथाम के रूप में पर्ण कक्ष उपचार को जारी रखा गया, लेकिन उपचार के बीच का अंतराल 30 दिनों के बजाय बढ़ाकर 45 दिन कराया गया। कीट की आबादी कम करने के लिए सारे मृत ताड़ों को जलाया गया। पत्तों को काटते समय विशेष रूप से यह ध्यान रखा गया कि ताड़ पर घाव न लगे, इसलिए तने से 1.2 मीटर लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर पत्तों को काटा

गया ताकि कटा सिरा और शिखर के बीच अधिक दूरी बनी रहे। वर्ष 2021 के दौरान, तीन ताड़ धड़ क्षेत्र के ज़रिए लाल ताड़ घुन के शिकार हुए और तने पर प्रति लीटर 1 मि.ली. की दर पर इमिडाक्लोप्रिड का टीका लगाकर इन्हें कीट मुक्त किया गया। रोकथाम के उपाय के रूप में दो महीनों के अंतराल में विकर्षियों से पर्ण कक्षों को भरा गया और रोकथाम उपाय के रूप में इमिडाक्लोप्रिड एवं क्लोरपाइरिफोस का प्रयोग नहीं किया गया। 2022 में, शिखर से कीट का प्रवेश 0.002 प्रतिशत (1 ताड़) तक और धड़ क्षेत्र से कीट का प्रवेश 0.006 प्रतिशत (3 ताड़) तक कम हुआ और प्रकोपित ताड़ों के ठीक होने की प्रतिशतता 100 प्रतिशत तक बढ़ गयी।



वैज्ञानिक लाल ताड़ घुन के प्रकोप से गिरे ताड़ का निरीक्षण करते हुए

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान से वैज्ञानिकों की एक टीम ने नियमित रूप से नारियल बाग का दौरा किया और लाल ताड़ घुन के खिलाफ एकीकृत कीट प्रबंधन उपायों के समुचित अभिग्रहण का अनुवीक्षण किया। श्री रहीम ऐसे किसान हैं, जो वैज्ञानिकों की अनुशंसाओं के आधार पर एकीकृत कीट प्रबंधन गतिविधियाँ कार्यान्वित करने में अत्यंत तत्पर हैं। श्री रहीम के नारियल बाग में लाल ताड़ घुन के एकीकृत प्रबंधन की सफलता अत्यधिक प्रेरणाप्रद रहा; जो यह दर्शाता है कि नारियल बाग में कीट प्रबंधन में किसानों की सक्रिय सहभागिता के साथ यदि व्यवस्थित और वैज्ञानिक विधि अपनायी जाए तो फसल को नुकसान होने से बचाया जा सकता है। आसपास के नारियल उत्पादक भी श्री रहीम की सफलता से काफी प्रभावित हुए और लाल



लाल ताड़ घुन



पर्ण कक्षों की भराई

ताड़ घुन पर नियंत्रण पाने के लिए अनुशंसित एकीकृत कीट प्रबंधन विधियों की प्रभावोत्पादकता और व्यवहार्यता पर यकीन करने लगे।

प्रतिबंध

श्री रहीम के बाग में एकीकृत कीट प्रबंधन अपनाने में कुछ व्यावहारिक मुश्किलें भी पैदा हुई थीं।

नैदानिक लक्षणों के बारे में जानकारी का अभाव और प्रारंभ में 2019 के दौरान लाल ताड़ घुन के प्रकोप की शीघ्र पहचान करने में हुई असफलता से उपचारात्मक चिकित्सा करने में देरी हुई। यही नहीं, धड़ से होने वाले प्रकोप की तुलना में शिखर का प्रकोप अधिक घातक रहा क्योंकि यह सीधे नारियल के कॉपल भाग और सक्रिय वृद्धि बिंदु को नुकसान पहुँचाता है।

तने के निचले भाग और धड़ क्षेत्र को ढकते हुए पलवार करने से धड़ क्षेत्र से घुन का प्रवेश पहचानना मुश्किल हो गया। कृषीय कार्य के लिए श्रमिकों की अनुपलब्धता किसानों द्वारा सामना की जा रही दूसरी समस्या है। व्यवस्थित अनुवीक्षण और विकर्षियों से क्रमिक रूप से पर्ण कक्षों का भराव, उपचार के रूप में शिखर पर कीटनाशक डालना और तने पर कीटनाशकों से टीका लगाना आदि करने के लिए श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है।

निष्कर्ष

लाल ताड़ घुन नारियल का घातक शत्रु है, इसलिए एक प्रतिशत से कम कीट प्रकोप भी आर्थिक रूप से

नुकसानदेह माना जाता है। व्यवस्थित और नियमित निगरानी कीट प्रकोप की शीघ्र पहचान करने में सहायक होगा। एकबार प्रकोप की पहचान होने पर, प्रति लीटर 1 मि.ली. की दर पर इमिडाक्लोप्रिड घोल से तने पर टीका लगाकर या शिखर पर डाल कर (कीट का प्रवेश कहाँ से हुआ है इसके आधार पर) उपचारात्मक उपाय तुरंत ही अपनाना चाहिए। लाल ताड़ घुन के प्रबंधन के व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर लाल ताड़ घुन के एकीकृत कीट प्रबंधन में संशोधन करने का सुझाव दिया जाता है।

जब कभी लाल ताड़ घुन का प्रकोप ध्यान में आए, रोकथाम के रूप में पर्ण कक्ष के संरक्षण के साथ साथ धड़ क्षेत्र संरक्षण उपाय भी अपनाया जाना चाहिए। यदि नहीं किया जाए तो, धड़ क्षेत्र के ज़रिए लाल ताड़ घुन का प्रकोप निकट भविष्य में ही उत्पन्न होगा। इसके लिए गर्दनी क्षेत्र के चारों ओर नीम खली का छिड़काव करना चाहिए। पलवार इस प्रकार करना चाहिए कि यह गर्दनी क्षेत्र को न ढके ताकि किसान नज़दीकी से इस क्षेत्र की निगरानी कर सके और धड़ क्षेत्र से घुन के प्रवेश का प्रभावी अनुवीक्षण किया जा सके।

बायार के नारियल बागों में लाल ताड़ घुन के प्रभावी प्रबंधन में हासिल अनुभवों के आधार पर कीट प्रकोपित क्षेत्रों में कीट के एकीकृत प्रबंधन के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाने का सुझाव दिया जाता है।

1. सारे मृत ताड़ों और अपशिष्टों को काट कर जला दें जो घुन के लिए प्रजनन स्थान बन सकते हैं।

किसान की प्रतिक्रिया

मेरे बाग में हुई सबसे बड़ी समस्या थी कीट के प्रकोप से विशेषतया लाल ताड़ घुन के प्रकोप से फसल का नुकसान। तथापि, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ के वैज्ञानिकों की एक टीम नियमित रूप से मेरे बाग का दौरा कर रही थी और इस विनाशकारी कीट के एकीकृत प्रबंधन उपायों पर समुचित रूप से मार्गदर्शन दे रही थी। मेरे बाग में कार्यरत श्रमिक कीट प्रकोप की पहचान करने में समर्थ नहीं थे। लेकिन, वैज्ञानिकों द्वारा लगातार दिए गए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से कीट की शीघ्र पहचान और रोग-निर्णय करने का कौशल विकसित करने में वे सक्षम हुए। इसके अलावा, तने पर टीका लगाने और शिखर पर कीटनाशक डालने का निदर्शन बहुत सहायक था और उस से उपचार करने की व्यावहारिक जानकारी भी प्राप्त हुई। अब मेरा बाग लाल ताड़ घुन के प्रकोप से पूरी तरह मुक्त हुआ है। वैज्ञानिकों द्वारा सुझावित अनुसार अभी भी तिमाही अंतराल में



श्री रहीम

रोगनिरोधी संरक्षण उपाय कर रहे हैं। हाल ही में मैंने अपने फार्म में मधुमक्खियों की कॉलोनी भी स्थापित की है। मैं केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ के वैज्ञानिक डा. प्रतिभा पी.एस., डा. तंपान सी., डा. पी. सुब्रमणियन और डा. विनायक हेगड़े की टीम का शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने मेरे नारियल बाग में कीट नियंत्रण उपाय अपनाने में और वैज्ञानिक प्रबंधन करने में भरपूर समर्थन और प्रोत्साहन दिया।

2. स्वस्थ ताड़ों को घाव लगने से बचें। यदि कोई घाव लगा हो तो वाष्पशील पदार्थों को ढकने हेतु कीटनाशक या कीचड़ के घोल का लेप करें।

3. पलवार गर्दनी क्षेत्र से 5-10 सेंटीमीटर की दूरी छोड़कर करें, ताकि गर्दनी क्षेत्र की स्पष्ट रूप से निगरानी कर सके।

4. गैंडा भृंग के प्रकोप और कली सड़न/पत्ता सड़न रोग पर नियंत्रण पाना चाहिए अन्यथा लाल ताड़ घुन के प्रकोप के लिए अनुकूल माहौल उत्पन्न होता है।

5. प्रकोपित क्षेत्रों में क्रमिक रूप से 30 दिनों के अंतराल में निम्नलिखित विकर्षियों से पर्ण कक्षों में रोकथाम के लिए भराव किया जाए।

क) प्रति लीटर 0.5-0.7 मि.ली. की दर पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल शिखर पर डालें।

ख) प्रति ताड़ 500 ग्राम की दर पर 1:1 अनुपात में रेत और नीम खली के मिश्रण से पर्ण कक्षों को भरें।

ग) प्रति ताड़ 12-15 ग्राम की दर पर नेफथलीन गोलियों से पर्ण कक्षों को भरें और रेत से ढक दें।

घ) प्रति ताड़ 250 ग्राम की दर पर 1:40 अनुपात में क्लोरेंट्रानिलिप्रोल (0.4 जी) और रेत के मिश्रण से पर्ण कक्षों को भरें।

कीट का प्रकोप 1 प्रतिशत से कम हो जाने के बाद पर्ण कक्षों में रोकथाम के रूप में भराव का अंतराल 45 - 60 दिनों तक बढ़ाया जा सकता है।

6. धड़ क्षेत्र को रोकथाम के लिए संरक्षण निम्न प्रकार से किया जाए।

क) प्रति लीटर 5 मि.ली. की दर पर धड़ क्षेत्र में क्लोरपाइरिफोस से रोगरोधी छिड़काव करें या शराबोर करें (एक बार)।

ख) धड़ क्षेत्र के चारों ओर चूर्णित नीम खली का छिड़काव करें।

7. उपचारात्मक उपाय के रूप में प्रति लीटर 1 मि.ली. की दर पर इमिडाक्लोप्रिड/या प्रति लीटर 5 मि.ली. की दर पर क्लोरपाइरिफोस शिखर पर डालें/तने पर टीका लगाएं।

8. प्रथम उपचार के 30 दिनों के बाद यदि आवश्यक हो तो उपचारात्मक उपाय दोहराएं। ■

नारियल से सुस्थिर उत्पादन और उच्च आय के लिए कृषि प्रणाली पद्धति पर ध्यान देने की आवश्यकता है: 'केराकेसरी' डोमिनिक

सी. तंपान, पी.सुब्रमणियन और जयशेखर एस.
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़



श्री डोमिनिक अपनी पोलीबैग नर्सरी में

“नारियल की कम कीमत के कारण नारियल उत्पादकों को अब कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस मुश्किल दौर में नारियल उत्पादकों के हितों की रक्षा करने के लिए सरकार द्वारा बाज़ार हस्तक्षेप तथा समान गतिविधियों का प्रभावी कार्यान्वयन किया जाना चाहिए। मैं इस कठिन परिस्थिति को पार करने में कामयाब रहा क्योंकि मेरे नारियल बाग में मिश्रित फसल के रूप में जायफल और सुपारी उगाए गए हैं जिनके लिए आकर्षक बाज़ार मूल्य प्राप्त हो रहा है। किसानों को एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करने के बजाय अंतर फसलों और उद्यमों को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने वाली कृषि प्रणाली पद्धति पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता

है”, केरल में कोषिकोट जिले के आनक्वाम्पोयिल, तिरुवम्बाडी ग्राम पंचायत के प्रसिद्ध पुरस्कार विजेता नारियल किसान श्री डोमिनिक मण्णुकुशुम्बिल ने कहा।

आम तौर पर, भाव में जब अचानक गिरावट होती है या भाव कम स्तर पर बना रहता है तो किसान बिना किसी फसल प्रबंधन पद्धति अपनाए नारियल ताड़ों की उपेक्षा करने लगते हैं, जिसके फलस्वरूप उत्पादकता कम हो जाती है, अंततः खेती से आय कम हो जाती है। नारियल खेती से सुस्थिर उत्पादकता और उच्चतर आय सुनिश्चित करने के लिए नारियल आधारित बहुफसलीय एवं एकीकृत खेती पद्धतियों को अपनाना बहुत ही संगत होता है, खासकर तब, जब किसानों को कम कीमत या



श्री डोमिनिक अपने मिश्रित खेती बाग में

बाज़ार में उतार-चढ़ाव के कारण मुश्किलों का सामना करना पड़ जाता है।

वास्तव में श्री डोमिनिक ठीक वही दोहरा रहे थे जो उन्होंने नौ साल पहले 2014 में इंडियन कोकनट जर्नल के लिए साक्षात्कार के दौरान कहा था। उनके अनुसार नारियल खेती को सुस्थिर और लाभकारी बनाने के लिए मूल सिद्धांत यह है कि 'खेत में भूमि का कोई भी टुकड़ा अनुपयोगित न छोड़ें और मूल प्राकृतिक संसाधनों जैसे मिट्टी और पानी के संरक्षण हेतु उपाय अपनाएं'।

श्री डोमिनिक सदैव नारियल पर अटूट विश्वास रखते हैं और वे मिट्टी और पानी के प्रभावी उपयोग तथा संरक्षण के सिद्धांत के अनुरूप अपने फार्म में सारी फसल प्रबंधन प्रणालियाँ तब भी अपनाते हैं यहाँ तक कि बाज़ार में नारियल का भाव उतना आकर्षक नहीं रहता है। कोषिकोट जिले के आनक्काम्पोयिल के पहाड़ी इलाके में स्थित उनके नौ एकड़ के नारियल फार्म में सुस्थिर कृषि के मूल सिद्धांतों का पालन करने का प्रभाव देखा जा सकता है।

श्री डोमिनिक ढालू पहाड़ी इलाके में नौ एकड़ नारियल बाग का अनुरक्षण करते हैं और बाग में पश्चिम तटीय लंबी किस्म के 340 नारियल पेड़ हैं। कुल बाग में से पांच एकड़ सिंचाई आधारित और चार एकड़ वर्षा आधारित है। इसके अलावा उनके फार्म में 'केरा संकरा' टी X डी संकर किस्म के लगभग 40 नारियल पेड़ भी उगाए गए



श्री डोमिनिक के बाग में अच्छी तरह प्रबंधित नारियल पौध

हैं। नारियल बाग के सिंचित क्षेत्र में मुख्य मिश्रित फसल के रूप में 300 जायफल के पेड़ हैं। चार ताड़ों के बीच में जायफल लगाया गया है। पहले वे अपने नारियल बाग में दूसरी मिश्रित फसल के रूप में कोको की खेती भी करते थे, जिसे मुख्य रूप से गिलहरी और कस्तूरी बिलाव (सीविट) के आक्रमण से फसल को नुकसान होने के कारण हटा दिया था। वर्ष 2017 के दौरान उन्होंने समीपस्थ इलाके में रबड़ के पेड़ों से युक्त दो एकड़ कृषि भूमि खरीदी। भूमि खरीदने के बाद उन्होंने रबड़ के पेड़ों के शीर्ष भाग को हटा दिया और छंटाई करके इन रबड़ पेड़ों को टेक देने के लिए इस्तेमाल करते हुए पन्नियूर -1 किस्म की काली मिर्च की बेल उन पर चढ़ा दी। काली मिर्च की बेल अच्छी तरह से बढ़ने लगी। उन्होंने अपने बाग में पश्चिम तटीय लंबा की स्थानीय किस्म 'कुट्टियाटी' के 105 नारियल ताड़ और मोहितनगर किस्म के लगभग 200 सुपारी ताड़ भी लगाए हैं।

उन्होंने नारियल पौधों के रोपण के लिए एक बढ़िया नवाचार पद्धति अपनायी है। यह नवाचार पद्धति रोपण के लिए बड़े बड़े गड्ढे खोदने से संबंधित है। नारियल पौधों के रोपण के लिए एक मीटर गहरे और 2.5 मीटर व्यास के गड्ढे खोदे जाते हैं। उनका कहना है कि अगर रोपण के लिए बड़े आकार के गड्ढे खोदे जाते हैं तो नारियल ताड़ के लिए थाला खोलने की प्रक्रिया की 70 वर्ष तक आवश्यकता नहीं हो जाती है। बड़े आकार के गड्ढे का



श्री डोमिनिक के बाग में नारियल और जायफल की अंतर खेती एक और फायदा यह है कि जंगली सुअर के हमले से भी बचाया जा सकता है जो अक्सर नारियल उत्पादकों द्वारा अनुभव की जाने वाली एक समस्या है।

नारियल बाग में पांच लौंग के पेड़ भी हैं। लेकिन श्री डोमिनिक नारियल बाग में मिश्रित फसल के रूप में लौंग की खेती से खुश नहीं है क्योंकि जब लौंग बड़ा हो जाता है तो उसकी तुड़ाई करने में कठिनाई होती है। इन बहुवर्षी फसलों के अलावा अंतर फसल के रूप में केला, जिमीकंद, अरबी, लोबिया, करेला, चिचिंडा, कसावा, हल्दी और अदरक की भी छोटे पैमाने पर खेती की जाती है। नारियल बाग में मिश्रित फसल के रूप में कुल मिलाकर लगभग 400 सुपारी के पेड़ हैं। उनकी नारियल आधारित खेती प्रणाली में पशुपालन भी है और उसमें एक दुधारू गाय, बत्तख और कुछ मुर्गियाँ भी शामिल हैं जिन्हें घर के पिछवाड़े में पाले जाते हैं।

फार्म के बीच से एक बारहमासी झरना बहती है जो उनके फार्म में, जहाँ अंतर/मिश्रित फसलें उगाई जाती हैं, सिंचाई के लिए सुनिश्चित पानी उपलब्ध कराती है। पहले स्प्रिंकलर प्रणाली से सिंचाई की जाती थी। लेकिन अब स्प्रिंकलर प्रणाली को हटा दिया गया है और होज़ पाइप का प्रयोग करके थाला सिंचाई की जाती है। डोमिनिक ने कहा “जब सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर प्रणाली अपनायी जाती है



श्री डोमिनिक अपने बाग में जायफल पेड़ के पास

तो बहुत सारा पानी बर्बाद हो जाता है और इसलिए इसे हटा दिया है”। वे जानते हैं कि नारियल के लिए आदर्श सिंचाई विधि ड्रिप सिंचाई है क्योंकि यह पानी की बचत कराती है और उच्च सिंचाई क्षमता रखती है। वे अपने नारियल बाग में ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

मृदा और जल संरक्षण के लिए पूरे फार्म के ढालू इलाके में पत्थर से बने बांध बनाए गए हैं और जब कभी ज़रूरत पड़ती है इनकी मरम्मत की जाती है या इन्हें मज़बूत बनाया जाता है। नारियल और मिश्रित फसलों के लिए अत्यधिक विस्तृत थाले का अनुरक्षण श्री डोमिनिक द्वारा अपनाई गई कृषि तकनीकों की एक अनूठी विशेषता है। उनका कहना है कि प्रभावी नमी संरक्षण के लिए विस्तृत थाला बना देना महत्वपूर्ण है। थालों में पलवार करने के लिए नारियल के पत्ते, छिलके और फार्म से उपलब्ध अन्य जैवभार का उपयोग किया जाता है।

वे नारियल और अंतर फसलों को पोषकतत्वों के संतुलित प्रयोग के लिए अत्यधिक महत्व देते हैं। मई महीने के दौरान सतही जड़ों के फैलाव से बचने के लिए थालों में पलवार लगायी गई सामग्रियों को थालों के किनारे की तरफ हटा दिया जाता है। उसके बाद थालों में प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. की दर पर चूना डाल कर मिट्टी में अच्छी तरह मिलाया

जाता है। दो सप्ताह के बाद प्रति ताड़ 40 कि.ग्रा. गोबर की दर पर जैविक खाद डाली जाएगी और ढीली मिट्टी एवं थालों के किनारों की तरफ हटा दी गयी पलवार सामग्री से ढक दिया जाएगा। एकांतर वर्षों में गोबर के स्थान पर प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर अस्थि चूर्ण या प्रति ताड़ 2 कि.ग्रा. की दर पर मूंगफली की खली डाली जाएगी। नारियल ताड़ों को चूने का प्रयोग और जैविक खाद डालने का काम जून से पहले पूरा कर लिया जाएगा। सितंबर के दौरान नारियल ताड़ों को रासायनिक उर्वरक डाले जाते हैं। प्रति ताड़ लगभग 1 कि.ग्रा. म्यूरिएट ऑफ पोटैश, 500 ग्राम की दर पर प्रत्येक यूरिया एवं राजफोस डाला जाता है। जब भी नारियल के पत्तों पर पीलापन दिखता है प्रति ताड़ 500 ग्राम की दर पर मैगनीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा प्रति ताड़ 100 ग्राम बोरेक्स भी डाला जाता है।



श्री डोमिनिक गोशाला में गाय को चारा देते हुए

हर वर्ष प्रति जायफल पेड़ के लिए लगभग 1.5 कि.ग्रा. म्यूरिएट ऑफ पोटैश और 750 ग्रा. की दर पर प्रत्येक यूरिया तथा राजफोस डाला जाता है। इसके अलावा जैविक खाद के रूप में प्रति पेड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर अस्थिचूर्ण और प्रति पेड़ 30-40 कि.ग्रा. की दर पर गोबर का प्रयोग किया जाता है। काली मिर्च की बेलों के लिए प्रति वर्ष प्रति बेल 10 कि.ग्रा. गोबर और 1 कि.ग्रा. अस्थिचूर्ण की दर पर मात्र जैविक खाद डाली जाती है। सुपारी ताड़ों के लिए 10 कि.ग्रा. गोबर और 1 कि.ग्रा. अस्थिचूर्ण की दर पर जैविक खाद प्रदान की जाती है। इसके अलावा, प्रति वर्ष हरेक सुपारी ताड़ को 250 ग्रा. की दर पर प्रत्येक यूरिया, राजफोस तथा म्यूरिएट ऑफ पोटैश भी दिया जाता है।

श्री डोमिनिक के फार्म में फफूंद प्रकोप से फल सड़न और फल गिराव तथा शाखाओं के अग्रभाग से नीचे की ओर सूख जाने को छोड़कर जायफल में कीट और रोग का प्रकोप कम देखा गया है। इन समस्याओं के समाधान के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का प्रयोग प्रभावी पाया गया है। लेकिन सुपारी के पीला पत्ता रोग का प्रबंधन मुश्किल रहा, हालाँकि वे संतुलित उर्वरक प्रयोग से उत्पादकता बनाए रखने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं। श्री डोमिनिक के अनुसार जायफल नारियल बाग में लगाने के लिए सबसे उपयुक्त मिश्रित फसल है। क्योंकि यह लंबे समय तक आर्थिक रूप से लाभदायक होता है, इस पर कीटों तथा रोगों का प्रकोप कम होता है, खेती में लगने वाली लागत कम है और हर वर्ष उपज तथा आय में वृद्धि होती रहती है। जायफल पेड़ के थालों की मिट्टी खोदी या हिलायी नहीं जाती है। खाद और उर्वरकों को थाले में डाला जाता है और मिट्टी में मिलाया जाता है। यदि थाले की सतह पर जड़ों का फैलाव देखा जाता है तो बाहर से मिट्टी लाकर थाले में डाली जाती है।

हालाँकि नारियल बाग में मिश्रित फसल के रूप में आमतौर पर सुपारी की सिफारिश नहीं की जाती है, परंतु श्री डोमिनिक के अनुसार यदि नारियल पेड़ों के बीच पर्याप्त दूरी, यानी आठ मीटर या उससे अधिक, छोड़ी जाए तो यह एक लाभदायक मिश्रित फसल होगी। यदि नारियल पेड़ों के बीच कम दूरी छोड़ी गयी है तो नारियल और सुपारी दोनों की उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, जैसा कि कई किसानों ने अनुभव किया है। नारियल पेड़ों को आठ मीटर से अधिक दूरी छोड़कर लगाए जाने के कारण वे नारियल और सुपारी दोनों से अच्छी उपज प्राप्त कर सकते हैं। ढालू इलाके के बारानी नारियल बाग में जहाँ सुपारी की मिश्रित खेती की जाती है, उचित मिट्टी एवं नमी संरक्षण पद्धतियाँ अपनायी जाती हैं जिनमें पत्थर से बने कंटूर बांध, पलवार करना आदि शामिल हैं।

फार्म के जानवरों के गोबर के एक हिस्से का प्रयोग नारियल और संघटक फसलों के लिए किया जाता है। गोबर की कुछ मात्रा का उपयोग बयोगैस बनाने के लिए किया जाता है। बयोगैस स्लरी को खाद के रूप में फसल



विविध पुरस्कारों से सम्मानित श्री डोमिनिक

को वापस दिया जाता है। जानवरों को फार्म में उपलब्ध हरी घास और घर का बना पशु चारा खिलाया जाता है जिससे जानवरों के अनुरक्षण की लागत कम हुई।

श्री डोमिनिक प्रति वर्ष प्रति ताड़ औसतन 175 नारियलों की तुड़ाई कर पा रहे हैं। जायफल से प्राप्त औसत उपज प्रति पेड़ 4 कि.ग्रा. फल और 500 ग्रा. जावित्रि है। मिश्रित फसल के रूप में सुपरी से उन्हें प्रति वर्ष प्रति ताड़ औसतन दो कि.ग्रा. चाली (सफेद सूखी सुपारी) की उपज मिल रही है। पिछले मौसम के दौरान उन्हें काली मिर्च की 350 बेलों से 500 कि.ग्रा. काली मिर्च प्राप्त हुई थी। प्रति गाय से औसतन 15 लीटर दूध प्राप्त हो रहा है। फसलों की खेती के अलावा श्री डोमिनिक नारियल, सुपारी और जायफल की रोपण सामग्री के उत्पादन एवं बिक्री के लिए एक कृषि नर्सरी भी चला रहे हैं। नर्सरी को कृषि विभाग, केरल सरकार का अनुमोदन प्राप्त है।

खेती में उनकी सफलता का एक महत्वपूर्ण कारण खेती की सारी गतिविधियों में उनके और उनके परिवार सदस्यों की सक्रिय सहभागिता है। उनके फार्म में तीन स्थायी मज़दूर हैं। श्री डोमिनिक मात्र प्रबंधक के रूप में कार्य नहीं कर रहे हैं और न सिर्फ फार्म में मज़दूरों को निदेश दे रहे हैं बल्कि शारीरिक रूप से उनके साथ सारे काम में जुटे रहते हैं, जिसके बारे में उनका कहना है कि मज़दूरों की ओर से सच्ची प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने में यह सहायक होता है। उनकी माँ श्रीमती एलियाम्मा की उम्र

83 वर्ष है और वे भी हर संभव तरीके से खेती से जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। श्री डोमिनिक की पत्नी श्रीमती एल्सी भी खेती में पूरी तरह समर्थन दे रही हैं। उनका बड़ा बेटा, श्री जुबिन भी खेती में लगा हुआ है और उनके छह एकड़ का अपना खेत है। छोटा बेटा श्री जिफिन अस्पताल प्रबंधन में प्रशिक्षित है जो यू के में कार्यरत है।

श्री डोमिनिक अब 64 वर्ष के हैं और उनको नारियल की खेती में उनके आश्चर्यजनक उपलब्धियों तथा नवाचार पद्धतियों के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें ग्राम पंचायत, ब्लॉक एवं जिला स्तर पर सर्वोत्तम किसान के रूप में चुना गया था। वर्ष 2011 में नारियल के वैज्ञानिक प्रबंधन में उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें कृषि विभाग, केरल द्वारा स्थापित प्रतिष्ठित 'केराकेसरी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2015 में सर्वोत्तम एकीकृत फार्म के लिए उन्हें कृषि विभाग द्वारा स्थापित राज्य स्तरीय 'कर्षकोत्तमा' पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 2016 में नारियल विकास बोर्ड द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित सर्वोत्तम नारियल किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उसी वर्ष में जब भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने शताब्दी समारोह का आयोजन किया था, देश के विभिन्न राज्यों से चुने गए 100 नवाचारी और सफल नारियल किसानों में से एक श्री डोमिनिक भी थे जिन्हें समारोह में सम्मानित किया गया। श्री डोमिनिक सीपीसीआरआई, आईआईएसआर जैसे अनुसंधान संस्थानों और कृषि भवन, आत्मा आदि विस्तार एजेंसियों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखते हैं। उनकी नवाचार नारियल खेती पद्धतियों पर बनाया गया वीडियो दस्तावेजीकरण सोशियल मीडिया में व्यापक रूप से प्रसारित किया जाता है। वे एक बहुत ही लोकप्रिय ज्ञानसाधन व्यक्ति हैं और अन्य किसानों के साथ अपने अनुभव का साझा करने में हमेशा खुश रहते हैं। श्री डोमिनिक का नारियल फार्म किसानों के लिए प्रक्षेत्र विद्यालय के रूप में कार्य करता है और अक्सर किसान, विस्तार कार्मिक, विद्यार्थी तथा अन्य हितधारक यहाँ आते रहते हैं। ■

(संपर्क करें: श्री डोमिनिक एम.एम. मोबाइल: 8281076029)

नारियल बागों में मासिक कार्य

अप्रैल

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

चयनित मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई करना जारी रखें। बीजफलों की तुड़ाई सावधानी से की जानी चाहिए और जहाँ भी ज़मीन ठोस हो, फलों की तुड़ाई करके रस्सी के सहारे नीचे लाना चाहिए। फल के अंदर का पानी सूख न जाए, इसके लिए समुचित रूप से भंडारण करना चाहिए।



बीजफलों का भंडारण

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी के पौधों के लिए सिंचाई जारी रखनी चाहिए। जहाँ भी आवश्यक हो खरपतवार निकाल देना चाहिए। यदि नर्सरी में दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो क्लोरपाइरिफोस (2 मि.ली. क्लोरपाइरिफोस एक लीटर पानी में घोलकर) से शराबोर करना चाहिए। कई जगहों पर नारियल नर्सरियों में स्पाइरलिंग सफेदमक्खी का प्रकोप पाया जाता है। स्पाइरलिंग सफेदमक्खी के प्रकोप से बचने के लिए नारियल पौधों के पत्तों के निचले भाग पर पानी का छिड़काव करना चाहिए।

उर्वरक प्रयोग

यदि सिंचित नारियल बागों में मार्च में नारियल पेड़ों के लिए उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया हो तो रसायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई हिस्से का प्रयोग करना चाहिए।

सिंचाई

नारियल बागों में सिंचाई जारी रखें। यदि थाला सिंचाई अपनायी जा रही हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर

की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई करें। नारियल की सिंचाई के लिए सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है खासतौर पर पानी के अभाव वाली परिस्थितियों में। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग नोकों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में चार होनी चाहिए।

नमी संरक्षण

नारियल के खेतीगत अधिकांश इलाकों में गरम शुष्क मौसम जारी है और इसलिए नारियल की खेती में सिंचाई हेतु पानी का अभाव बहुत बड़ी समस्या हो सकती है। अतः नारियल किसानों को सिंचाई के लिए पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। पानी का बचाव करने के लिए ड्रिप सिंचाई विधि अपनाया उचित होगा। पेड़ के थालों में दो मीटर के घेरे में मोटी परत में पलवार लगाने की आवश्यकता है। पानी के अभाव वाले क्षेत्रों में जहाँ भी व्यवहार्य हो, नारियल पेड़ों की जान बचाने/संरक्षण करने हेतु सिंचाई की जानी होगी। इसप्रकार पेड़ की जान बचाने/संरक्षण करने हेतु सिंचाई करते वक्त थाले से पलवार लगाई गई सामग्रियाँ हटा देनी चाहिए और सिंचाई करने के तुरंत बाद पलवार सामग्रियों से थालों को फिर से ढकना चाहिए।

छाया प्रदान करना

नवरोपित नारियल पौधों को यदि पहले छाया प्रदान नहीं की गई हो तो अब छाया प्रदान करें।



छाया प्रदान करना

कीटों और रोगों का प्रबंधन

गरम शुष्क मौसम इस महीने भी जारी रहने के कारण कीटों की आबादी बढ़ती जा रही है, विशेषतया मौसम संवेदनशील कीट जैसे कि कृष्ण शीर्ष इल्ली, रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी और नेस्टिंग सफेद मक्खी आदि। नमी की कमी, आपेक्षिक आर्द्रता का घटाव और तापमान में वृद्धि उपर्युक्त कीटों के प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। टिकाऊ उत्पादन देने और कीट प्रकोप को झेलने के लिए नारियल पेड़ को नमी और पोषण की आवश्यकता लगातार होती है। एक बार कीटों की आबादी बढ़ने के साथ साथ आर्द्रता की कमी की परिस्थिति उत्पन्न हो जाए तो यह ताड़ का स्वास्थ्य बिगड़ने का कारण बन जाता है जिससे पैदावार में कमी होने लगती है। आर्द्रता में कमी और तापमान में वृद्धि की परिस्थिति में ताड़ का जीवित रहना अत्यंत मुश्किल हो जाता है। पेड़ पर फल लगना कम हो जाता है और ताड़ का स्वास्थ्य मात्र अतिजीवन तंत्र पर केन्द्रित हो जाता है न कि पैदावार बढ़ाने में। अतः मृदा और जल प्रबंधन के अंतर्गत बनायी जाने वाली रणनीतियाँ ताड़ के स्वास्थ्य के सामान्य संरक्षण के लिए अत्यंत निर्णायक होता है। अतः ताड़ का स्वास्थ्य प्रबंधन कृष्णशीर्ष इल्ली और रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी के जैवनिंत्रण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कृष्णशीर्ष इल्ली (ओपिसिना एरेनोसेला)

नारियल की कृष्णशीर्ष इल्ली, ओपिसिना एरेनोसेला, पूरे देश में नारियल के खेतीगत लगभग सभी इलाकों में पाया जाने वाला प्रमुख कीट है विशेषतया जलाशय के निकट स्थित क्षेत्रों में। कीट प्रकोपित पत्ते सूख जाते हैं और निचले पत्तों की ऊपरी सतह पर धूसर रंग के धब्बे बनने लगते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में शिखर के मध्य से भीतर की ओर के पत्ते पूरी तरह सूख जाते हैं जिससे पेड़ का शिखर जला हुआ सा दीखता है। कीट प्रकोप के प्रमुख लक्षण है कृष्णशीर्ष इल्ली की मौजूदगी, पत्तियों पर जाल सा बनना और सूखा मल दीखना आदि। प्रकोपित नए क्षेत्रों में यदि मित्र कीट नहीं मौजूद हों तो इसका प्रकोप तेज़ी से बढ़ता है और तेज़ गति से चारों तरफ फैल भी जाता है। कीट प्रकोप के परिणामस्वरूप इसका प्रकाशसंश्लेषण क्षेत्र

कम हो जाता है, पुष्पक्रमों के उत्पादन में कमी होती है, अपक्व फलों का गिराव बढ़ जाता है और पेड़ की वृद्धि मंद हो जाती है। नारियल की पत्तियाँ अधिक मात्रा में इल्लियों का आहार बन जाने से पैदावार में 45.4 प्रतिशत का नुकसान होने के साथ साथ पत्ते गूँथने लायक या अन्य प्रयोजनों के लिए उपयुक्त नहीं हो जाती हैं। किसानों को घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है और मित्र कीटों के ज़रिए सफलतापूर्वक तेज़ी से इसका जैविक नियंत्रण किया जा सकता है जो नीचे प्रस्तुत हैं।



कृष्णशीर्ष इल्ली

प्रबंधन

- रोगप्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में कीट की मौजूदगी का पता लगाने के लिए ताड़ के पत्तों का नियमित रूप से अनुवीक्षण करते रहना चाहिए।
- 2-3 पुराने और सूखे पत्तों को काट दें जिन पर विविध अवस्था वाले कीट बसते हैं और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। इल्लियों/प्यूपों की आबादी कम करने के लिए उन पत्तों को जला देना चाहिए।
- कीट प्रकोपित क्षेत्रों से कीट मुक्त क्षेत्रों में नारियल पत्तों को नहीं ले जाना चाहिए और इसप्रकार क्षेत्र विशेष में संगरोध सशक्त बनाना चाहिए।
- यदि कीट, विकास की तीसरी अवस्था वाले या इससे अधिक आयु के लार्वे के रूप में हो तो लार्वा परजीवी गोनियोज़स निफेंटिडिस(प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर) एवं ब्रेकोन ब्रेविकोर्निस(प्रति ताड़ 30 परजीवी) को अधिक संख्या में बाग में छोड़ देनी चाहिए। पूर्वप्युपा परजीवी (एलैसमस निफेंटिडिस) और प्युपा परजीवी (ब्रेकिमोरिया नोसटोय) को हर 100 पूर्व प्यूपे और प्यूपे के लिए क्रमशः 49 प्रतिशत और 32 प्रतिशत की दर पर छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का प्रबंधन मुम्किन हुआ है।
- परजीवियों को छुड़ाने से पहले इन्हें पर्याप्त मात्रा में शहद देना चाहिए और पोषक गंधों (गैलरी के वाष्पशील पदार्थ) सुगम्य बनाना चाहिए ताकि पोषक कीटों की खोज करने की क्षमता बढ़ जाएं।
- ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने के लिए पर्याप्त सिंचाई और अनुशांसित मात्रा में पौष्टिकतत्वों का प्रयोग सुनिश्चित करें।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस)

इस अवधि के दौरान आक्रामक रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस) का प्रकोप नए क्षेत्रों में तथा पहले से प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में दोबारा पाया गया। इस कीट का प्रकोप होने पर ताड़ की पत्तियों की निचली सतह पर सफेद मक्खी की कालोनी की उपस्थिति और पत्तियों की ऊपरी सतह पर कज्जली फफूंद का जमाव पाया जा सकता है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्ते शीघ्र जीर्ण हो जाते हैं और वयस्क पत्तियाँ जल्दी सूख जाती हैं। सफेद मक्खी का प्रकोप पत्तियों, डंठलों और फलों पर भी होता है और यह रिपोर्ट की गई है कि केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, हेलिकोनिया प्रजाति आदि इसके परपोषी पादप हैं।

प्रबंधन

- छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड से पानी का छिड़काव करने से सफेद मक्खी को पत्तियों से निकाला जा सकता है और कीट को आहार मिलना एवं इसकी प्रजनन क्षमता कम की जा सकती है।
- छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए बेहतर पोषण और पर्याप्त सिंचाई सुनिश्चित करें।
- कीटनाशी का प्रयोग नहीं करना चाहिए जो कीट के दोबारा प्रकोप का कारण बन सकता है और कुदरती एफ्लिनिड परजीवी एनकार्शिया गुआडेलूपे को पूरी तरह मार सकता है। परजीवी की वृद्धि के लिए कीटनाशी का प्रयोग थोड़े समय के लिए रोकने की सलाह दी जाती है।
- पीले चिपचिपे फंदे की स्थापना और एनकार्शिया गुआडेलूपे का प्रयोग करते हुए संरक्षी जैव नियंत्रण करने से कीटों की आबादी 70 प्रतिशत तक कम की जा सकती है और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।
- काला फफूंद भक्षी भृंग लियोक्रिनस नीलगिरियानस के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से पत्तियों पर जमे सारे काले फफूंदों को यह खा जाता है और उन्हें इस प्रकार साफ करता है कि ताड़ों की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता सुधर जाती है।
- नारियल खेती प्रणाली पर नेस्टिंग सफेद मक्खी सहित दूसरी सफेद मक्खियों की उपस्थिति की छानबीन बारीकी से करनी चाहिए।



रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

काला फफूंद भक्षी भृंग

नेस्टिंग सफेद मक्खी (पैरालैरोड्स बॉडारी और पैरालैरोड्स मिनी)

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के अलावा नारियल की पत्तियों पर दो और नेस्टिंग सफेद मक्खी (पैरालैरोड्स बॉडारी और पैरालैरोड्स मिनी) भी पायी गयी हैं। नेस्टिंग सफेद मक्खी का आकार (1.1 मि.मी.) रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (2.5 मि.मी.) के आकार से छोटा होता है। इसके निम्फ सपाट आकृति के होते हैं जिसकी पीठ में से फाइबर ग्लास समान तंतु निकला हुआ होता है जबकि रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का निम्फ उत्तल आकार का होता है। वयस्क नेस्टिंग सफेद मक्खी पंछियों के घोंसले के समान ब्रूडिंग चेंबर बनाता है और उसमें रहता है। पी.बॉडारी के पंखों पर “X” आकार का टेढ़ा काला निशान होता है और दंडाकार के नर जननेंद्रिय पर दो छोटे उभार होते हैं जबकि पी.मिनी के पंखों पर काला निशान नहीं होता है और इसका जननेंद्रिय कुक्कुट के सिर के समान होता है।

प्रबंधन

- छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड से पानी छिड़कने से नेस्टिंग सफेद मक्खी को हटाया जा सकता है और इसके आहार लेने की क्षमता और प्रजनन क्षमता कम की जा सकती है।
- छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए अच्छा पोषण और पर्याप्त मात्रा में पानी मिलना सुनिश्चित करना चाहिए।



नेस्टिंग सफेद मक्खी

• साइबोसेफलस प्रजाति के प्रभावी निटिडुलिड परभक्षी ताड़ प्रणाली में पाया गया था और जैविक नियंत्रण को सुरक्षित रखने के लिए कीटनाशी प्रयोग बंद करने की सिफारिश की जाती है।

रोग

नारियल की पर्ण चित्ती (लेसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे)

इसके रोगाणु से पत्तों और फलों का नुकसान होता है। प्रकोपित पत्तियाँ अग्रभाग से सूखने लगती हैं और यह जला हुआ सा प्रकट होता है। तीसरे से चौथे छल्लों के पत्तों पर इसका प्रकोप होता है। पर्ण चित्ती रोग के कारण निचले पत्तों पर उल्टे 'V' आकार में सूखा-हुआ सा दीखता है और इस रोग के प्रकोप के लक्षण बिल्कुल वैसा ही हैं जैसा कि सूखा और अन्य दबावों से पेड़ पर प्रकट होते हैं। पत्तियों पर व्यापक तौर पर ऊतकक्षय होता है जो स्पष्ट किनारे सहित और ऊतकक्षयी एवं स्वस्थ ऊतकों के बीच संक्रमण क्षेत्र के बगैर दिखायी पड़ता है। रोगाणु पर्णशिरा के अंदर अपनी कॉलोनी बना सकता है, जिससे आंतरिक परिगलन (ऊतकक्षय) होता है जो तने की तरफ बढ़ जाता है। परिगलित ऊतकों पर दरार पड़ने लगते हैं जिसके कारण पर्णशिरा के निचले भाग से और डंठल के मूल भाग से गोंद निकलता है। नारियल में अपक्व फलों के परिदलपुंज भाग पर छोटे काले धब्बे प्रकट होते हैं।

जब लगभग पके/परिपक्व फलों पर रोगप्रकोप होता है तो फल के अंदर मध्य फल भित्ति तक इसका प्रकोप फैल जाता है जिसका कोई भी लक्षण बाहर प्रकट नहीं होता है। प्रकोपित फल शोषित, सिकुड़ा हुआ और कुरूपित होता है और अपक्व स्थिति में ही गिर जाता है जिससे पैदावार में 10 से 25 प्रतिशत तक नुकसान होता है।

प्रबंधन

- ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मिट्टी की जाँच आधारित पोषण प्रदान करने से ताड़ का स्वास्थ्य सुधर जाता है।
- पर्याप्त मात्रा में सिंचाई और मिट्टी एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- साल में तीन बार 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल (प्रति ताड़ 100 मि.ली. दवा) जड़ों द्वारा देना।

नारियल प्रणाली में कीटों और रोगों की गतिशीलता और जलवायु परिवर्तन का प्रतिमान उनकी आबादी बढ़ाने में अत्यंत निर्णायक होता है। ताड़ों को सुरक्षित रखने के लिए समय पर रोगरोधी उपाय अपनाना और आवश्यकता के अनुसार पोषण देकर ताड़ का स्वास्थ्य सुधारना कीटों और रोगों के प्रकोप से होने वाली समस्याओं को झेलने के लिए अत्यंत अनिवार्य होता है।

मई

गर्मी में बाग की जुताई

गर्मी की फुहारें मिलने के अनुसार नारियल बाग में पेड़ों के बीच की जगह की जुताई करनी चाहिए।

हरी खाद बीजों की बुआई

जहाँ कहीं पर्याप्त मात्रा में मानसून पूर्व बारिश प्राप्त होती है मई महीने के आखिर में हरी खाद बीजों की बुआई की जा सकती है। सनई (क्रोटलेरिया जंसिया) या ढेंचा (सेसबनिया एक्विलेते) या लोबिया (विग्ना अनगुईकुलेटा) या जंगली नील (तेफ्रोसिया परपूरिया) जैसी हरी खाद फसलों की बुआई की जा सकती है। एकल फसल के रूप में पाले जाने वाले नारियल बागों में पेड़ों के बीच की जगह में निम्नलिखित दर पर हरी खाद बीजों की बुआई अनुशंसित है।

सनई	-	20 कि.ग्रा./हे.
ढेंचा	-	30 कि.ग्रा./हे.
लोबिया	-	25 कि.ग्रा./हे.
जंगली नील	-	15 कि.ग्रा./हे.

यदि अंतर फसलों की खेती की जा रही हो तो, हरी खाद फसलों के बीज नारियल थालों में 1.8 मीटर के घेरे में बोए जा सकते हैं। लोबिया और ढेंचा के लिए बीज दर प्रति थाला 100 ग्राम है जबकि अन्य हरी खाद फसलों के लिए यह प्रति थाला 75 ग्राम बीज है।

नर्सरी प्रबंधन

जब तक बारिश से पर्याप्त मात्रा में नमी प्राप्त नहीं हो जाती तब तक नर्सरी में पौधों के लिए सिंचाई जारी रखें। उसी प्रकार यदि बारिश प्राप्त नहीं होती हो तो

स्पाइरलिंग सफेदमक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए पौधों के पत्तों की निचली सतह पर पानी का छिड़काव करें। जहाँ कहीं ज़रूरत पड़े खरपतवार निकाल देना चाहिए। नर्सरी क्यारियाँ बनाने के लिए ज़मीन की तैयारी की जानी होगी।

रोपण के लिए गड्ढे तैयार करना

जहाँ कहीं नारियल पौधों का नवरोपण या खाली जगह भरने का प्रस्ताव है, रोपण के लिए 1 मी. x 1 मी. x 1 मी. आकार के गड्ढे खोदें। मखरली मिट्टी में मिट्टी की संरचना खेती के लिए अनुकूल बनाने हेतु प्रति गड्ढा 2 कि.ग्रा. की दर पर गड्ढे में नमक का प्रयोग करना चाहिए। ऐसे क्षेत्रों में गड्ढे का आकार 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. होना चाहिए। नमी बरकरार रखने के लिए गड्ढे में 50-60 सें.मी. तक मिट्टी भरने से पहले सबसे निचले भाग पर नारियल छिलकों की दो परतें छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके रखनी चाहिए।



उर्वरक प्रयोग

500 ग्राम नत्रजन, 320 ग्राम फोस्फरस और 1200 ग्राम पोटेशियम की सिफारिश की जाती है। पौष्टिकतत्वों के एक तिहाई हिस्से का प्रयोग करने के लिए 0.36 कि.ग्रा. यूरिया, 0.5 कि.ग्रा. रोक फोस्फेट (अम्लीय मिट्टी में) या 0.7 कि.ग्रा.सूपर फोस्फेट (अन्य प्रकार की मिट्टियों में) और 0.7 कि.ग्रा. म्यूरिएट ऑफ पोटेश का प्रयोग करना अनिवार्य होता है। गर्मी की फुहारों की प्राप्ति पर नारियल पेड़ के थाले में 1.8 मीटर के घेरे में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक तिहाई हिस्से का प्रयोग करना चाहिए और अच्छी तरह मिट्टी में मिला देनी चाहिए। यह उचित होता है कि तीन साल में एक बार नारियल बाग की मिट्टी की जाँच सावधिक रूप से करें और इसके परिणामों के आधार पर किस प्रकार के रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाना चाहिए और कितनी मात्रा में देनी चाहिए इस पर निर्णय लिया जा सकता है।



रोपण के लिए गड्ढे की तैयारी

आमतौर पर पेड़ों के बीच अनुशंसित दूरी 7.5 मी. x 7.5 मी. है। किंतु जब कभी अंतर/मिश्रित खेती की जानी हो नारियल पौधों का रोपण 8-10 मीटर तक दूरी छोड़ते हुए करना चाहिए।

उर्वरकों का प्रयोग

यदि समय से पहले दक्षिण पश्चिम मानसून की शुरुआत के साथ मानसून पूर्व बारिश हो रही हो तो बारानी परिस्थितियों में पाले जा रहे नारियल पेड़ों को मई के आखिरी हफ्ते में रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक तिहाई हिस्से का प्रयोग किया जा सकता है। वयस्क ताड़ युक्त बागों में आमतौर पर प्रति वर्ष प्रति ताड़

मिट्टी संशोधकों का प्रयोग

अम्लीय प्रकृति की मिट्टी में (पीएच < 7) उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के अतिरिक्त प्रति वर्ष प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. डोलोमाइट या 1 कि.ग्रा. चूने का प्रयोग करना चाहिए और क्षारीय मिट्टी में (पीएच > 8.5) प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. की दर पर जिप्सम का प्रयोग करना चाहिए। 1.8 मीटर घेरे के नारियल थालों में अप्रैल-मई के दौरान चूना/डोलोमाइट/ जिप्सम का छिड़काव किया जाए। इन मिट्टी संशोधकों का प्रयोग रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से 15 दिन पहले किया जाना चाहिए।

सिंचाई

मानसून पूर्व बारिश पर्याप्त मात्रा में मिलने तक नारियल बागों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबंधन

मई महीने में मौसम शुष्क रहने के कारण कई क्षेत्रों में आक्रामक कीट सफेद मक्खी और नारियल एरियोफिड माइट का प्रकोप इधर-उधर पाया जा सकता है। नारियल पेड़ को अपने अतिजीवन के लिए पानी की ज़रूरत होती है और इसके फलों में पानी भरा रहता है जो लाखों इनसानों का प्यास बुझाता है। नमी में कमी की परिस्थिति उत्पन्न होने से ताड़ के स्वास्थ्य पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता है और कीट के प्रकोप से होने वाली समस्या और गंभीर बन सकती है। नम अवधि की ओर का यह संक्रमण काल शिखर की सफाई, पर्ण कक्षों को नीम खली और रेत के मिश्रण से भरना और 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का प्रयोग जैसे रोगरोधी उपचारों को अपनाने के लिए निर्णायक अवधि होती है। यदि समय पर रोगरोधी उपाय अपनाया जाए तो मानसून के दौरान पाए जाने वाले कीटों और रोगों की अधिकता पर नियंत्रण पाया जा सकता है। अतः यह अवधि सभी प्रकार के रोगरोधी उपचारों और सदियों पुरानी कार्यप्रणालियों जो इन बदलती जलवायु परिस्थितियों में एकदम उपयुक्त और संगत साबित हुई हैं, की शुरुआत का समय है। गर्मी की अवधि में आक्रामक सफेदमक्खी का प्रकोप अधिक होता है और यह मानसून के दौरान काफी अधिक घट जाता है। मानसून की अवधि के दौरान नारियल पेड़ पर पाए जाने वाले मुख्य कीटों और रोगों के बारे में आगे चर्चा की जा रही है।

गैंडा भृंग (ओरिक्टस रिनोसेरस)

यह एक सर्वव्यापी कीट है, अतः गैंडा भृंग का प्रकोप हमेशा होता रहता है। किंतु नारियल पौधों के रोपण के समय इसका प्रकोप अधिक पाया जाता है। यही नहीं, मई-जून के दौरान रोपण किए गए नारियल पौधों को कीट के प्रकोप से सामान्य तौर पर सुरक्षित रखना चाहिए। प्रायद्वीपीय भारत में *ओरिक्टस रिनोसेरस नूडिवायरस* का प्राकृतिक प्रकोप 0.5 प्रतिशत से अधिक रिकार्ड किया गया है। *ओरिक्टस रिनोसेरस नूडिवायरस* नारियल गैंडा भृंग-गुआम (सीआरबी-जी) का घातक है। इसलिए इसका प्रकोप हमारे देश में उतनी बड़ी समस्या नहीं रही जिसका प्रकोप दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में पेड़ों की बरबादी का प्रमुख कारण बन गया और अंतर्राष्ट्रीय

समूह के लिए यह काफी चिंताजनक मामला बन गया है। इन दिनों अवयस्क ताड़ों और फलों पर कीट का प्रकोप काफी गंभीर समस्या बन गयी है। इसके अलावा गैंडा भृंग का प्रकोप होने से लाल ताड़ घुनों को अंडा देने और कली सड़न रोगाणु के प्रवेश के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है।



गैंडा भृंग

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे भीतरी तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली (नीम खली/चालमोगरा खली/पोंगम खली(250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थालिन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।
- सुबह सुबह रोज़ाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को वीटल हुक से निकाल दें। इससे कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।
- अवयस्क ताड़ों के कॉपल क्षेत्र को मछली पकड़ने के जाल से सुरक्षित रखें। इससे गैंडा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरएन्ट्रानिलप्रोल/फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे रखें।
- पशुपालन उद्योग से जुड़े किसान खाद गड्ढों को प्रति घन मीटर 5×10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, *मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि* से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा सकें। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीट प्रकोप प्रभावी रूप में कम किया जा सकता है और कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका विकसित हो जाता है।
- प्रजनन गड्ढों में भाँट (*क्लरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम*) नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण अवयस्क अवस्था में ही कीट का विकास रुक जाता है।

• अंतरफसलों की खेती करके फसल विविधता लाने से और पारिस्थितिक इंजीनियरी सिद्धांतों से कीटों को गुमराह किया जा सकता है और किसानों को लगातार आमदनी प्राप्त होती है और अतिरिक्त रोजगार उत्पन्न होता है।

लाल ताड़ घुन (रिंकोफरस फेरुजिनस)

गैंडा भृंग का प्रकोप कम होने के फलस्वरूप घातक कीट लाल ताड़ घुन के प्रकोप की संभावनाएं भी कम हो जाती हैं, क्योंकि इस कीट



लाल ताड़ घुन

को ताड़ पर घुस जाने और अंडा देने के लिए ताड़ पर घाव मौजूद होना आवश्यक है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर अधिकतर इसका प्रकोप होता है। कीट प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते हैं। ताड़ का खतरनाक शत्रु होने के नाते इसके प्रबंधन हेतु शीघ्र कार्रवाई निर्धारित की जाती है। अंतरफसलों की खेती करने तथा कीटों के प्रकोप से ताड़ को बचाने के लिए बहुविध गंध संकेत उत्पन्न करने हेतु पेड़ों के बीच की दूरी समुचित बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य होता है।

प्रबंधन

- बाग की स्वच्छता बनाए रखना अनिवार्य होता है और शिखरहीन ताड़ों में बचे हुए कीट के अंडों, सूँडियों एवं घुनों को नष्ट कर देना चाहिए।
- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई घाव लगने न दें और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर ही काटना चाहिए।
- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति याने पेड़ों के बीच समुचित दूरी बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कोंपल निकलने लगती है।

• प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता (पारिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाते से कीट का प्रकोप कम हो जाता है।

पत्ता सड़न रोग (कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोसोरियोइड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम)

यह जड़मुर्झा रोगग्रस्त ताड़ों पर अक्सर पाया जाने वाला रोग है जो सबसे भीतरी कोंपल और निकटस्थ पत्तों पर ऊतकक्षय के रूप में प्रकट होता है। मानसून के बाद दिसंबर महीने के दौरान मुख्यतः यह रोग पाया जाता है। रोगग्रस्त पत्ते परिगलित हो जाते हैं और ये ताड़ से बिना अलग हुए वहीं पर टिके रहते हैं। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे धब्बे के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर एकसाथ मिल जाते हैं और सड़न अत्यधिक व्यापक होकर ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है। यह रोग दक्षिण केरल के जड़मुर्झा रोगग्रस्त क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।

प्रबंधन

- आवश्यकता आधारित छँटाई और प्रकोपित कोंपल तथा शिखर के निकटस्थ पत्तों को नष्ट करना।
- प्रकोपित कोंपल क्षेत्र पर 300 मि.ली. पानी में हेक्साकोनाज़ोल 5 ईसी 2 मि.ली. का प्रयोग करें।

कली सड़न या अपक्व फल का गिराव (फाइटोफ्थोरा पामिवोरा)

कतिपय नम क्षेत्रों में कली सड़न रोग का शिकार होकर सैकड़ों पेड़ मर जाते हैं। भारत में कली सड़न रोग का प्रकोप एक प्रतिशत से कम रिपोर्ट किया गया है। रोगाणु कलिका क्षेत्र पर वार करता है जिससे कलिका क्षेत्र सड़ने लगता है और ताड़ मर जाते हैं। पीले रंग का होकर कोंपल का मुर्झाना इस रोग का पहला प्रकट लक्षण है। कोंपल भूरे रंग का हो जाता है और नीचे की ओर झुक जाता है। प्रकोपित कोंपल को आसानी से खींचकर निकाला जा सकता है क्योंकि उसका मूल भाग पूरी तरह सड़कर बदनू

उत्पन्न करने लगता है। 200-240 सेल्शियस तापमान और 98-100 प्रतिशत के बीच आपेक्षिक आर्द्रता कली सड़न रोग के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। बारिश के मौसम में लगातार इसप्रकार के अनुकूल दिन बना रहना यह निर्धारित करता है कि रोग का फैलाव और प्रकोप की तीव्रता कहाँ तक हो सकता है। फाइटोफ्थोरा रोग अत्यंत घातक होने के कारण मानसून के दौरान ताड़ के स्वास्थ्य का खासतौर पर कॉपल वाले क्षेत्र का निकट संवीक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है।

प्रबंधन

● नियमित रूप से शिखर की सफाई और मानसून की शुरुआत में रोगरोधी उपाय के रूप में शिखर पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना और 35 से 40 दिनों बाद एक बार फिर छिड़काव करना कली सड़न रोग का प्रकोप कम करने के लिए सहायक होता है।

● मानसून शुरू होने के एकदम पहले सबसे भीतरी पर्ण कक्षों में ट्राइकोडेर्मा (*ट्राइकोडेर्मा हार्जियानम* सीपीटीडी 28) संपुष्ट कयर गूदा खली रखनी चाहिए और हर दो महीने बाद यह दोहराते रहना चाहिए।

● एक तेज़ चाकू से तर्कु पत्ते के पूरे सड़े हुए भाग को काट कर हटाएं और घाव पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट का लेप करें और बारिश का पानी अंदर आने से बचाने के लिए घाव को एक पोलिथीन शीट से ढक दें। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षा आवरण को वैसे ही रहने दें।

समय पर रोगरोधी उपचार करने से मानसून अवधि के दौरान ताड़ों को कीटों और रोगों का प्रकोप झेलने के लिए सक्षम बनाया जा सकता है। जैसा कहावत है रोकथाम इलाज से बेहतर है, हमारी तरकीब भी बिलकुल वैसे ही होनी चाहिए कीटों और रोगों का प्रकोप रोका जाए न कि इलाज हेतु उपाय के पीछे भागें।

जून

नर्सरी में बीजफलों की बुआई

अच्छी तरह जलनिकास युक्त, दानेदार मिट्टी में नर्सरी पालनी चाहिए और यह ऐसे स्थान पर हो कि उसके निकट सिंचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो। यदि जल निकासी की कोई समस्या नहीं हो तो बीजफल सपाट क्यारियों में बोए जा सकते हैं। यदि पानी जमा होने की समस्या हो तो ज़मीन पर टीले बनाकर ऊँची क्यारियों में बीजफलों का रोपण करना चाहिए। नर्सरी खुले क्षेत्र में कृत्रिम रूप से छाया देकर या बागों में ऊँचे ताड़ों के नीचे जहाँ भागिक रूप से छाया उपलब्ध हो, पाली जा सकती है। बीजफलों की बुआई लंबी और संकरी क्यारियों में 40 से.मी. X 30 से.मी. की दूरी में खड़ी स्थिति में या पड़ी स्थिति में 20-25 सें.मी. गहरी खाइयों में की जा सकती है। बीजफलों का खड़ी स्थिति में रोपण करने का फायदा यह है कि नारियल पौधों को दूसरी जगह ले जाते समय नुकसान कम होता है। किंतु यदि रोपण देरी से कर रहा हो और फल के अंदर का पानी अत्यधिक कम हो जाता हो तो, पड़ी स्थिति में बुआई करना उचित होता है। बेहतर



बीजफलों की बुआई

अंकुरण के लिए बीजफलों की बुआई पड़ी स्थिति में करना फायदेमंद होता है।

रोपण हेतु नारियल पौधों का चयन

बाग में रोपण करने के लिए नर्सरी से अच्छी गुणवत्ता के पौधों का ही चयन करना चाहिए। लंबी किस्मों में, एक वर्ष की आयु के ऐसे तंदुरुस्त पौधों का चयन करना चाहिए जिनकी ऊँचाई 100 सें.मी. से अधिक हो, 5-6 पत्ते हों और पौधों के गर्दन का घेरा 10 सें.मी. हो। बौनी किस्मों में, अच्छी गुणवत्ता के नारियल पौधों का

घेरा और ऊँचाई क्रमशः 8 सें.मी. और 80 सें.मी. होना चाहिए। अच्छी गुणवत्ता के नारियल पौधों का चयन करने के लिए महत्वपूर्ण दूसरी एक विशेषता है पत्तों का जल्दी फटना। आमतौर पर, एक वर्ष की आयु के पौधे रोपण के लिए उचित होते हैं। किंतु, जल जमाव वाले क्षेत्रों में रोपण के लिए डेढ़ से दो वर्ष तक की आयु के पौधों को अधिक उचित माना जाता है।

पोली बैगों में पाले गए नारियल पौधे अच्छी तरह बढ़ते हैं। पोली बैग पौधों की खासियत यह है कि पुनरोपण करते समय इसको कोई नुकसान नहीं पहुँचता है क्योंकि जड़ तंत्र सहित पौधे को ज्यों का त्यों गड्ढे में रखा जा सकता है और ये पौधे जल्दी जड़ पकड़ लेते हैं और तंदुरुस्ती से बढ़ते हैं। किंतु इसकी असुविधा यह है कि इसका परिवहन काफी मुश्किल है और पौधों की उत्पादन लागत बहुत अधिक होती है।

रोपण

अच्छी जल निकास युक्त मिट्टी में, जून में दक्षिण पश्चिमी मानसून की शुरुआत के साथ पौधों का पुनरोपण किया जा सकता है। चौकोर प्रणाली में आमतौर पर नारियल के लिए 7.5 मी. X 7.5 मी. से 8.0 मी. X 8.0 मी. की दूरी अनुशंसित है। इसमें प्रति हेक्टर क्रमशः 177 और 156 ताड़ों को लगाया जा सकता है। यदि त्रिकोणीय प्रणाली अपनायी गई हो तो, अतिरिक्त 25 ताड़ों का रोपण किया जा सकता है। कतार प्रणाली में कतारों में 6.5 मीटर और दो कतारों के बीच 9.5 मी. की दूरी छोड़ते हुए रोपण किया जा सकता है। नारियल बागों में बहु फसल प्रणाली सुगम बनाने के लिए पेड़ों के बीच 10 मी. X 10 मी. की दूरी छोड़ना अनुशंसित है ताकि अंतर जगहों में दीर्घकालीन और वार्षिक फसलों की खेती करने का पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो।

रोपण के गड्ढों की गहराई मिट्टी के प्रकार पर निर्भर है। नीचे चट्टान से युक्त मखरली मिट्टी में 1.5 मी. लंबे X 1.5 मी. चौड़े X 1.2 मी. गहरे गड्ढे खोदा जाए और रोपण से पहले इनमें ढीली मिट्टी, चूर्णित गोबर और राख से निचले भाग से 60 सें.मी. ऊँचाई तक भरे जाएं। मखरली मिट्टी में 2 कि.ग्रा. नमक का प्रयोग करने से

मिट्टी ढीली हो जाती है। निम्न भौम जल स्तर की दुम्पट मिट्टी में, 1 मी. X 1 मी. X 1 मी. आकार के गड्ढे में 50 सें.मी. ऊँचाई तक ऊपरी मिट्टी भरकर रोपण करना आमतौर पर अनुशंसित है। गड्ढे के बीच एक छोटा सा सुराख बनाकर उसमें नारियल पौधों का रोपण किया जाता है और पौधों के चारों ओर की मिट्टी को अच्छी तरह दबा देना चाहिए, किंतु ध्यान रहे कि पौधे का गर्दनी क्षेत्र ढक न जाए और पर्ण कक्षों में मिट्टी न भरें। यदि भौमजल का स्तर ऊँचा हो तो सतही रोपण और मेंडों पर रोपण अनिवार्य हो जाता है। सतही रोपण और मेंडों पर रोपण करते समय भी गड्ढा खोदने और उसमें मिट्टी भरने जैसे कार्य करना चाहिए। गड्ढों में मिट्टी भरते समय ऊपरी मिट्टी का प्रयोग करने की अनुशंसा दी जाती है। गड्ढे में मिट्टी भरने से पहले इसमें नारियल छिलके की दो परतें (छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर रखते हुए) लगानी चाहिए। इससे नमी संरक्षण में मदद मिलती है। बाग में रोपण करने के बाद नारियल पौधों को सहारा देकर तेज़ हवा से बचाना चाहिए और गूँथे नारियल पत्ते या तेलताड़ के पत्ते या कोई भी उचित छायादार सामग्री का प्रयोग करके समुचित छाया प्रदान करते हुए धूप से बचाना चाहिए। यदि रोपण के बाद बारिश नहीं हुई हो तो पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करने की आवश्यकता है।

आगे, यदि लगातार भारी वर्षा हो रही हो तो उचित जलनिकासी की व्यवस्था करते हुए गड्ढों में पानी भरना रोकना चाहिए। रोपण गड्ढे के चारों ओर निचली मिट्टी का प्रयोग करते हुए बाँध बनाना चाहिए ताकि पानी अंदर प्रवेश न करें।

उर्वरकों का प्रयोग

बारानी परिस्थितियों में रासायनिक उर्वरकों के एक तिहाई मात्रा का प्रयोग दक्षिण पश्चिमी मानसून की शुरुआत के साथ नारियल पेड़ों को किया जा सकता है। वयस्क ताड़ वाले बागानों के लिए प्रति ताड़ 500 ग्राम नत्रजन, 320 ग्राम फोस्फरस और 1200 ग्राम पोटेशियम के प्रयोग की अनुशंसा दी जाती है। उपर्युक्त पौष्टिकतत्वों के एक तिहाई हिस्से की आपूर्ति हेतु 0.36 कि.ग्रा. यूरिया, 0.5 कि.ग्रा. रोक फोस्फेट (अम्लीय मिट्टी में) या 0.7 कि.ग्रा. सूपर

फोस्फेट (अन्य प्रकार की मिट्टियों में) और 0.7 कि.ग्रा. म्यूरियेट ऑफ पोटेश का प्रयोग करना चाहिए। सिफारिश की गई मात्रा में उर्वरक नारियल पेड़ों के चारों ओर 1.8 मीटर के घेरे में फैलाने चाहिए और इसे अच्छी तरह मिट्टी में मिलाना चाहिए। यह सिफारिश की जाती है कि सावधिक रूप से (तीन सालों में एक बार) नारियल बागों की मिट्टी की जाँच की जानी चाहिए और इसके परिणामों के आधार पर रासायनिक उर्वरकों की मात्रा और इसके प्रकार का निर्णय लिया जा सकता है। यदि मिट्टी में फोस्फरस 20 पीपीएम से अधिक हो तो फोस्फरसयुक्त उर्वरकों का प्रयोग नहीं करने की सिफारिश दी जाती है।

यदि नारियल पेड़ों की सिंचाई की जा रही हो तो जून महीने के दौरान रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई हिस्से के प्रयोग की सिफारिश की जाती है।

यह अनुशंसा दी जाती है कि तीन सालों में एक बार मिट्टी और पत्तों का विश्लेषण किया जाए और इन परिणामों के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करें।

मिट्टी संशोधकों का प्रयोग

यदि मिट्टी संशोधकों का प्रयोग मई में गर्मी की बारिश के अभाव में नहीं किया गया हो तो जून में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने के 15 दिन पहले एक कि.ग्रा. डोलोमाइट या एक कि.ग्रा. चूने का प्रयोग किया जाए।

जैव उर्वरकों का प्रयोग

यदि ताड़ों का अनुरक्षण बारानी परिस्थितियों में की जाती हो तो मानसून की शुरुआत के साथ साथ जैव उर्वरकों का प्रयोग किया जाना चाहिए। *एज़ोस्पाइरिलम* प्रजाति निहित तैयारियाँ और टैल्क या वेर्मी कंपोस्ट जैसे संवाहकों में तैयार की गई फोस्फेट घुलनीय बैक्टीरिया का प्रयोग प्रति ताड़ 100 ग्राम की दर पर किया जाना होगा।

रोपण के समय नारियल पौधों को वर्मी कंपोस्ट या घूरे की खाद के साथ मिश्रित करके केरा प्रोबयो (फोस्फेट घुलनीय बैक्टीरिया *बैसिलस मेगटेरियम* की टैल्क आधारित दवा) का प्रयोग प्रति पौधा 25 ग्राम की दर पर की जा सकती है। इसी तरह *आर्बस्कुलर माइकोराइज़ल* फफूँद (एएमएफ) जैव संरोपी 'kerAM' का प्रयोग प्रति पौध 50 ग्राम की दर पर किया जा सकता है।

दलहनी छादन फसलों के साथ थाला प्रबंधन

हरी खाद दलहनी फसलों जैसे कि *प्यूररिया फेसोलोइड्स*, *केलापगोनियम मुकुनोइड्स*, लोबिया (*विग्ना अंगुइकुलेटा*), सनई (*क्रोटेलेरिया जंकिया*), कुलथी (*मैक्रोटाइलोमा यूनिफ्लोरम*), ढेंचा (*सेसबानिया एक्वुलेटा*) और *सेसबानिया स्पिनोसा* की खेती नारियल थालों में की जा सकती है और 50 प्रतिशत पौधों पर फूल लगने पर इन्हें हरी खाद के रूप में मिट्टी में मिलाया जा सकता है। जून महीने के दौरान पेड़ के थाले में 1.8 मीटर के घेरे में प्रति थाला 100 ग्राम की दर पर इन फसलों के बीज बोए जा सकते हैं।



छादन फसल से थाला प्रबंधन

ड्रिप सिंचाई प्रणाली का विघटन

जून महीने के दौरान मानसून की शुरुआत होने पर ड्रिप सिंचाई प्रणाली के पुर्जों को विघटित करके लपेटकर नारियल बाग में सिंचाई तंत्र के प्रारंभिक स्थान के निकट एक खंभे पर या नारियल पेड़ पर बाँधकर रखना चाहिए।

अंतरफसलों का रोपण

जून महीने में नारियल बाग में उपयुक्त अंतर/मिश्रित फसलों का रोपण किया जा सकता है। केला, अनन्नास, अदरक, हल्दी, कसावा, शकरकंद जैसी अंतरफसलों और कालीमिर्च, जायफल, लौंग, दालचीनी, वैनिला, कोको आदि बहुवर्षी फसलों का भी रोपण किया जा सकता है।



नारियल बाग में हल्दी की अंतर खेती

पौधा संरक्षण

प्रायद्वीपीय भारत में, जो कि देश का प्रमुख नारियल उत्पादक क्षेत्र है, जून महीने की अवधि के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून बारिश अच्छी तरह प्राप्त होती है। इस अवधि के दौरान ताड़ में पोषकतत्वों का अवशोषण करने वाली जड़ें सक्रिय रूप से बनने लगते हैं और शुष्क परिस्थिति से नम परिस्थिति में रहने के लिए ताड़ सक्षम हो जाता है। मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन करते हुए ताड़ का पुनरुज्जीवन किया जाना आवश्यक है और साथ साथ रोगरोधी प्रबंधन मोड्यूल और कीटों एवं रोगों से ताड़ों को सुरक्षित रखने के लिए नेमी जाँच करना भी अपेक्षित है। मानसून की भारी वर्षा के साथ एरियोफिड माइट और आक्रामक सफेद मक्खी सहित चूसने वाले कीटों का प्रकोप बहुत बड़ी हद तक कम हो जाता है। दो प्रमुख नारियल कीट जैसे नारियल गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन का प्रकोप इस अवधि के दौरान बहुत बड़ी समस्या बन जाती है और मानसून की बारिश प्राप्त होने पर सफेद सूँड़ी के वयस्क भृंगों का उभरना काफी अधिक हो जाता है जिन्हें यांत्रिक उपस्करों के साथ निकालना पड़ जाता है। किसानों को रोगरोधी उपाय के रूप में नारियल के पर्ण कक्षों को नीम खली और रेत के मिश्रण से भर देना चाहिए और कली सड़न रोग प्रकोपित क्षेत्रों में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। कली सड़न रोग प्रकोप वाले क्षेत्रों में समय पर रोगरोधी उपाय अपनाना ताड़ को बचाने के लिए अत्यंत अनिवार्य है क्योंकि रोग प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में रोग प्रकोप के प्रारंभिक लक्षणों की पहचान करना काफी मुश्किल होता है जिसके लिए कीट सर्वेक्षण हेतु मानव रहित हवाई वाहनों का प्रयोग बेहतर तरीका होता है।

कीट

गैंडा भृंग (ओरिक्टस रिनोसरस)

यह एक सर्वव्यापी कीट होने के कारण इसका प्रकोप सभी मौसमों में सर्वदा पाया जाता है, तथापि मानसून चरण के दौरान जब नारियल पौधों का रोपण भी किया जाता है इसका प्रकोप अत्यधिक होता है। नए रोपित नारियल पौधों में कॉपल को नुकसान पहुँचाता है और कीट प्रकोप से यह विकृत हो जाता है। छोटे ताड़ भी जल्दी कीट प्रकोपित

होता है और कभी कभी हाथी के दाँत जैसे रोगलक्षण प्रकट होते हैं। नुकसानग्रस्त छोटे ताड़ की वृद्धि रुक जाती है और इनमें पुष्पक्रम देरी से निकलने लगता है। हाल ही में फलों पर छेद जैसे रोगलक्षण भी पाया गया है। यही नहीं, गैंडा भृंग का प्रकोप लाल ताड़ घुन को अंडा देने तथा कली सड़न रोगाणु के प्रवेश के लिए रास्ता खोल देता है।

प्रबंधन

- जैसा कि पहले बताया गया है कीट प्रकोप को रोकने के लिए समुचित उपाय अपनाया जाए।

लाल ताड़ घुन (रिंकोफरस फेरुजिनस)

यह नारियल का घातक शत्रु है और ताड़ पर किसी प्रकार का घाव लगना कीट के प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर इसका प्रकोप अधिकतर होता है। कीट प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते हैं। पत्तों के मूल भाग का फटना, बीच के पत्तों का पीला हो जाना, ताड़ पर छेद दिखना और भूरे रंग का तरल पदार्थ रिसना इसके प्रकट रोगलक्षण हैं। पेड़ों के बीच उचित दूरी छोड़कर अंतरफसलों की खेती करने से विविध प्रकार के गंध संकेत के कारण कीट के प्रकोप से बच सकता है।

प्रबंधन

- पहले बताए गए अनुसार प्रबंधन उपाय अपनाया जाए।

सफेद सूँड़ी (ल्यूकोफोलिस कोनियोफोरा)

मिट्टी में बसने वाली सफेद सूँड़ी नारियल की जड़ों को नुकसान पहुँचाती है और सूँड़ी के निरंतर प्रकोप से पत्ते पीले पड़ जाते हैं, अपक्व फल गिर जाते हैं, पुष्प देरी से होता है, वृद्धि मंद हो जाती है और पैदावार कम होने लगती है। सूँड़ी मिट्टी में छिपी रहती है, इसलिए कीट के नुकसान का पता लगाने के लिए रोगलक्षणों की पहचान करना अत्यंत अनिवार्य है। सूँड़ी पहले जैविक सामग्रियों को और अंतरफसलों की जड़ों को अपना आहार बना लेती है और इसके बाद नारियल की जड़ों को आहार बना लेती है। जून महीने के दौरान वयस्क भृंग मिट्टी से बाहर आता है। केरल के कासरगोड़ और कर्नाटक के कुछ इलाकों के रेतीली क्षेत्रों में इसका प्रकोप अधिक पाया गया है।

प्रबंधन

- गर्मी के दौरान बार बार जुताई करके विविध अवस्थाओं की सैंडियों को बाहर निकाल दें ताकि परभक्षी इन्हें खा सके।
- मानसून की शुरुआत के साथ रोज़ाना शाम को दो हफ्ते के लिए भृंगों को हाथ से निकालना
- प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर नारियल के थालों में नीम खली का प्रयोग करने से नई जड़ें निकलती हैं।
- रोगाणु सूत्रकृमि *स्टेइनेरनेमा कार्पोकैप्से* की जलीय दवा का प्रति हेक्टर 1.5 बिलियन की संक्रामक छोटी कृमियों की दर पर मिट्टी में प्रयोग और बार बार आवश्यकता के अनुसार अनुप्रयोग।

पत्ता सड़न रोग (*कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोसोरियोइड्स*, *एक्सैरोहिलम रोस्ट्रेटम*)

यदि पत्ता सड़न रोग का प्रकोप पाया जाता है तो उचित प्रबंधन उपाय अपनाएं।

कली सड़न या अपक्व फलों का गिराव (*फाइटोफ्थोरा पामिवोरा*)

कली सड़न रोग का प्रकोप होने पर पहले बताए गए अनुसार उचित प्रबंधन उपाय अपनाया जाए। रोग प्रकोप पर नियंत्रण पाने के लिए बाग की सफाई और बारिश के मौसम में समुचित जल निकासी की व्यवस्था करना भी अनिवार्य होता है।

रोगरोधी प्रबंधन उपाय क्षेत्र व्यापक तौर पर और किसान सहभागिता से अपनाने से अनुकूल जलवायु परिस्थितियों में भी कीट/रोग प्रकोप के दबाव को कम किया जा सकता है। रोग की सही पहचान करने और समय पर कीट प्रबंधन विधियाँ अपनाए जाने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। बाग से नियमित आमदनी प्राप्त करने और कीट का प्रकोप कम करने के लिए पारिस्थितिकीय इंजीनियरी की संकल्पना को अधिक महत्व देना चाहिए। ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने और जीवीय दाब झेलने के लिए ताड़ को सक्षम बनाने हेतु मृदा जाँच आधारित पोषण प्रदान करना अत्यंत अनिवार्य है।

Statement of ownership and other particulars about BHARATIYA NARIYAL PATRIKA FORM IV (See Rule 8)

1. Place of Publication	:	Kochi - 11
2. Periodicity of Publication	:	Quarterly
3. Printer's Name	:	Mini Mathew
Nationality	:	Indian
Address	:	Assistant Director (Publicity and Public Relations) Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala.
4. Publisher's Name	:	Mini Mathew
Nationality	:	Indian
Address	:	Assistant Director (Publicity and Public Relations) Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
5. Editor's Name	:	Beena S.
Nationality	:	Indian
Address	:	Assistant Director (OL) Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	The periodical is owned by the Coconut Development Board which is a body corporate set up by the Government of India under the Coconut Development Board Act, 1979.

I, Mini Mathew, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/

(Mini Mathew)

Date : 01-03-2024

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे ने नारियल विकास बोर्ड के निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार वितरित किए



सुश्री शोभा करंदलाजे, कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान पुरस्कार विजेताओं और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ

किसानों की आय दोगुनी करने के भारत सरकार के दृष्टिकोण को हासिल करने के लिए हमें नारियल उत्पादों के विविधीकरण पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है, सुश्री शोभा करंदलाजे, कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा। मंत्री 29 फरवरी 2024 को एनआईएनपी ऑडिटोरियम, बैंगलूरु में नारियल विकास बोर्ड के निर्यात उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की घोषणा एवं वितरण कर रही थी।

नारियल एक सूपर फुड है और नारियल तेल कई अन्य खाद्य तेलों की तुलना में स्वास्थ्यवर्धक भी है। हमें इसे भावी पीढ़ी विशेषकर युवा पीढ़ी के गुणवत्ता के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं से परिचित कराने की आवश्यकता है।

किसानों के लिए सरकारी सहायता का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि बागवानी/कृषि विभागों, कृषि अवसंरचना निधि, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना आदि से प्राप्त सहायिकी का किसानों और हितधारकों के लाभ के लिए उचित उपयोग नहीं किया जा रहा है। आजकल बागवानी/कृषि विभाग संबंधित औद्योगिक विभागों के ज़रिए निर्यात कर रहे हैं। वे कृषि उत्पादों के बजाय औद्योगिक उत्पादों को बढ़ावा दे रहे हैं। निर्यात को बेहतर बनाने के लिए उन्होंने राज्य/कृषि/बागवानी विभागों से एपीईडीए और डीजीएफटी के साथ मिलकर कृषि/बागवानी उत्पादों के निर्यात के लिए एक अलग सेल बनाने का अनुरोध किया। एपीईडीए के पास दुनिया भर के विभिन्न देशों की आवश्यकता के अनुसार उत्पादों की एक सूची है। तदनुसार राज्य/कृषि/बागवानी

विभाग प्रत्येक देश की आवश्यकताओं की पहचान कर सकते हैं और संबंधित राज्य से आवश्यक कृषि उत्पाद को बढ़ावा दे सकते हैं। प्रौद्योगिकी और नवाचार में प्रगति से मूल्यवर्धन और उत्पाद विविधीकरण के नए रास्ते खुल रहे हैं। किसानों की आय दोगुनी करने के लिए मूल्यवर्धन समय की मांग है, जिससे नए रास्ते खुलेंगे। उन्होंने यूरोपीय और अमिरिकी देशों में शाकाहारी भोजन प्रणाली की ओर इशारा किया जहां वे सोय दूध की अपेक्षा नारियल के दूध को पसंद कर रहे हैं। उन्होंने नारियल निर्यात में उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल करने वालों को बधाई दी और निर्यात प्रदर्शन में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार विजेताओं को मान्यता देने के प्रयासों के लिए बोर्ड की सराहना की।

डा.प्रभात कुमार, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, नाविबो एवं बागवानी आयुक्त, भारत सरकार ने अपने विषय-प्रवेश भाषण में कहा कि नारियल विकास बोर्ड को वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नारियल छिलके और रेशे से बने उत्पादों के अलावा अन्य सभी नारियल उत्पादों के लिए निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसी) के रूप में अधिसूचित किया गया था। वर्ष 2022-23 के दौरान निर्यात किए गए नारियल उत्पादों का कुल मूल्य 3554.23 करोड़ रुपए तक पहुंच गया। बोर्ड उत्पादन, उत्पादकता, मूल्यवर्धन, विपणन और निर्यात को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

डा.के.बी.हेब्बार, निदेशक, सीपीसीआरआई और उपाध्यक्ष, नाविबो ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और नारियल क्षेत्र के उन्नयन के लिए सीपीसीआरआई और

नाविबो द्वारा प्रदान की गई प्रौद्योगिकी सहायता और वित्तीय सहायता का लाभ उठाने का अनुरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि कृषि क्षेत्र में नारियल एक आशाजनक फसल है। उन्होंने यह भी बताया कि हमें जलवायु लचीलेपन और कार्बन पृथक्करण पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

श्री रमेश डी.एस. भा.प्र.से., बागवानी निदेशक, कर्नाटक सरकार और डा.एन.के.एस.गौडा, निदेशक, एनआईएएनपी, बैंगलूरु कार्यक्रम के सम्माननीय अतिथि रहे। डा.बी.हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने स्वागत भाषण दिया और श्रीमती दीप्ति नायर एस., निदेशक ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के सिलसिले में माननीय केंद्रीय राज्य

मंत्री जी के साथ पुरस्कार विजेताओं का संवाद सत्र भी संपन्न हुआ।

चार वर्षों की इस पुरस्कार योजना में 12 श्रेणियाँ शामिल हैं, जिनमें प्रत्येक श्रेणी के तहत स्वर्ण, रजत और कांस्य के तीन पुरस्कार शामिल हैं। नारियल निर्यात के विभिन्न पहलुओं में उत्कृष्टता को पहचानते हुए 2019-20 से 2022-23 की अवधि के लिए कुल 32 पुरस्कार वितरित किए गए। इस पुरस्कार में स्वर्ण, रजत और कांस्य विजेताओं के लिए क्रमशः 1.00 लाख रुपए, 0.75 लाख रुपए और 0.50 लाख रुपए की पुरस्कार राशि और स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र शामिल हैं।

2019-2020

वर्ष 2019-20 के दौरान नारियल खोपड़ी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री युनाइटेड कार्बन सोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड, तिरुपूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया; रजत पुरस्कार सर्वश्री नोवा कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री जैकोबी कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबतूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया। नारियल गरी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री मैरिको लिमिटेड, सांताक्रूज (पूर्व), महाराष्ट्र ने स्वीकार किया; रजत पुरस्कार सर्वश्री केएलएफ निर्मल इंडस्ट्रीज़ प्राइवेट लिमिटेड, इरिंजालक्कुटा, केरल ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री फेयर एक्सपोर्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, बांद्रा, महाराष्ट्र ने स्वीकार किया। नवाचारी नारियल उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री लाला एग्रो ट्रोपिक लिमिटेड, एरणाकुलम, केरल ने स्वीकार किया।

2020-2021

वर्ष 2020-21 के दौरान नारियल खोपड़ी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री नोवा कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु ने स्वीकार किया; रजत पुरस्कार सर्वश्री युनाइटेड कार्बन सोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड, तिरुपूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री जैकोबी कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबतूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया। नारियल गरी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री मैरिको लिमिटेड, इरिंजालक्कुटा, केरल ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री मेषुक्काटिल मिल्स, आलुवा, केरल ने स्वीकार किया। महिला निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री वाशिनी एक्सपोर्ट्स, कोयंबतूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया और नवाचारी नारियल उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री लाला एग्रो ट्रोपिक प्राइवेट लिमिटेड, एरणाकुलम, केरल ने स्वीकार किया।

2021-2022

वर्ष 2021-22 के दौरान नारियल खोपड़ी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री नोवा कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु ने स्वीकार किया; रजत पुरस्कार सर्वश्री युनाइटेड कार्बन्स सोल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड, तिरुपूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री जैकोबी कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबतूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया। नारियल गरी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री मैरिको लिमिटेड, सांताक्रूज (पूर्व), महाराष्ट्र ने स्वीकार किया; रजत पुरस्कार सर्वश्री मेषुक्काटिल मिल्स, आलुवा, केरल ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री फेयर एक्सपोर्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, बांद्रा, महाराष्ट्र ने स्वीकार किया। महिला निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री वाशिनी एक्सपोर्ट्स, कोयंबतूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया और नवाचारी नारियल उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री लाला एग्रो ट्रोपिक प्राइवेट लिमिटेड, एरणाकुलम, केरल ने स्वीकार किया।

2022-2023

वर्ष 2022-23 के दौरान नारियल खोपड़ी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री युनाइटेड कार्बन सोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड, तिरुपूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया; रजत पुरस्कार सर्वश्री नोवा कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री जैकोबी कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबतूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया। नारियल गरी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री मैरिको लिमिटेड, सांताक्रूज (पूर्व), महाराष्ट्र ने स्वीकार किया; रजत पुरस्कार सर्वश्री मेषुक्काट्टिल मिल्स, आलुवा, केरल ने स्वीकार किया और कांस्य पुरस्कार सर्वश्री केएलएफ निर्मल इंडस्ट्रीज़ प्राइवेट लिमिटेड, इरिंजालक्कुटा, केरल ने स्वीकार किया। महिला निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री कारब्यूर एक्टिवेटेड कार्बन प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबतूर, तमिलनाडु ने स्वीकार किया और नवाचारी नारियल उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री मेषुक्काट्टिल मिल्स, आलुवा, केरल ने स्वीकार किया। नारियल पानी आधारित उत्पाद निर्यातक के लिए स्वर्ण पुरस्कार सर्वश्री नेटा न्यूट्रिको कोकनट फुड प्रोडक्ट्स एलएलपी, कण्णूर, केरल ने स्वीकार किया।

पुरस्कार वितरण समारोह की झाँकियाँ



निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार विजेता

युनाइटेड कार्बन सोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड: दक्षिण भारत में सक्रियित कार्बन विनिर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हुए

युनाइटेड कार्बन सोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड (यूसीएसपीएल) सक्रियित कार्बन का अग्रणी विनिर्माता है जो दक्षिण भारत के कंगयम में स्थित है। कोयला निर्माण इकाइयों के बहुत निकट महत्वपूर्ण स्थान पर दस एकड़ भूमि में स्थापित फैक्टरी के साथ यूसीएसपीएल की उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष लगभग 20,000 टन है और वे इसका आगे और विस्तार करने की योजना बना रहे हैं। पिछले 10 वर्षों की त्वरित वृद्धि और मज़बूत प्रतिगामी एकीकरण के बलबूते, यूसीएसपीएल अपनी सहायक कंपनियों युनाइटेड कार्बन और जी कार्बन के समर्थन से भारत में स्थानीय रूप से उपलब्ध माल के 50 प्रतिशत तक सीधी पहुँच के ज़रिए अपना कच्चा माल याने नारियल खेपड़ी कोयला प्राप्त करता है।

युनाइटेड कार्बन सोल्यूशन्स की विनिर्माण सुविधा कोयला प्रसंस्करण इकाइयों के एकदम निकट है जो प्रचालन दक्षता और आपूर्ति श्रृंखला की गतिकी बढ़ाकर प्रतिस्पर्धिता का बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। लगातार सफलता की चोटियों को चूमता यूसीएसपीएल उत्पाद विकास में नवाचार पर ज़ोर दे रहा है और सक्रियित कार्बन उद्योग में नई ऊँचाइयों को छूने के लिए अग्रसर है।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें:

एसएफ सं. 1147/1ए, बट्टमलै गांव, ए.पी.पुदुर (डाक),
कंगयम, तिरुपूर, तमिलनाडु - 638 701

दूरभाष: 04257-230603

ई-मेल: info@ucsplgroup.com

नोवा कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड: सक्रियित कार्बन विनिर्माण में क्रांति लाते हुए

नोवा कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड तमिलनाडु में तिरुनेलवेली जिले के औद्योगिक क्षेत्र में स्थित है और यह सक्रियित कार्बन उत्पादन में प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है। 23.52 एकड़ में फैला नोवा कार्बन्स जैकोबी

कार्बन, एबी स्वीडन की सहायक कंपनी के रूप में कार्य करता है और इनकी वैश्विक विशेषज्ञता और प्रतिष्ठा से लाभान्वित हो रहा है।

2011 में प्रति वर्ष 9000 मेट्रिक टन की प्रारंभिक उत्पादन क्षमता के साथ स्थापित नोवा कार्बन ने प्रगति और विस्तार का सफर शुरू किया। वर्ष 2013 में और 2019 में हुए उल्लेखनीय विस्तार के फलस्वरूप नोवा कार्बन्स की कुल उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष 22000 मेट्रिक टन तक पहुंची, जिससे उद्योग में उनका स्थान मज़बूत हुआ।

उत्कृष्टता के प्रति कटिबद्ध नोवा कार्बन्स इंडिया को गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के लिए आईएसओ 9001:2015, पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली के लिए 14001:2015 और स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली के लिए 45001:2018 प्रमाणीकरण प्राप्त हैं। इसके अलावा फैक्टरी के पास सामाजिक जवाबदेही के लिए कोशर, हलाल, एनएसएफ-41, एनएसएफ-62 और एसएमईटीए के प्रतिष्ठित प्रमाणन भी हैं।

नारियल खेपड़ी भाप सक्रियित कार्बन में विशेषज्ञता प्राप्त नोवा कार्बन्स इंडिया उत्कृष्ट उत्पाद प्रदान करता है जिसका विपणन उनकी ग्रूप बिक्री कंपनियों को किया जाता है। इन उत्पादों का काफी बड़ा बाज़ार उपलब्ध है जो आस्ट्रेलिया, चीन, यूएसए और विविध यूरोपीय और एशियाई देशों तक फैला हुआ है।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें:

प्लोट सं.बी 46, बी 47, बी 48 और बी 49

सिफ्कोट इंडस्ट्रियल ग्रोथ सेंटर, गंगैकॉडन, तिरुनेलवेली
तमिलनाडु - 627 352

दूरभाष: 0462-2518800

ई-मेल: thomas.antony@jacobi.net

जैकोबी कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड: सक्रियित कार्बन विनिर्माण में परिवर्तनकारी उत्कृष्टता

तमिलनाडु के कोयंबतूर जिले में स्थित जैकोबी कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड सक्रियित कार्बन उत्पादन में नवाचार और उत्कृष्टता का दीपस्तंभ बनकर खड़ा है। 265 समर्पित व्यक्तियों के कार्य बल के साथ 11.75 एकड़ में फैला जैकोबी

कार्बन्स इंडिया लिमिटेड वैश्विक बाज़ार के लिए उच्च गुणवत्ता के सक्रियित कार्बन के विनिर्माण में सबसे आगे है।

जापान के ओसाका गैस केमिकल्स को.लिमिटेड (ओजीसी) की महत्वपूर्ण सहायक कंपनी के रूप में जैकोबी कार्बन्स इंडिया ने अपनी पैतृक कंपनी की विरासत कायम रखी है और इस उद्योग की पथप्रदर्शक शक्ति के रूप में विज्ञात है। जैकोबी ग्रुप बिक्री कंपनियों के साथ सहज सहयोग बनाते हुए कंपनी करार के अंतर्गत सक्रियित कार्बन का विनिर्माण करती है और ग्रुप के विश्वव्यापक प्रचालन कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस कंपनी को दुनिया के तीन सबसे बड़े सक्रियित कार्बन उत्पादकों में प्रमुख स्थान हासिल है, जो प्रति वर्ष 100,000 मेट्रिक टन से अधिक सक्रियित कार्बन का उत्पादन करती है। जैकोबी दुनिया भर में 20 कार्बन विनिर्माण सुविधाओं और पाँच कार्बन पुनर्सक्रियन संयंत्रों वाली कंपनी है जो सक्रियित कार्बन प्रौद्योगिकी और नवाचार में अग्रणी के रूप में अपना स्थान जमा रहा है।

जैकोबी कार्बन्स इंडिया ने 2009 में अपनी स्थापना से लेकर निरंतर अपने प्रचालनों का विस्तार किया है ताकि बढ़ती माँग पूरा करके और उद्योग के मानदंडों से बेहतरीन बन सकें। 2011 और 2018 में महत्वपूर्ण विस्तारण के ज़रिए कंपनी ने अपनी उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष 16000 मेट्रिक टन तक दुगुनी की।

गुणवत्ता, पर्यावरणीय प्रबंधन और कार्यस्थल सुरक्षा का उच्चतम मानक बनाए रखने के प्रति कटिबद्ध जैकोबी कार्बन्स इंडिया को गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के लिए आईएसओ 9001:2015, पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली के लिए 14001:2015 और स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली के लिए 45001:2018 जैसे प्रतिष्ठित प्रमाणीकरण प्राप्त हैं। इसके अलावा फैक्टरी को सामाजिक जवाबदेही के लिए कोशर, हलाल, एनएसएफ-41, एनएसएफ-62 और एसएमईटीए के प्रमाणन भी हासिल हैं जो नैतिक आचरण और अनुपालन के प्रति कंपनी का समर्पण दर्शाता है।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें:

एफ.सं.580 और 581, मेट्टुबावी गांव, वटसितूर डाक,
किनात्तुकटव तालुक, कोयंबतूर, तमिलनाडु - 641 202
दूरभाष: 0422-4397208

ई-मेल:-thomas.antony@jacobi.net

मैरिको लिमिटेड: नवाचार और टिकाऊपन के ज़रिए जीवन को सशक्त बनाते हुए

मैरिको भारत के उपभोक्ता उत्पाद परिदृश्य में, विशेषतया सौंदर्य और खुशहाली के क्षेत्र में उत्कृष्टता की मशाल के रूप में खड़ा है। कंपनी का मुख्यालय मुम्बई में है और एशिया तथा अफ्रीका के 25 से अधिक देशों के उभरते बाज़ारों में इसकी उपस्थिति है। वे भारत में पुदुच्चेरी, पेरुंदुरै, जलगांव, गुवाहटी और सानंद में स्थित छह अधुनातन फैक्टरियों का संचालन करते हैं और गुणवत्ता एवं नवाचार में अपनी प्रतिबद्धता के ज़रिए उद्योग के मानदंडों को नए सिरे से परिभाषित करते हैं।

घर घर में सुपरिचित पैराशूट, हेयर एंड केयर, पैराशूट एड्वान्सड और निहार नैच्युरल्स से लेकर मेडिकर, प्योर सेन्स, कोको सॉल, रिवाइव, सेट वेट, लिवाँन, बेडों, जस्ट हर्ब्स, टू एलमेंट्स और प्लिक्स जैसे नए पसंदों तक कंपनी के उत्पाद उत्कृष्टता और प्रभावोत्पादकता के नए अवतार हैं। मैरिको ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में लगभग 1.2 बिलियन यूएस डालर का कारोबार किया है जो उनके ज़बर्दस्त कार्यनिष्पादन और उपभोक्ताओं के अटूट भरोसे को दर्शाता है।

सर्वांगीण टिकाऊपन और सामाजिक जवाबदेही के संकल्प से प्रेरित होकर मैरिको ने प्रतिगामी एकीकरण एवं सामुदायिक सशक्तिकरण की ओर परिवर्तनकारी सफर शुरू किया। पैराशूट कल्पवृक्ष फाउंडेशन की स्थापना से यह साफ ज़ाहिर होता है कि भारतीय किसानों के जीवन में वास्तविक बदलाव लाने के प्रति मैरिको कितना प्रतिबद्ध है। इस पहल से मैरिको देशभर में, खासतौर पर तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश में, किसानों की आजीविका में प्रगति लक्षित करता है।

लगभग 3.1 लाख एकड़ बागानों को शामिल करते हुए 80,000 से अधिक किसानों को सम्मिलित करके मैरिको की पहल समर्थन तंत्र की एक विस्तृत श्रेणी समेट लेती है जो कृषि उत्पादकता को संभालना और टिकाऊ खेती विधियों को बढ़ावा देना लक्षित करता है। 100 से अधिक वैज्ञानिकों और कृषिविज्ञानियों सहित उनका समर्पित टीम नियमित रूप से किसानों के पास जाती है और मूल्यवान जानकारीयें प्रदान करती है और उनकी उत्पादकता बढ़ाने में तकनीकी सहायता करती है।

उत्पादकता सुधार कार्यक्रम के अलावा मैरिको फोन पर कृषि विशेषज्ञों से परामर्श का अवसर, एग्रि बिजिनेस सेंटर्स (एबीसी) की स्थापना, फार्म तालाब के निर्माण द्वारा जल संरक्षण गतिविधियों का कार्यान्वयन, कल्पवृक्ष ज्ञान केंद्र के द्वारा किसानों को कक्षा प्रशिक्षण आदि जैसी सेवाएं भी प्रदान करता है।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें:

7वाँ तल, ग्रैंड पल्लोडियम, 175 सीएसटी रोड, कलिना,

सांताक्रूज पूर्व, महाराष्ट्र - 400 098

दूरभाष: 022-66480480

ई-मेल: shrikant.naik@marico.com

केएलएफ निर्मल इंडस्ट्रीस प्राइवेट लिमिटेड: निर्मलता और नवाचार का धरोहर

खाद्य तेल उद्योग में 75 वर्षों से अधिक तजुर्बा युक्त केएलएफ निर्मल देश में सबसे अधिक बिकने वाले नारियल तेल ब्रैंडों में से एक है। शुद्धता एवं गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता के लिए विख्यात इस कंपनी को केरल के तृशूर जिले के इरिंजालकुटा तथा तमिलनाडु के ईरोड जिले के पेरेन्दुराई में अधुनातन नारियल तेल निरस्यंदन और पैकेजिंग संयंत्र हैं। नारियल तेल की हरेक बूँद परिशुद्धता और पौष्टिकता से भरने हेतु कंपनी खोपरा प्रापण से लेकर प्रसंस्करण और पैकेजिंग तक नारियल तेल के लिए उच्चतम गुणवत्ता पैरामीटरों का सख्त अनुपालन सुनिश्चित करती है और इससे देशभर के गृहों में केएलएफ निर्मल एक भरोसेमंद नाम बन गया है।

केएलएफ की स्थापना दूरदर्शी व्यवसायी स्वर्गीय श्री के.एल. फ्रैन्सिस ने की थी और कंपनी की नवाचार और उत्कृष्टता की विरासत बेशकीमती है। उनके नेतृत्व में कंपनी ने नारियल दूध, विर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, शिशु तेल एवं नारियल साबुन आदि प्रसंस्कृत नारियल उत्पादों की विस्तृत श्रेणी शामिल करते हुए अपने उत्पादों का विविधीकरण किया। भिन्न रुचियों और पसंदों को ध्यान में रखते हुए बीस विभिन्न नारियल आधारित उत्पादों के साथ केएलएफ निर्मल ने नारियल-आधारित उपभोक्ता सामग्रियों की सीमाओं को नए सिरे से परिभाषित करना जारी रखा है।

उच्चतम खाद्य सुरक्षा मानकों और पर्यावरणीय प्रबंधन के प्रति केएलएफ की प्रतिबद्धता से कंपनी ने आईएसओ

22000 प्रमाणीकरण, एचएसीसीपी प्रमाणीकरण तथा बीआरसी प्रमाणपत्र सहित प्रतिष्ठित प्रमाणीकरण हासिल किया है जो गुणवत्ता और सुस्थिरता के प्रति कंपनी की निष्ठा रेखांकित करती है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

VIII/295, फा.डिसमस रोड, इरिंजालकुटा, तृशूर,
केरल - 680125, मोबाइल : 9447027174

ई-मेल: exports@klfnirmal.com

मेष्कुकाट्टिल मिल्स : नारियल प्रसंस्करण में सुस्थिरता का समर्थन करते हुए

मेष्कुकाट्टिल मिल्स गुणवत्ता, नवाचार तथा सुस्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए तकरीबन पाँच दशकों से केरल के नारियल उद्योग के प्रतिष्ठित नाम रहे हैं। मेष्कुकाट्टिल मिल्स तरह तरह के नारियल उत्पादों के विनिर्माण, पैकिंग तथा निर्यात में विशेषज्ञता प्राप्त की है और नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल और डेसिकेटड नारियल पाउडर जैसे पारंपरिक उत्पादों के साथ साथ नारियल पेस्ट, सूपरफाइन पाउडर, आटा, मक्खन तथा चिप्स जैसे नवीन उत्पाद भी पेश किए हैं।

सरकार द्वारा प्रमाणित स्टार एक्सपोर्ट हाउस की मान्यता प्राप्त मेष्कुकाट्टिल मिल्स अपने शून्य-अपशिष्ट पहलों के ज़रिए पर्यावरणीय संरक्षण में अग्रणी रहा है। मज़बूत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियाँ तथा अपशिष्ट पानी के पुनर्चक्रण के कार्यान्वयन द्वारा कंपनी नारियल उद्योग में सुस्थिर विनिर्माण रीतियों के लिए मिसाल कायम किया है।

कंपनी गुणवत्ता और नवाचार के प्रति प्रतिबद्ध है तथा एफआईसीसीआई का मेड इन केरल का प्रतिष्ठित पुरस्कार सहित अनगिनत पुरस्कार और प्रमाणीकरण प्राप्त कर चुकी हैं। उन्होंने नारियल तेल के लिए बीआईएस प्रमाणीकरण प्राप्त किया है। अन्य प्रमाणीकरणों में अंतर्राष्ट्रीय मानक जैसेकि एफएसएससी 22000, आईएसओ 9001 और एचएसीसीपी शामिल हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

IV/43, चुणंगमवेली, एरुमतला, आलुवा, एरणकुलम,
केरल - 683112

दूरभाष: 0484-2837533

ई-मेल : mezhukkattil@gmail.com

फेयर एक्सपोर्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड: वैश्विक व्यापार और सामुदायिक विकास को संजोते हुए

फेयर एक्सपोर्ट्स इंडिया प्रा.लि. प्रतिष्ठित लुलु ग्रूप इंटरनेशनल का हिस्सा है जो वैश्विक खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में सक्रिय खिलाड़ी है। फल, सब्जियाँ, वस्त्र, घरेलू सामग्रियाँ, तुरंत खाने योग्य स्नैक्स, तेज़ी से बिकने वाले उपभोक्ता सामान(एफएमसीजी) एवं मछली तक इनका व्यापार क्षेत्र फैला हुआ है और फेयर एक्सपोर्ट्स अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में नवाचार और उत्कृष्टता का प्रतीक है।

श्री यूसफ अली एम.ए. के दूरदर्शी नेतृत्व में कंपनी मध्यपूर्व के लिए ताज़ा नारियल के प्रमुख निर्यातक के रूप में उभर आयी है जो इस क्षेत्र के प्रवासी भारतीयों की आवश्यकताओं की आपूर्ति करती है। आयातित बेहतरीन मशीनरी, आधुनिक उत्पादन विधियाँ एवं समर्पित विशेषज्ञों की दक्ष टीम के साथ यह कंपनी अपने उत्पादों में उच्चतम गुणवत्ता मानक सुनिश्चित करती है।

निर्यात क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन को पहचान कर भारत सरकार ने इस कंपनी को सुविधाजनक ढंग से व्यवसाय चलाने हेतु त्री स्टार एक्सपोर्ट हाउस की पदवी एवं प्राधिकृत आर्थिक संचालक(ईओ) के प्रमाणपत्र से पुरस्कृत किया है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

501 माधव बिल्डिंग्स, बांद्रा कुरला कॉम्प्लेक्स,

बांद्रा ईस्ट, मुम्बई, महाराष्ट्र - 400051

मोबाइल: 09920341233

ई-मेल: rameshiyer196@gmail.com

लाला एग्रो ट्रोपिक प्राइवेट लिमिटेड: नारियल खोपड़ियों से पर्यावरण अनुकूल समाधान निकालते हुए

केरल के एरणाकुलम में स्थित सर्वश्री लाला एग्रो ट्रोपिक प्राइवेट लिमिटेड एक अग्रणी कंपनी है जो नारियल खोपड़ियों से उपयोगी सामग्रियाँ बनाने में विशेषज्ञता प्राप्त की है। कूड़े को कमाई में बदलने के उद्देश्य से लाला एग्रो ट्रोपिक नारियल खोपड़ी आइसक्रीम कप तथा बर्ड फीडर जैसे पर्यावरण अनुकूल उत्पादों का विनिर्माण देशीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों की अपेक्षाओं के अनुसार करती है।

कंपनी की स्थापना वर्ष 1994 में नारियल खोपड़ी आधारित आइसक्रीम कप की आपूर्ति हेतु एक स्वामित्व निकाय के रूप में हुई थी और तीन दशकों में लाला एग्रो

ट्रोपिक ने अपने उत्पादों की श्रेणी विकसित करने में सक्षम हुआ। आज, कंपनी नारियल खोपड़ी से तरह तरह की हस्तशिल्प सामग्रियाँ बनाती है जो सुस्थिरता एवं नवाचार के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता का मिसाल है।

तमिलनाडु एवं केरल से कच्ची सामग्रियाँ प्राप्त की जाती हैं और केरल के एरणाकुलम जिले के कूवप्पटी एवं कालटी में स्थित अधुनातन प्रसंस्करण इकाइयों में इनका प्रसंस्करण करते हैं। कंपनी आगामी वर्षों में नारियल खोपड़ी से बर्ड नेस्ट, कटलरी और अन्य उपयोगी सामग्रियाँ बनाने एवं आस्ट्रेलिया एवं यूरोपीय संघ के देशों में अपने बाज़ार का विस्तार करने की योजना बना रही है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

IX/285 -A, एलम्बकपिल्ली डाक, कूवप्पटी,पेरुम्बावूर,
एरणाकुलम, केरल-683574

दूरभाष : 0484-2641544

ई-मेल : lalaagro@gmail.com

वाशिनी एक्सपोर्ट्स : कुदरत के उपहार को सरगमी और सटीकता से संजोते हुए

दक्षिण भारत में 70 साल पहले स्थापित वाशिनी एक्सपोर्ट्स उष्णकटिबंधीय फलों के निर्यात में वैश्विक स्तर पर प्रमुख कंपनी है जो विशेष रूप से नारियल के निर्यात पर ध्यान केंद्रित करती है। उनके पास 3900 एकड़ का जैव फार्म है जहाँ 300,000 नारियल पेड़ हैं जिससे प्रतिवर्ष 80 दशलक्ष नारियल की उपज प्राप्त होती है।

उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता के साक्ष्य के रूप में सरकार एवं औद्योगिक निकायों से इनको विभिन्न पुरस्कार

भारतीय नारियल पत्रिका के वार्षिक चंदे का नवीनीकरण

यदि आपने भारतीय नारियल पत्रिका के वार्षिक चंदे का अब तक नवीनीकरण नहीं करवाया है तो कृपया बोर्ड का खाता: भारतीय स्टेट बैंक, इय्याट्टिल जंक्शन, एरणाकुलम शाखा : खाता सं.: 61124170321, आईएफएससी: SBIN 0031449 में नेफ्ट/भीम/फोन पे/गूगल पे के ज़रिए शुल्क अदा करें। अधिक जानकारी के लिए बोर्ड की वेबसाइट www.coconutboard.gov.in या <https://www.coconutboard.in/journalsubscription/home.aspx> देखें।

प्राप्त हुए हैं। वर्तमान में वाशिनी एक्सपोर्ट्स के अधीन 2000 सशक्त किसान कार्यरत हैं। कंपनी टिकाऊ जैव खेती रीतियों को प्राथमिकता देती है जो उच्च गुणवत्तायुक्त नारियलों का उत्पादन सुनिश्चित करता है।

अपनी गुणवत्ता परीक्षण इकाई और 50,000 वर्ग फीट की भंडारण सुविधा के साथ वाशिनी एक्सपोर्ट्स साल भर उच्च गुणवत्ता के नारियल और नारियल आधारित उत्पादों की आपूर्ति की गारंटी देती है। ध्यानपूर्वक प्रसंस्कृत और पैक किए गए इन उत्पादों का निर्यात दक्षिण भारत के पोल्लाची से विश्व भर के 25 देशों को विभिन्न खाद्य सामग्रियाँ तैयार करने के लिए किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

श्रीराम विजय हाइड पार्क, बी ब्लॉक 303,
दुरैस्वामी ले आउट, पीलीमेट, कोयंबतूर,
तमिलनाडु - 641004

मोबाइल: 09842290222

ई-मेल : info@vashiniexports.com,

vashiniexports@yahoo.com

कारब्यूर एक्टीवेटेड कार्बन प्राइवेट लिमिटेड: सक्रियित कार्बन उत्पादन में उत्कृष्टता को सशक्त करते हुए

कारब्यूर एक्टीवेटेड कार्बन प्राइवेट लिमिटेड के मालिक सुश्री कृत्तिका टी. और श्री सुरेश आर. हैं। यह कंपनी एक प्रमुख प्रसंस्करण इकाई है जो सक्रियित कार्बन के विनिर्माण में विशेषज्ञता प्राप्त है। अंतर्राष्ट्रीय मानक गुणवत्ता के सक्रियित कार्बन के उत्पादन के उद्देश्य से वर्ष 2020 में स्थापित इस कंपनी का उत्पादन संयंत्र तमिलनाडु के पल्लाटम में है।

आईएसओ 9001/14001/जीएमपी, जीएमपी, कोशर और हलाल प्रमाणीकरण प्राप्त कारब्यूर एक्टीवेटेड कार्बन प्राइवेट लिमिटेड उत्कृष्टता और उद्यमिता में समावेशिता का मिसाल है। उत्पादन संयंत्र की परिकल्पना प्रति वर्ष 6000 मेट्रिक टन नारियल आधारित सक्रियित कार्बन के उत्पादन के लिए की गई है। कंपनी मानक एवं मूल्यवर्धित कार्बन से भिन्न उपभोक्ता अपेक्षाओं को पूरी करती है।

कारब्यूर एक्टीवेटेड कार्बन प्राइवेट लिमिटेड सक्रियित कार्बन उद्योग में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के साथ साथ बेमिसाल गुणवत्ता तथा उपभोक्ता संतुष्टि की ओर

मार्ग प्रशस्त करते हुए प्रेरणा एवं नवाचार की मशाल के रूप में सेवारत है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

कोंडासामी ले आउट, मसाकलीपालयम, लक्ष्मीपुरम,
पीलामेट, कोयंबतूर, तमिलनाडु - 641004

दूरभाष : 0422-2570752

नेटा न्यूट्रिको कोकनट फुड प्रोडक्टस: स्वस्थ एवं प्राकृतिक पेय विनिर्माण में अग्रणी

दस साल से अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान के बाद वर्ष 2019 में नेटा न्यूट्रिको ब्रैंड के सफर की शुरुआत हुई और यह भारत के प्रथम और एकमात्र नेटा डी कोको उत्पादन कंपनी है। नारियल विकास बोर्ड द्वारा वित्तपोषित और स्टार्ट अप इंडिया द्वारा अनुसमर्थित नेटा न्यूट्रिको अपने नवाचारी एवं पौष्टिक उत्पादों से पेय उद्योग का आमूल परिवर्तन करने के लिए समर्पित है।

नेटा न्यूट्रिको प्रारंभ में नारियल पानी से प्राप्त उत्पाद नेटा डी कोको पर ध्यान केंद्रित किया जो दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में अत्यधिक लोकप्रिय है। नेटा न्यूट्रिको ने भारत में इस स्वादिष्ट भोज्य को अद्वितीय पौष्टिक लाभ निहित आहार के रूप में पेश किया। नेटा न्यूट्रिको की हरेक बैच गुणवत्ता एवं स्वाद के उच्चतम मानक में विनिर्मित करने के लिए यह कंपनी अपने बहुमूल्य अनुभव और विशेषज्ञता के आधार पर निरंतर विभिन्न उत्पादन तकनीकों को प्रयोग में लाती है तथा सख्त गुणवत्ता सुधार करती है।

उच्च गुणवत्ता के स्वास्थ्य एवं पेय उत्पादों का विनिर्माण करने की प्रतिबद्धता से आगे बढ़ते हुए, नेटा न्यूट्रिको प्राकृतिक पेय क्रांति के अग्रगामी है। मात्र प्यास बुझाती ताज़गी ही नहीं बल्कि भरपूर पोषण भी देने के उद्देश्य से कंपनी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वस्थ और पौष्टिक पेय विकसित करने में मार्ग प्रशस्त कर रही है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

केए 582 ए1, ज़िम्स, मणिक्कावु रोड,

C/o दीपिका निवास, कण्णुकरा कण्णूर, केरल - 670012

मोबाइल: 9895779686

ई-मेल : ceo@natanutrico.in

कृषि ओड़िशा-2024

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, ओड़िशा सरकार ने एफआईसीसीआई के सहयोग से जनता मैदान, भुवनेश्वर में 12 से 14 जनवरी 2024 तक 'कृषि में महिलाओं का जश्न मनाना' विषय पर राज्य स्तरीय कृषि प्रदर्शनी कृषि ओड़िशा 2024 आयोजित की। कृषि ओड़िशा 2024 ने महिला किसानों, स्वयं-सहायता समूहों, महिला कृषि-उद्यमियों, बाज़ार खिलाड़ियों और सेवा प्रदाताओं के बीच संवाद और सहयोग के लिए मंच प्रदान किया। कार्यक्रम के सिलसिले में प्रदर्शनी, निवेशक बैठक, किसान-वैज्ञानिक संवाद, किसानों का अभिनंदन, विस्तार कार्यकर्ता सम्मेलन और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि आयोजित किए गए।



बोर्ड का स्टाल

माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक ने 12 जनवरी 2024 को राज्य स्तरीय कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पित्तापल्ली ने विभिन्न नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों प्रदर्शित किए। लगभग 600 किसानों सहित 2000 लोगों ने नारियल विकास बोर्ड के स्टाल का दौरा किया। नारियल विकास बोर्ड के पदाधिकारियों ने नारियल खेती प्रौद्योगिकी, मूल्य वर्धित उत्पादों, बोर्ड की विभिन्न चालू योजनाएं आदि के बारे में आगंतुकों को संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। बोर्ड की विभिन्न योजनाओं और नारियल के गुणों पर जागरूकता पैदा करने के लिए आगंतुकों को लीफलेट, पुस्तिकाएं और पत्रिकाएं भी वितरित किए गए।

55वाँ श्री रामकृष्ण मेला

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पश्चिम बंगाल ने 18 से 21 जनवरी 2024 तक नरेंद्रपुर रामकृष्ण मिशन आश्रम, दक्षिण परगना जिला में संपन्न 55वें श्री रामकृष्ण मेला और प्रदर्शनी में भाग लिया। बोर्ड ने अपनी योजनाओं और नारियल के गुणों पर विभिन्न सूचनात्मक पोस्टर और बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए। बोर्ड ने अपने स्टाल में विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे विर्जिन नारियल तेल, डाब, नारियल तेल, हस्तशिल्प वस्तुएं, विभिन्न नारियल पौधे आदि प्रदर्शित किए।



बोर्ड का स्टाल

एग्रि विशन

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ओड़िशा ने आईसीएआर-एनआरआरआई, कट्टक में 19 से 21 जनवरी 2024 तक संपन्न एग्रि विशन प्रदर्शनी में भाग लिया। बोर्ड ने अपनी योजनाओं और नारियल के गुणों पर विभिन्न सूचनात्मक पोस्टर और बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए। नाविबो के स्टाल में विर्जिन नारियल तेल, नारियल चिप्स, नीरा, डाब पानी, नारियल तेल और हस्तशिल्प जैसे विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों प्रदर्शित किए गए।



बोर्ड के स्टाल में आगंतुक

नारियल विकास बोर्ड ने 44वाँ स्थापना दिवस मनाया

किसान संगोष्ठी

नारियल विकास बोर्ड ने केरल के आलप्पुषा में 12 जनवरी 2024 को अपने 44वें स्थापना दिवस पर किसान संगोष्ठी आयोजित की। डा. रेजी जेकब, प्रधान, आईसीएआर-सीपीसीआरआई प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में नारियल खेती की संभावनाओं और प्रसंस्करण तथा मूल्य वर्धन में आगे बढ़ने की आवश्यकता पर बात की। श्रीमती मिनी मैथ्यू, सहायक निदेशक (प्रचार एवं जनसंपर्क), नाविबो ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री कट्टानम षाजी, अध्यक्ष, ओणाट्टुकरा नारियल उत्पादक कंपनी; एडवोकेट थोमस एम. मात्तुण्णी, प्रेसिडेंट, भरणिक्कावु पंचायत नारियल उत्पादक फेडरेशन और डा. रमणी गोपालकृष्णन, भूतपूर्व निदेशक, नाविबो और सीईओ, ओणाट्टुकरा नारियल उत्पादक कंपनी ने इस अवसर पर बात की। श्रीमती मिनी मैथ्यू, सहायक निदेशक ने कार्यक्रम और नारियल विकास बोर्ड की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। डा. जिलु वी साजन,



डा. रेजी जेकब, प्रधान, सीपीसीआरआई, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम उद्घाटन भाषण देते हुए

वैज्ञानिक, सीपीसीआरआई ने वैज्ञानिक नारियल खेती पर भाषण दिया और श्रीमती विन्सी वर्गीस, विकास अधिकारी, नाविबो ने नारियल प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में लगभग 300 किसानों, आलप्पुषा जिला कृषि विभाग, नारियल विकास बोर्ड और केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान से अधिकारियों ने भाग लिया। किसान संगोष्ठी के साथ साथ नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगायी गई।

नारियल में मूल्य वर्धन पर जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम

नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था ने नाविबो के स्थापना दिवस के सिलसिले में किसानों/उद्यमियों/महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए नारियल में मूल्य वर्धन पर जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में दक्षिण वाष्वकुलम ग्राम पंचायत के तहत विभिन्न वाडों से 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में जागरूकता सत्र के अलावा तीन नारियल उत्पादों का निदर्शन भी शामिल था।



जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागी

जिला स्तरीय संगोष्ठियाँ

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, तमिलनाडु ने नाविबो स्थापना दिवस के सिलसिले में कृषि विज्ञान केंद्र, कृष्णागिरी के सहयोग से जिला स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी में लगभग 100 भागीदारों ने भाग लिया। नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, कर्नाटक ने स्थापना दिवस के सिलसिले में कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रबीड फार्म, मंड्या और कृषि विज्ञान

केंद्र, मंड्या के सहयोग से कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशिक्षण हॉल में जिला स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। तकरीबन 100 सहभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया। नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, बिहार ने स्थापना दिवस के सिलसिले में कृषि विज्ञान केंद्र, माधोपुर, पश्चिम चंपारण में जिला स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। नाविबो, राज्य केंद्र, आंध्र प्रदेश ने



स्थापना दिवस के सिलसिले में डा.वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय-बागवानी अनुसंधान स्टेशन, विजयराय, एलुरु जिले में जिला स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। नाविबो, राज्य केंद्र, पश्चिम बंगाल ने स्थापना दिवस के सिलसिले में

12 जनवरी 2024 को रामकृष्ण आश्रम, धन्यगंगा कृषि विज्ञान केंद्र, मुर्शीदाबाद में जिला स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी में 200 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

प्रखंड स्तरीय संगोष्ठियाँ

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, असम; नाविबो, राज्य केंद्र, ओड़िशा; प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम, केरल; प्रबीउ फार्म, अभयपुरी, असम; प्रबीउ फार्म, मधेपुरा, बिहार; प्रबीउ फार्म, धली, तमिलनाडु; प्रबीउ फार्म, हिच्चाचरा, त्रिपुरा; प्रबीउ फार्म, कोंडागांव, छत्तीसगढ़ और क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम ने बोर्ड के 44वें स्थापना दिवस के सिलसिले में प्रखंड स्तरीय संगोष्ठियाँ आयोजित कीं।



स्थापना दिवस के सिलसिले में बोर्ड के विविध कार्यालयों में आयोजित प्रखंड स्तरीय संगोष्ठियों की झलक

वैज्ञानिक नारियल खेती और गुणवत्तापूर्ण पौध उत्पादन में प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर-सीपीसीआरआई ने 19 दिसंबर 2023 को पनत्तटी में रानीपुरम किसान उत्पादक कंपनी के सहयोग से सीपीसीआरआई के अनुसूचित जनजाति संघटक (एसटीसी) योजना के तहत अनुसूचित जनजाति किसानों के लिए 'वैज्ञानिक नारियल खेती और गुणवत्तापूर्ण पौध उत्पादन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। डा.के.बी.हेब्बार, निदेशक, आईसीएआर-सीपीसीआरआई ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डा.हेब्बार ने अनुसूचित जनजाति किसानों को एसटीसी के तहत नारियल पौधों के वितरण का भी उद्घाटन किया। श्रीमती प्रसन्ना प्रसाद, प्रेसिडेंट, पनत्तटी ग्राम पंचायत ने



एसटीसी योजना के तहत नारियल पौधों का वितरण उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। डा.पी.सुब्रमणियन, प्रधान, फसल उत्पादन प्रभाग, डा.तम्पान सी., प्रधान वैज्ञानिक एवं डा.के.शंसुद्दीन, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न विषयों को संभाला। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 124 अनुसूचित जनजाति किसानों ने भाग लिया।

किसान कल्याण मेला 2024

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी, पूर्व चंपारण में 10 से 12 फरवरी 2024 तक आयोजित किसान कल्याण मेला 2024 में भाग लिया। बोर्ड ने विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे कि विर्जिन नारियल तेल, नीरा, नारियल चिप्स, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, नारियल आधारित हस्तशिल्प वस्तुएं और विभिन्न किस्मों के नारियल गुच्छे प्रदर्शित किए। बोर्ड के स्टॉल में नारियल खेती और नारियल खाद्य उत्पादों पर सूचनापरक चार्ट, बोर्ड द्वारा प्रकाशित पुस्तिकाएं और पत्रिकाएं भी प्रदर्शित किए गए।



बोर्ड का स्टाल

नीरा-कोको नेक्टर का पहला प्रेषण यूएसए के लिए कोची पोर्ट से फ्लाग ऑफ किया गया

कोको नेक्टर - ग्लोबल कोकनट फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (जीसीएफपीसीएल) तिरुपुर, तमिलनाडु द्वारा उत्पादित रेडी टु ड्रिंक नीरा का पहला प्रेषण कोची पोर्ट से यूएसए के लिए सीपीसीआरआई के निदेशक और नारियल विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष डा.के.बी.हेब्बार ने 17 फरवरी 2024 को सीएफएसएम IV लॉजिस्टिक्स प्राइवेट लिमिटेड, वल्लारपाटम, कोची के परिसर में फ्लाग ऑफ किया। इस अवसर पर आशीर्वाचन देते हुए डा. हेब्बार ने वैश्विक बाजार में प्रवेश करने के लिए ग्लोबल सीपीसी को बधाई दी और आगे बताया कि यह कंपनी के 1200 सदस्य किसानों के प्रयासों का परिणाम है। ग्लोबल सीपीसी के निदेशक श्री बालासुब्रमणियन ने कहा कि कंपनी हर महीने एक कंटेनर निर्यात करने के लिए अधिक काम करेगी। इस अवसर पर मुख्य नारियल विकास अधिकारी डा. बी. हनुमंते गौडा ने भाषण



डा.के.बी.हेब्बार यूएसए के लिए कोको नेक्टर का पहला प्रेषण फ्लाग ऑफ करते हुए

दिया। रीजेंट नॉर्थ अमेरिका एलएलसी संयुक्त राज्य अमेरिका में उत्पाद का आयातक है। कार्यक्रम में श्री जयचंद्रन भा.रा.से., सीमा शुल्क उपायुक्त; श्री अजय कुमार, सीमाशुल्क अधीक्षक; श्री सुशांत अवस्थी, निदेशक डीपी वर्ल्ड; श्री आर.मधु, सचिव, नारियल विकास बोर्ड और ग्लोबल कोकोनट फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

कर्षकश्री कार्षिक मेला

नारियल विकास बोर्ड ने एमएसपी ग्राउंड, मलाप्पुरम जिला, केरल में 31 जनवरी से 4 फरवरी 2024 तक संपन्न कर्षकश्री कार्षिक मेला में भाग लिया। श्री वी.आर.विनोद भा.प्र.से., मलाप्पुरम जिलाधीश ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। बोर्ड ने अपनी योजनाओं और नारियल के गुणों पर विभिन्न सूचनात्मक पोस्टर तथा बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए। बोर्ड के स्टॉल में विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों की बिक्री सह प्रदर्शनी की भी व्यवस्था की गई थी।



बोर्ड का स्टाल

सुश्री शोभा करंदलाजे ने नाविबो, प्रबीउ फार्म, अभयपुरी के नए कार्यालय भवन का लोकार्पण किया

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे ने 13 मार्च 2024 को प्रबीउ फार्म, अभयपुरी, असम में नारियल विकास बोर्ड के नए कार्यालय भवन का वर्चुअल तरीके से उद्घाटन किया। मंत्री ने भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में नारियल खेती में सुधार के लिए समर्पित प्रयासों के लिए नारियल विकास बोर्ड की सराहना की। उन्होंने उत्तर भारत के लोगों को खाद्य और गैर-खाद्य दोनों उद्देश्यों के लिए नारियल तेल का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया और इसके कई लाभों पर ज़ोर दिया।



कार्यालय भवन के उद्घाटन समारोह की झलक

प्रबीउ फार्मों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मंत्री ने नारियल खेती में उन्नत वैज्ञानिक प्रणालियों का प्रदर्शन करते हुए ज्ञान प्रसार केंद्र के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। नवीन प्रौद्योगिकियों और रणनीतिक योजना के अभिग्रहण के ज़रिए ये फार्म किसानों के सुस्थिर सामाजिक-आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक उपायों के साथ उन्हें सशुक्त बनाते हैं।

डा.बी.हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने उपस्थित लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया

जबकि नाविबो के निदेशक डा.रजत कुमार पाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

असम के अभयपुरी में वर्ष 1986-87 में स्थापित प्रबीउ फार्म 40 हेक्टर में फैला हुआ है और यहाँ 3,927 नारियल ताड़ हैं, जिनमें से 3,388 फलदायी या फूलदार ताड़ हैं। नवनिर्मित कार्यालय भवन 'डिजिटल इंडिया' के सिद्धांतों के अनुरूप आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। विशेष रूप से इस सुविधा में असम और पूर्वोत्तर क्षेत्र के किसानों के प्रशिक्षण के लिए डिज़ाइन किया गया एक प्रशिक्षण कक्ष भी शामिल है।

नाविबो ने अरुणाचल प्रदेश में नारियल के पहलुओं और संभावनाओं पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने बागवानी विभाग, निचली दिबांग घाटी जिले के सहयोग से आदि गिडी नोट्को हॉल, रोइंग, निचली दिबांग घाटी जिला, अरुणाचल प्रदेश में 6 मार्च 2024 को नारियल उत्पादन एवं मूल्य वर्धन के पहलुओं और संभावनाओं पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। श्रीमती सौम्या वैभव भा.प्र.से.,

उपायुक्त, निचली दिबांग घाटी जिला कार्यक्रम की मुख्यातिथि रही।

टोणी बोरंग, जिला परिषद अध्यक्ष, निचली दिबांग घाटी जिला; डा.रजत कुमार पाल, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी; डा शरत सैकिया, प्रधान वैज्ञानिक, असम कृषि विश्वविद्यालय-बागवानी अनुसंधान

केंद्र, काहिकुची, गुवाहटी; श्री जीबोम एंगु, संयुक्त निदेशक (बागवानी), अरुणाचल प्रदेश सरकार; श्री कुरु अमा, जिला बागवानी अधिकारी, रोइंग, निचली दिबांग घाटी जिला; डा.उत्पल बरुआ, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, नामसाई और डा.दीपांजली देवरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, रोइंग कार्यक्रम में उपस्थित हुए। अन्य गणमान्य व्यक्ति यों के साथ साथ दो प्रगतिशील नारियल किसानों और निचली दिबांग घाटी के उपायुक्त को बैठक के दौरान सम्मानित किया गया। संगोष्ठी स्थान पर नारियल मूल्य वर्धित खाद्य उत्पाद और हस्तशिल्प वस्तुओं के प्रदर्शन की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम में किसानों, वैज्ञानिकों, विभागीय अधिकारियों और विभिन्न विभागों से प्रतिनिधियों सहित लगभग 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डा.रजत कुमार पाल, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने स्वागत भाषण दिया। श्रीमती सौम्या वैभव भा.प्र.से., उपायुक्त ने निचली दिबांग घाटी जिले में राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित करने के लिए नारियल विकास बोर्ड की सराहना की क्योंकि यह संगोष्ठी क्षेत्र में किसानों को नारियल की खेती करने के लिए प्रेरित करेगी।



श्रीमती सौम्या वैभव भा.प्र.से., उप आयुक्त मुख्य अतिथि का भाषण देती हुई

टोणी बोरान्ग, जिला परिषद अध्यक्ष और डा. शरत सैकिया, प्रधान वैज्ञानिक, असम कृषि विश्वविद्यालय-बागवानी अनुसंधान केंद्र, काहिकुची ने इस अवसर पर भाषण दिया। तदुपरांत संपन्न तकनीकी सत्र में श्री कुरु अमा, जिला बागवानी अधिकारी, निचली दिबांग घाटी जिला; डा.शरत सैकिया, प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान केंद्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची; डा.उत्पल बरुआ, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, नामसाई; श्री मृदुल तालुकदार, बागवानी सहायक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय और श्री कौशिक दास, क्षेत्र परामर्शदाता (विपणन), नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने विभिन्न विषयों पर बात की।

गुवाहटी में नारियल उत्पादन एवं मूल्य वर्धन के पहलुओं और संभावनाओं पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने बाणीकांत काकति ऑडिटोरियम हॉल, श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, पंजबारी, गुवाहटी में 29 फरवरी 2024 को नारियल उत्पादन एवं मूल्य वर्धन के पहलुओं और संभावनाओं पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। श्री अतुल बोरा, कृषि मंत्री, असम सरकार कार्यक्रम के मुख्यातिथि रहे। श्री घनश्याम दास, कार्यकारी सदस्य, बोडोलैंड स्वायत्त परिषद, कोकराझार; श्री तिरंगा भारतीय बोरा, निदेशक (बागवानी एवं खाद्य प्रसंस्करण), खानापारा, गुवाहटी; श्री नवीन चंद्र रॉय, महा प्रबंधक, नबार्ड, दिसपुर, गुवाहटी; डा.राजेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-एटीएआरआई, ज़ोन VI, काहिकुची, गुवाहटी; डा.प्रदीप महंता, प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान केंद्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची; डा.अल्पना दास, हेड, सीपीसीआरआई, काहिकुची, गुवाहटी; डा.समिरन पथक,



राज्य स्तरीय संगोष्ठी में मंच का दृश्य

प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान केंद्र, काहिकुची, गुवाहटी और डा.चारु लता मेहता, प्रोफेसर, खाद्य इंजीनियरी एवं प्रौद्योगिकी विभाग, तेज़पुर विश्वविद्यालय, तेज़पुर ने कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर राज्य में नारियल क्षेत्र के विकास में योगदान देने वाले प्रगतिशील नारियल उत्पादकों, ग्रूप नेताओं, कृषि अधिकारियों और कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों

को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सिलसिले में नारियल खाद्य उत्पादों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। कार्यक्रम में किसानों, एफपीसी सदस्यों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों, विभागीय अधिकारियों और विभिन्न विभागों से प्रतिनिधियों सहित 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डा.रजत कुमार पाल, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने स्वागत भाषण दिया। श्री अतुल बोरा, माननीय कृषि मंत्री, असम सरकार ने अपने भाषण में बताया कि दक्षिण भारत की तरह असम में भी नारियल की खेती की जा सकती है और असम में नारियल एक आकर्षक व्यवसाय हो सकता है। श्री नवीन चंद्र रॉय, महा प्रबंधक, नबार्ड; डा.राजेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-एटीएआरआई और डा.अल्पना दास, हेड, सीपीसीआरआई, काहिकुची इस अवसर पर बात की। डा.राजेश कुमार, प्रधान

वैज्ञानिक, आईसीएआर-एटीएआरआई, ज़ोन VI, काहिकुची, गुवाहटी ने तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। उसके बाद डा.प्रदीप महंता, प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान केंद्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची, गुवाहटी ने नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर नवाचार के बारे में बात की। डा.समिरन पथक, प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान केंद्र, काहिकुची, गुवाहटी ने नारियल के एकीकृत रोग एवं कीट प्रबंधन पर बात की। डा.चारु लता मेहता, प्रोफेसर, खाद्य इंजीनियरी एवं प्रौद्योगिकी विभाग, तेज़पुर विश्वविद्यालय, तेज़पुर ने नारियल में मूल्य वर्धन की गुंजाइश (स्थानीय/देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार) और डा.रजत कुमार पाल, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने उत्तर-पूर्वी भारत में नारियल खेती के वर्तमान परिदृश्य पर भाषण दिया। श्री राजु राय, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कृषि सम्मेलन

आईसीएआर-सीपीसीआरआई अनुसंधान केंद्र, किडु, कर्नाटक में 11 मार्च 2024 को एक दिवसीय किसान बैठक (कृषि सम्मेलन) आयोजित की गई। सुश्री शोभा करंदलाजे, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री कार्यक्रम में मुख्यातिथि रही। मेले में राज्य सरकार, विकास एजेंसियों, एफपीओ, कृषि विज्ञान केंद्रों और अन्य एजेंसियों से पदाधिकारियों के साथ साथ विभिन्न जिलों से लगभग 2000 किसानों ने भाग लिया। माननीय मंत्री ने अपने भाषण में क्षेत्र के नारियल और सुपारी किसानों के हितों की रक्षा, कुछ कीटों और रोगों के अचानक फैलाव, मौजूदा मूल्य में उतार-चढ़ाव और पड़ोसी देशों से वस्तुओं के अवैध आयात रोकने के लिए केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न उपायों पर प्रकाश डाला।

डा.एस.के.सिंह, उप महानिदेशक (बाग. विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली ने समारोह की अध्यक्षता की और किसानों से उत्पादन लागत कम करने और जलवायु संकट से निपटने के लिए कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने का आग्रह किया। डा.प्रभात कुमार, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, नाविबो और बागवानी आयुक्त, भारत सरकार ने घटती फसल उत्पादकता रोकने के लिए उन्नत उच्च फलदायी किस्मों के साथ पुराने बागानों को पुनरुज्जीवित करने के लिए नारियल विकास बोर्ड योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान



सुश्री शोभा करंदलाजे, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री मुख्य अतिथि का भाषण देती हुई

किया। यूरोप/अमरिका के शाकाहारी आबादी विशेष रूप से नारियल उत्पादों की तलाश में है और उन्होंने किसानों को पर्यावरण - अनुकूल उत्पादों के बारे में सोचने, न्यूनतम पानी का उपयोग करने और बहु फसल प्रणाली अपनाने की सलाह दी। सुश्री भगीरथी मुरुलिया, विधायक, सुल्लिया ने किसानों से नई प्रौद्योगिकियों/विकासात्मक योजनाओं के बारे में जानने और लाभ उठाने हेतु कृषि सम्मेलन जैसे कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने का आह्वान किया। मेले में डा. होमी चेरियान, निदेशक, डीएसडी; डा. हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो; श्री किशोर कोडुगी, प्रेसिडेंट, कैम्को और श्री सतीश कलिंगे ने भाग लिया।

बाज़ार समीक्षा

दिसंबर 2023

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव दिसंबर 2023 महीने के दौरान कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 14000 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 14200 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 15650 रुपए पर खुला।

महीने के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ क्रमशः 13900 रुपए तथा 14100 रुपए पर बंद हुआ और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 150 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 15800 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11533 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 66 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 11467 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कोची, आलप्पुषा और कंगयम बाज़ार ने नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख दर्शाया और कोषिकोट बाज़ार में बढ़ाव का रुख रहा।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 9300 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 9350 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 9650 रुपए पर खुला। महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 300 रुपए और आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 150 रुपए की शुद्ध हानि के साथ क्रमशः प्रति किंवटल 9000 रुपए तथा 9200 रुपए पर बंद हुआ जबकि कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 200 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 9850 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 8500 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 125 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 8375 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कोची, आलप्पुषा और कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे के भाव में घटाव का रुख रहा और कोषिकोट बाज़ार में बढ़ाव का रुख रहा।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिकोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 9600 रुपए पर खुला और महीने के दौरान बढ़ाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 10400 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्टुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 8000 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 9000 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

महीने के दौरान कोषिकोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 11000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 13000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

महीने के दौरान तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 29500 रुपए पर खुला और प्रति टन 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 27500 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बेंगलूर में नारियल का भाव प्रति हजार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान लगभग उसी भाव पर स्थिर रहा। कर्नाटक के मंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 32000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान लगभग उसी भाव पर स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शित है।

जनवरी 2024

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जनवरी 2024 महीने के दौरान कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 13900 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 14100 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 15800 रुपए पर खुला।

महीने के दौरान नारियल तेल का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14400 रुपए; आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14500 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 16600 रुपए पर बंद हुआ। महीने के दौरान केरल में नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11467 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 134 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 11333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 9000 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 9200 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 9850 रुपए पर खुला।

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 600 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 350 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 700 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल क्रमशः 9600 रुपए, 9550 रुपए तथा 10550 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 8300 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 200 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 8500 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान पेषण खोपरे के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिकोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 10800 रुपए पर खुला और महीने के

दौरान घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 700 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 10100 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्टुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 9000 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 9800 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

महीने के दौरान कोषिकोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 11000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

महीने के दौरान तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 27500 रुपए पर खुला और प्रति टन 2500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति टन 30000 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बेंगलूर में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर ही स्थिर रहा।

महीने के दौरान कर्नाटक के मंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 32000 रुपए पर खुला और प्रति टन 4000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति टन 36000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शित है।

फरवरी 2024

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव फरवरी 2024 महीने के दौरान कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 14400 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 14600 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 16600 रुपए पर खुला।

महीने के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति किंवटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ भाव 14200 रुपए तथा 14400 रुपए पर बंद हुआ और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 16400 रुपए पर बंद हुआ। महीने के दौरान केरल में नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11333 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 10933 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 9600 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 9550 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 10600 रुपए पर खुला।

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 200 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 100 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति किंवटल 900 रुपए की शुद्ध हानि के साथ क्रमशः प्रति किंवटल 9400 रुपए, 9450 रुपए तथा 9700 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 8500 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 8400 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव घटाव का रुख दर्शाया।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिकोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 10400 रुपए पर खुला और महीने के

दौरान घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 600 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 9800 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्टुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 9500 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 900 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 8600 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

महीने के दौरान कोषिकोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 11000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 13000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

महीने के दौरान तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 29500 रुपए पर खुला और प्रति टन 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 28500 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बेंगलूर में नारियल का भाव प्रति हजार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर ही रहा।

महीने के दौरान कर्नाटक के मंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 36000 रुपए पर खुला और प्रति टन 4000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 32000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल का अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

बाज़ार भाव-देशीय

दिसंबर 2023

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल				
	(रु. / क्वि.)												(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषि क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि क्कोट	कंगयम	कोषि क्कोट	तिप्पूर	कोषि क्कोट	नेट्टुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ³ (1 टन)	
01.12.2023	14000	14200	15650	11533	9300	9350	9650	8500	9600	8000	11000	13000	29500	20000	32000	
09.12.2023	13900	14100	15650	11467	9000	9200	9650	8500	9200	7800	11000	13000	28500	20000	32000	
16.12.2023	13900	14100	15650	11400	9000	9200	9750	8500	9400	8207	11000	13000	28000	20000	32000	
23.12.2023	13900	14100	15750	11467	9000	9200	9850	8500	9700	7800	11000	13000	28000	20000	32000	
30.12.2023	13900	14100	15800	11467	9000	9200	9850	8375	10400	9000	11000	13000	27500	20000	32000	

जनवरी 2024

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल				
	(रु. / क्वि.)												(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषि क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि क्कोट	कंगयम	कोषि क्कोट	तिप्पूर	कोषि क्कोट	नेट्टुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ³ (1 टन)	
01.01.2024	13900	14100	15800	11467	9000	9200	9850	8300	10800	9000	11000	13000	27500	20000	32000	
06.01.2024	13900	14100	15900	11400	9000	9200	10000	8200	10400	9000	11000	13000	28000	20000	32000	
13.01.2024	14000	14200	16100	11333	9100	9300	10200	8200	10500	9600	11000	13000	28500	20000	32000	
20.01.2024	14000	14200	16400	11067	9100	9300	10400	8200	10400	10000	11000	13000	28500	20000	34000	
27.01.2024	14200	14300	16600	11067	9400	9350	10550	8350	10100	9600	11000	13000	29250	20000	36000	
31.01.2024	14400	14500	16600	11333	9600	9550	10550	8500	10100	9800	11000	13000	30000	20000	36000	

फरवरी 2024

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल				
	(रु. / क्वि.)												(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषि क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि क्कोट	कंगयम	कोषि क्कोट	तिप्पूर	कोषि क्कोट	नेट्टुमंगाट ¹	पोल्लाच्ची ²	बैंगलूर ³	मैंगलूर काला नारियल ³ (1 टन)	
01.02.2024	14400	14600	16600	11333	9600	9550	10600	8500	10400	9500	11000	13000	29500	20000	36000	
03.02.2024	14400	14600	16600	11333	9600	9650	10600	8500	10300	9600	11000	13000	29000	20000	36000	
10.02.2024	14400	14600	16500	11000	9600	9650	10300	8500	10300	9000	11000	13000	28250	20000	34000	
17.02.2024	14300	14500	16300	10933	9500	9550	9900	8500	9800	8000	11000	13000	28000	20000	32000	
24.02.2024	14300	14500	16200	11000	9500	9550	9800	8400	9900	8800	11000	13000	28500	20000	32000	
29.02.2024	14200	14400	16200	10933	9400	9450	9700	8400	9800	8600	11000	13000	28500	20000	32000	

¹ (स्रोत: इंपेपर, केरला कौमुदी) ² (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन) ³ (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

दिसंबर 2023

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
02.12.2023	129	187	237	355	1140	1143	रि.प्रा.न.	1755	1388	629	645	1099	1023
09.12.2023	129	187	208	343	1130	1133	रि.प्रा.न.	1789	1380	630	645	1055	1023
16.12.2023	128	187	208	337	1094	1119	रि.प्रा.न.	1774	1372	624	656	1070	1023
23.12.2023	128	187	233	337	1102	1131	रि.प्रा.न.	1808	1380	624	658	1072	1023
30.12.2023	128	188	234	331	1126	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1821	1380	रि.प्रा.न.	660	1081	1008

जनवरी 2024

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
06.01.2024	129	200	217	337	1103	1129	रि.प्रा.न.	2079	1372	625	647	1070	987
13.01.2024	128	199	201	343	1127	1123	रि.प्रा.न.	1857	1364	621	655	1085	987
20.01.2024	129	198	207	343	1134	1120	रि.प्रा.न.	2137	1332	629	655	998	987
27.01.2024	127	196	202	352	1141	1123	रि.प्रा.न.	1856	1332	635	648	1034	1005

फरवरी 2024

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
03.02.2024	127	198	220	350	1158	1140	रि.प्रा.न.	1830	1367	637	656	1077	1025
10.02.2024	127	198	223	341	1173	1141	रि.प्रा.न.	1853	1327	637	657	1038	1025
17.02.2024	140	205	207	338	1184	1141	रि.प्रा.न.	1808	1319	634	657	1040	1025
24.02.2024	140	205	227	344	1185	1152	रि.प्रा.न.	1784	1327	630	667	1061	1013

* भारत : नारियल तेल - कंगयम बाज़ार, खोपरा - कंगयम बाज़ार, नारियल - पोल्लाची बाज़ार



नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

डा. प्रभात कुमार

मुख्य कार्यपालक अधिकारी : 0484 2375216

डा. वी.हनुमंते गौडा

मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 0484 2375999

आर. मधु

सचिव : 0484 2377737

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)

पो.बो.सं. 1021, केरा भवन, कोची - 682 011,

केरल, भारत

कार्यालय ईपीएबीएक्स: 2376265, 2376553,

2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD

फैक्स : 91 484 2377902

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक

जयनाथ आर.

प्रभारी निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
बनेरघट्टा रोड, बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : ro-bnglr@coconutboard.gov.in

असम

डा. रजतकुमार पाल

निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी राज्य कार्यालय/
प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छटा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी -781 006
दू.भा. : (0361) 2220632 फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : ro-guwahati@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु

इ. अरवाड़ी

निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1, डा. रामस्वामी शाल्ड,
के.के. नगर,
चेन्नई-600 078
दूर भाषा 044- 23662684, 23663685
ई-मेल : ro-chennai@coconutboard.gov.in

बिहार

राजीव भूषण प्रसाद

निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के
सामने, जागदेवपथ, फुलवारी रोड, डाक-बिहार पशु
चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),
पटना-800014, दू.भा. : (0612) 2972020
फैक्स : 0612- 2972020
ई-मेल: ro-patna@coconutboard.gov.in

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह

उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह, दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : sc-andaman@coconutboard.gov.in

आंध्र प्रदेश

सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
डी.सं.-54-14/5-18ए, रोड सं.11
भारती नगर, नोवोटेल् जिला हॉटल के पास
रिंग रोड, एनटीआर वरुणा
विजयवाड़ा - 520 008, आंध्र प्रदेश
दूरभाष: 0866-2472723
ई-मेल : sc-vijayawada@coconutboard.gov.in

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, दिल्ली

सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोविन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : mdic-delhi@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र

उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल,
यूकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाणे (वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : sc-thane@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल

उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, डी.ए.-94 -सेक्टर-1
साल्ट लेक, कोलकाता - 700 064
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : sc-kolkata@coconutboard.gov.in

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्केट (वैलर्ड मार्केट)
आनयरा पी.ओ., तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006,
ई-मेल : fo-tvprmm@coconutboard.gov.in

ओडिशा

डा. अमय देबनाथ

उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमारबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 8280067723
ई-मेल : sc-pitapalli@coconutboard.gov.in

गुजरात

राज्य केन्द्र, जूनागढ़,
बी-विंग, पहला तल, बहुमाली भवन,
राज्य हाईवे 31, दुर्वेशा नगर, शशिकुंज,
जूनागढ़, गुजरात - 362001 दूरभाष: 02852990230
ई-मेल : sc-junagadh@coconutboard.gov.in

सी आई टी, आलुवा

उप निदेशक (प्रौद्योगिकी विकास एवं उद्यमिता)
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र,
कौनपुरम, दक्षिण वाष्ककुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष: 0484 2679680,
ई-मेल : cit-aluva@coconutboard.gov.in

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688, तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : 83318 69886, ई-मेल : f-vegiwada@coconutboard.gov.in

असम: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगेगाँव, असम - 783 384

दू.भा. : 03664-262491, ई-मेल : f-abhayapuri@coconutboard.gov.in

बिहार: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक), मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128

दू.भा. : (06476) 283015, ई-मेल : f-madhepura@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल: सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, फुलिया, एसबीआई फुलिया शाखा के पास, एनएच-34,

बेलेमठ डाक, नादिया, पश्चिम बंगाल- 741 402, दू.भा. : 03473 234002, ई-मेल : f-fulia@coconutboard.gov.in

कर्नाटक: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक), मंड्या जिला, कर्नाटक- 571478

दू.भा.: (08232) 298015, ई-मेल : f-mandya@coconutboard.gov.in

केरल: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693

दू.भा. : (0485) 2554240, ई-मेल : f-neriamangalam@coconutboard.gov.in

छत्तीसगढ़: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला

दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443, ई-मेल : f-kondagaon@coconutboard.gov.in

ओडिशा: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली, कुमारबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055

दू.भा. : 8280067723, ई-मेल : f-pitapalli@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र: सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, पालघर, दापोली गाँव, सातपाटी डाक, पालघर-401405, महाराष्ट्र

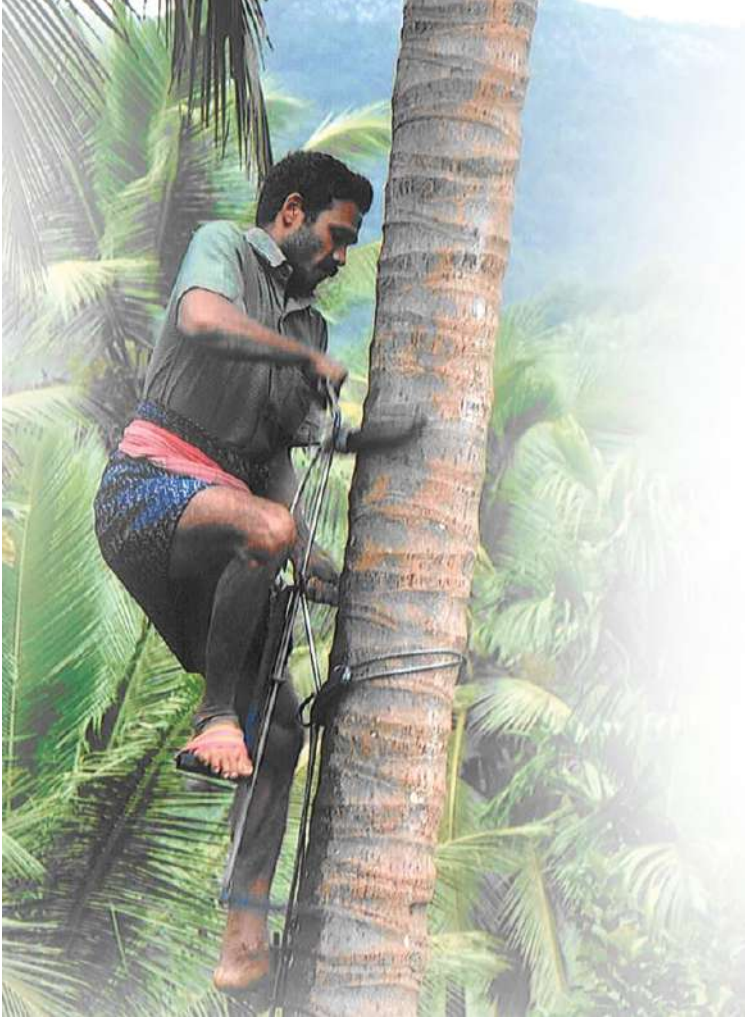
मोबाइल : 07767 948448, 77769 40774 ई-मेल : f-palghar@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु: सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति नगर डाक, उदुमलपेट, तमिलनाडु-642112

दू.भा.: 04252 265430, ई-मेल: f-dhali@coconutboard.gov.in

त्रिपुरा: सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचरा, सकवारी डाक, जोलाइवारी (मार्ग), सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141

दू.भा.: 038 23263059, ईमेल: f-hitchachara@coconutboard.gov.in



आइए....

केरा सुरक्षा बीमा योजना में शामिल हो जाएं

दि न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी लिमिटेड
के सहयोग से नारियल विकास बोर्ड की पहल

नारियल ताड़ारोहकों और तुड़ाईकर्ताओं
के लिए लाभप्रद दुर्घटना बीमा योजना

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
कोची, केरल, फोन: 0484-2377266, 67



Coconut Development Board

[MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE,
GOVERNMENT OF INDIA] KOCHI, KERALA. PH : 0484-2377266, 67

आगे की सोचें..
संरक्षित और सुरक्षित रहें

बीमित राशि
5 लाख रुपए

94 रुपए की नाममात्र
वार्षिक प्रीमियम के लिए

बीमा सुरक्षा

- चिकित्सा खर्च में राहत
- दुर्घटना के कारण बेरोज़गारी
- दिव्यांगता
- मृत्यु के लिए

कौन शामिल हो
सकते हैं ?

कोई भी व्यक्ति जो नारियल
ताड़ारोहण/ तुड़ाई/ नीरा तकनीशियन
के पेशे में लगा हुआ हो

आयु 18-65

आवेदन पत्र के लिए नाविबो
की वेबसाइट

<https://www.coconutboard.gov.in>

देखें/ निकटस्थ कृषि विज्ञान केंद्र
से संपर्क करें

अधिक जानकारी के लिए

कृपया संपर्क करें:

0484 2377266 एक्स्टेंशन: 255

नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन,

एसआरवी रोड, कोची-11